सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 7 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जुलाई, 2010 ★ आषाढ़, 2067

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये

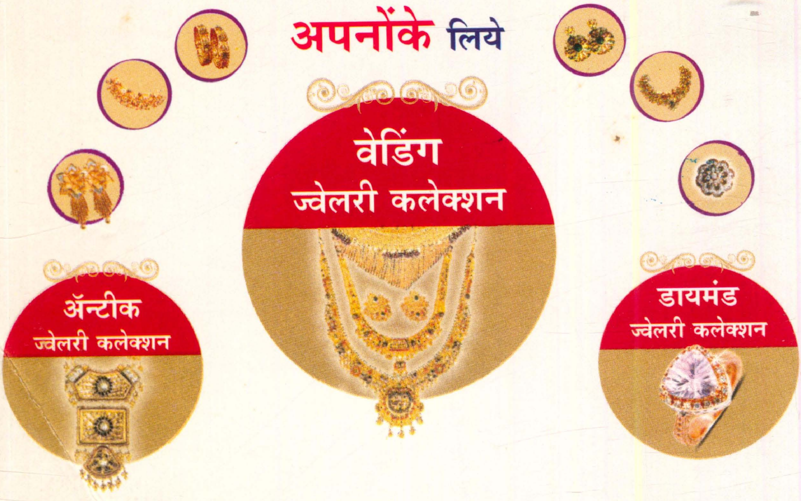

✦ सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न

✦ फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
✦ शुद्ध चांदी के बरतन

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स®

आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520 | सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903 | उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644

Visit us at : rcbafnajewellers.com

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

ग्राहक सेवेची पंचसुत्री १। प्रामाणिकता २। वाजिबता ३। विविधता ४। हजर स्टॉक ५। सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सुया मे नरए ठाणा,
असीलाणं च जा गई।
बालाणं कूरकम्माणं,
पगाढा जत्थ वेयणा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.12

दुःशीलजनों की नरकों में,
दुर्गति मैंने जो कान सुनी।
उन क्रूरकर्मयुत बालजीवों की,
गाढ़ वेदना करुण बनी।।

जुलाई, 2010

वीर निर्वाण संवत्, 2536

आषाढ़, 2067

वर्ष 67 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.

आजीवन देश में : 500 रु.

आजीवन विदेश में : 5000 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 11000/-

संरक्षक सदस्यता : 5000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	आचार्य हस्ती के शिक्षासूत्र (2)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	अध्यात्म के पर्याय थे गुरु हस्ती	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	11
	अधिकार लोलुपता छूटे तो कषाय घटें	-तत्त्वचिंतक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा.	13
अध्यात्म-	आत्मा का स्वरूप-बोध	-श्री जशकरण डागा	23
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (7)	-श्री सम्पतराज चौधरी	28
कथानक-	शेर बना शाकाहारी (1)	-श्रीमती पारसकंवर भण्डारी	34
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Vinay (Humility)	-*Sh. Pravin K. Shah*	39
प्रेरक-जीवन-	आत्मार्थी सन्तरत्न श्री बलभद्रमुनि जी : एक उत्कृष्ट साधक	-श्री नौरतन मेहता	43
	सन्त-रत्न श्री बलभद्र मुनि जी का प्रेरक जीवन	-पी. शिखरमल सुराणा	52
उपन्यास-	सुबह की धूप (17)	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	56
युवा-स्तम्भ-	शान्ति का बोध	- श्री के.एस. गलुण्डिया	61
प्रेरक-व्यक्तित्व-	समताशील स्वाध्यायी साधक : श्री सम्पतराज जी डोसी	-श्री धर्मचन्द जैन	64
	मेरे वन्दनीय पिताश्री	-श्री प्रेमचन्द डोसी	68
नारी-स्तम्भ-	स्वभाव ही है सच्चा सौंदर्य	-डॉ. साध्वी चिन्मय श्री	71
बाल-स्तम्भ-	देह-सौन्दर्य से आत्म-सौन्दर्य की ओर	-श्री नेमीचन्द पटोरिया	73
विचार-	विनय	-श्रीमती कमला सिंघवी	22
कविता/गीत-	मन	-डॉ. रमेश मयंक	38
	हम नन्हे-नन्हे श्रावक हैं	-डॉ. दिलीप धींग	70
	ध्यान : मोक्ष की ओर गमन	-श्री प्रवीण चोरडिया	72
युवक-परिषद् -	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (26)		77
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (7)		80
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	82
समाचार विविधा-	रत्नसंघ के चातुर्मास		83
	समाचार-संकलन		95
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		121

सम्पादकीय

आचार्य हस्ती के शिक्षासूत्र (2)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आचार्य हस्ती महान् साधक सन्त थे। उनकी प्रज्ञा निर्मल थी। जिस प्रकार वे निजज्ञान, मौन एवं ध्यान से स्वयं का हित साधते थे उसी प्रकार दूसरों के हित के लिए भी शिक्षासूत्र प्रदान किया करते थे।

कई बार प्रश्न उठता है कि क्या कभी धन की भूख समाप्त हो सकती है? पेट की भूख के समाधान के लिए धन की आवश्यकता होती है, किन्तु पेट की भूख शान्त करने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध हो जाने के पश्चात् भी धन की भूख आगे से आगे बढ़ती रहती है। ज्यों-ज्यों धन बढ़ता है, त्यों-त्यों उसकी महत्ता का आभास होता रहता है और व्यक्ति उसकी अधिक प्राप्ति के लिए दुःखी होता रहता है। शरीर एवं संसार के आवश्यक कार्य सम्पादित करने के लिए जितना धन चाहिए, व्यक्ति उससे कई गुणा प्राप्त हो जाने के पश्चात् भी संतुष्ट नहीं होता। इसका कारण मनुष्य का अज्ञान या मिथ्यात्व है।

आचार्य हस्ती इस भूख को शान्त करने के लिए विभिन्न प्रकार से अपनी सभाओं में समझाते रहे - "जैसे घृत की आहुति से आग नहीं बुझती, वैसे ही धन की भूख धन से नहीं मिटती है। तन की भूख तो पाव भर अन्न से मिट जाती है, किन्तु मन की भूख असीम है। उसकी दवा त्याग और संतोष है, धन प्राप्ति या तृष्णा पूर्ति नहीं।" आचार्य हस्ती धन की भूख को मिटाने की औषधि त्याग और संतोष को बता रहे हैं। जरूरत से अधिक भोजन जिस प्रकार अपने काम नहीं आता उसे दूसरों को देने पर सदुपयोग हो जाता है उसी प्रकार जरूरत से ज्यादा धन सदा काम नहीं आता, जरूरतमन्द को देने पर उसकी सार्थकता हो जाती है। इस धन की भूख को कम करने के दो ही उपाय हैं या तो ज्ञानपूर्वक इच्छा का त्याग किया जाए अथवा प्राप्त में संतुष्ट रहकर संतोषवृत्ति को अपनाया जाए। एक ओर अधिक धन तथा दूसरी ओर अत्यन्त गरीबी समाज में विषमता को उत्पन्न करती है। संतोष और त्याग निर्धन और धनवान दोनों के लिए उपादेय हैं, किन्तु जीवनयापन के लिए आवश्यक साधन-सामग्री की उपलब्धता से गरीब भी

वंचित न रहे, ऐसा उदार चिन्तन भी आवश्यक है। आचार्य हस्ती कहते हैं- "यदि मनुष्य इच्छा को सीमित करले तो संघर्ष के सब कारण स्वतः समाप्त हो जाएंगे, विषमता टल जायेगी, वर्गभेद मिट कर सब ओर शान्ति और आनन्द की लहर फैल कर यह पृथ्वी स्वर्ग के समान बन जाएगी।" आचार्य श्री के इस वाक्य में मानवता के प्रति पारस्परिक प्रेम की झलक दिखाई पड़ती है। दूसरी ओर धनिकों अथवा श्रीमन्तों को सम्बोधित करते हुए वे फरमाते हैं- "श्रीमंतों को समाज में काजल बन कर रहना चाहिये जो खटके नहीं।" तिनका जहाँ आँख को खटकता है वहाँ काजल आँख के सौन्दर्य की अभिवृद्धि करता है। इसी प्रकार जो श्रीमन्त समाज में योगदान करते रहते हैं वे आँख में काजल की तरह समाज में शोभा पाते हैं। इससे परस्पर दोनों की शोभा बढ़ती है। आँख से काजल की शोभा बढ़ती है एवं काजल से आँख की शोभा बढ़ती है। समाज में जो हितबुद्धि से योगदान करता है उसे समाज चाहता है अर्थात् वह समाज को प्रिय लगता है। दूसरी ओर उसका भी प्रेम समाज के लोगों के प्रति अधिक बढ़ता है।

जीवन्त समाज वह है जो कमजोर भाइयों के सहयोग के लिए तत्पर होता है। गुरुदेव के शब्दों में- "समाज जितना जिन्दा होगा उतना ही वह कमजोर भाइयों की सहायता करेगा।" पुनः दूसरे शब्दों में फरमाते हैं- "सम्यग्दृष्टि श्रावक का फर्ज है कि वह सम्यग्दृष्टि श्रावकों में से कोई कमजोर है तो उसकी सहायता करे।" जिस प्रकार शरीर का एक अंग दूसरे अंग के लिए सहयोगी होता है उसी प्रकार समाज में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के लिए सहयोगी बनता है। भजन के माध्यम से आचार्य हस्ती ने सुन्दर निरूपण करते हुए फरमाया है-

शिक्षा दे रहा जी हमको, देह पिंड सुखदाई।।
दश इन्द्रिय अरु बीसों अंग में, देखो एक सगाई।
सबमें एक एक में सबकी, शक्ति रही समाई।।
आँख चूक से लगता कांटा, पैरों में दुःखदाई।
फिर भी पैर आँख से चाहता, देवे मार्ग बताई।।
विभिन्न व्यक्ति अंग समझलो, तन समाज सुखदाई।
'गजमुनि' सबके हित सब दौड़े, दुःख दरिद्र नश जाई।।

समाज में सम्प और एकता की स्थापना के लिए गजमुनि आचार्य हस्ती ने सुन्दर रूपक उपस्थापित किया है। जिस प्रकार उदर भोजन ग्रहण करके सब

अंगों तक उसका रस पहुँचाता है, मस्तिष्क सबकी भलाई सोचता है, पैर एवं नेत्र परस्पर सहयोग करते हैं इसी प्रकार विभिन्न व्यक्ति समाज के अंग हैं। वे एक-दूसरे का सहयोग करें तो समाज का दुःख और दारिद्र्य समाप्त हो सकता है।

आज मनुष्य प्रदर्शन में विश्वास करता है, किन्तु आचार्य हस्ती सादगी में भी आनन्द की गवेषणा करते हैं। वे समझाते हुए कहते हैं- "राजमहल का विराट् वैभव प्रदर्शन यदि दर्शकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है तो एक सादी पावन कुटिया भी चित्त को चकित किये बिना नहीं रहती।" अपनी आवश्यकताओं को जो सीमित करता है वह सदा सुखी रहता है, उसका चित्त तनावमुक्त रहता है। आचार्य हस्ती का फरमाना है - "आवश्यकता तो प्राणिमात्र को रहती है। अन्तर इतना ही है कि एक आवश्यकता को बांध लेता है और दूसरा आवश्यकताओं से बंधा रहता है। परिणामतः पहला उतना दुःखी नहीं होता और दूसरा अशान्त तथा दुःखी हो जाता है।" समाज में कोई अपने से ऊँचे उठे व्यक्ति को देखकर ईर्ष्या करता है तो इससे ईर्ष्याकर्त्ता की ही हानि होती है। इसे आचार्यश्री ने व्यर्थ के दुश्चिन्तन के रूप में अनर्थदण्ड कहा है - "किसी की उन्नति देखकर ईर्ष्या करना या उसकी हानि की सोचना अनर्थदण्ड है।"

कुछ लोगों को यह भ्रम है कि धर्म-साधना में धन आवश्यक है। आचार्य हस्ती उनका भ्रम दूर करते हुए कहते हैं- "धर्म-साधना के लिए किसी के पास एक पैसा भी नहीं है तो भी उसके पास तीन साधन हैं- तन, मन और पवित्र वचन।" इन तीन साधनों का सदुपयोग करता हुआ व्यक्ति आत्मोन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति धर्म-साधना का पात्र है। धर्म-साधना में त्याग का महत्त्व है, संग्रह का नहीं।

धर्म-साधना के सम्बन्ध में एक भ्रम प्रायः यह भी रहता है कि धर्म का फल परलोक में मिलता है। आचार्य हस्ती धर्म को इस लोक एवं परलोक दोनों को सुधारने का साधन मानते हैं। वे कहते हैं- "जो लोग धर्म को केवल परलोक के लिए समझ रहे हैं वे इसका सही स्वरूप नहीं समझते।" इस जीवन में भी जो धर्म का सम्यक् आचरण करता है वह शान्ति एवं आनन्द को प्राप्त करता है। श्रावक का धर्म शान्ति का धर्म है। इसलिए आचार्य हस्ती फरमाते हैं- "श्रावक धर्म की शिक्षा से मानव जीवन शान्ति की ओर बढ़ सकता है।"

जीवन को प्रत्येक व्यक्ति सुन्दर बनाना चाहता है, किन्तु सुन्दरता क्या है एवं वह किस साधन से प्राप्त होती है इस सम्बन्ध में वह भ्रमित है। सुन्दरता बाह्य रूप-रंग में बसती नहीं, अपितु भीतरी प्रेम, दया, मैत्री, सहिष्णुता, क्षमाशीलता, परोपकारिता, सरलता, निर्लोभता आदि सद्गुणों की अभिवृद्धि से है। इन सद्गुणों का वर्द्धन तभी सम्भव है जब हमारे जीवन में सम्यग्ज्ञान की ज्योति का आलोक प्रसरित हो। गुरुदेव आचार्य हस्ती सम्यग्ज्ञान का आलोक जन-जन के मन में फैलाना चाहते थे। इसी के लिए उन्होंने स्वाध्याय का संदेश दिया।

धर्म का असली स्वरूप क्या है, इसे अत्यल्प शब्दों में स्पष्ट करते हुए गुरुदेव हस्ती फरमाते हैं- "धर्म का स्वरूप है सद् आचार और सद् विचार।" सद्विचार पूर्वक सद् आचार का आधान होता है। हमारे विचारों को निर्मल बनाने की आवश्यकता है और यह कार्य सम्यग्ज्ञान पूर्वक सम्भव है। सम्यग्ज्ञान होने पर न्याय एवं नीति का मार्ग सरल हो जाता है। आज व्यक्ति बिना श्रम के एवं बिना नीति के धन अर्जन करना चाहता है यह उसका अज्ञान है, इससे उसे शान्ति प्राप्त नहीं होती। आचार्य हस्ती फरमाते हैं- "बिना श्रम के, बिना न्याय के तथा बिना नीति के जो पैसा मिलाया जाता है उससे कोई करोड़पति व लखपति हो सकता है, लेकिन वह पैसा उस परिवार को शान्ति व समता देने वाला नहीं हो सकता।"

नैतिक आचरण पर आचार्य हस्ती ने पर्याप्त बल दिया है। धार्मिक होने के लिए भी पहले नैतिक होना आवश्यक है। गुरु हस्ती के शब्दों में- "नैतिकता की भूमि पर ही धार्मिकता की इमारत खड़ी होती है।" नैतिकता जीवन में बचपन से आती है। अतः नींव को मजबूत करने की आवश्यकता है। आचार्य हस्ती का चिन्तन है- "यदि परीक्षा में बच्चों को नैतिक व्यवहार के भी अंक दिए जाएं तो बच्चे देश के लिए वरदान हो सकते हैं।" कितना सुन्दर चिन्तन है आचार्य हस्ती का, जिसे आज हर शिक्षा संस्थान में अपनाए जाने की आवश्यकता है। पढ़ाई के अंक के साथ नैतिक व्यवहार के अंक देना बालक के सही जीवन-निर्माण का सम्यक् आधार है। इसे भारत सरकार की एवं राज्य सरकार की शिक्षा-नीति में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

पंचविधे संजमे पण्णत्ते, जं जहा-सामाइयसंजमे, छेदोवट्ठावणियसंजमे, परिहार- विसुद्धियसंजमे, सुहुमसंपरायसंजमे, अहक्खायचरित्तसंजमे ।।139।।

एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति, तं जहा- पुढविकाइयसंजमे, आउकाइयसंजमे, तेउकाइयसंजमे, वाउकाइयसंजमे, वणस्सतिकाइयसंजमे ।। 140 ।।

पंचिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जति, तं जहा- सोतिंदिय-संजमे, चक्खिंदियसंजमे, घाणिंदियसंजमे, जिब्भिदियसंजमे, फासिंदिय-संजमे ।। 142 ।।

अर्थः-

संयम पांच प्रकार का कहा गया है, जैसे-

(1) सामायिक-संयम- सर्व सावद्य कार्यों का त्याग करना।
(2) छेदोपस्थापनीय संयम- पंच महाव्रतों को पृथक्-पृथक् स्वीकार करना।
(3) परिहारविशुद्धिक-संयम- तपस्या विशेष की साधना करना।
(4) सूक्ष्मसांपरायसंयम- दशम गुणस्थान का संयम।
(5) यथाख्यातचारित्रसंयम- ग्यारहवें गुणस्थान से लेकर उपरिम सभी गुणस्थानवर्ती जीवों का वीतराग संयम

- एकेन्द्रियजीवों का आरंभ-समारंभ नहीं करने वाले जीव को पाँच प्रकार का संयम होता है। जैसे-

(1) पृथिवीकायिक-संयम, (2) अप्कायिक-संयम,
(3) तेजस्कायिक-संयम, (4) वायुकायिक-संयम,
(5)वनस्पतिकायिक-संयम

पंचेन्द्रिय जीवों का आरंभ-सभारंभ नहीं करने वाले को पांच प्रकार का संयम होता है। जैसे-

(1) श्रोत्रेन्द्रिय-संयम, (2) चक्षुरिन्द्रिय-संयम,
(3) घ्राणेन्द्रिय-संयम, (4) रसनेन्द्रिय-संयम,
(5) स्पर्शनेन्द्रिय-संयम (क्योंकि वह पाँचों इन्द्रियों का व्याघात नहीं करता)

-स्थानाङ्गसूत्र, पंचम स्थान, द्वितीय उद्देशक, सूत्र- 139-140, 142

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

समाज-एकता

- समाज पक्ष में आपको कारीगर बनना है, मजदूर नहीं। सुई बनना है, कैंची नहीं। कैंची एक बड़े कपड़े को काटकर अनेक टुकड़े कर डालती है, जबकि सुई अनेक बिखरे हुए टुकड़ों को सिलती हुई बढ़ती जाती है। ऐसे ही श्रावकों को अपने संघ में एकता लाने के लिए सुई की तरह व्यवहार करना चाहिए। इसके बिना जिनशासन का हित नहीं हो सकेगा।
- मानव जितना ही गुणग्राहक और सत्य का आदर करने वाला होगा, उतना ही ऐक्य निर्माण-कार्य सरल एवं स्थायी हो सकेगा। 'कारणाभावे कार्याभावः' इस उक्ति के अनुसार भेद के कारण मिटने पर भेद स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं।
- चुटकी बजाते हैं तो अंगुली के साथ अंगूठा मेल करता है तभी चुटकी बजती है। मेल नहीं करें तो नहीं बज सकती।
- भीतर में जो क्रोध का ज़हर है, उस ज़हर को निकालकर उसके स्थान पर अमृत बरसाना है। अमृत बरसायेंगे तो आपकी हृदय तंत्री से आवाज उठेगी-हम आग लगाना क्या जानें, हम आग बुझाने वाले हैं।
- अहिंसक समाज और स्वाध्याय संघ के सदस्यों का तो संकल्प होना चाहिए कि कभी भाई-भाई में आपस में टकराव हो भी जाये तो भीतर में ही निपट लेंगे। इस उदाहरण के अनुसार चलेंगे तो बहुत प्रमोद होगा और हम समझेंगे कि महावीर की वाणी ने आप पर असर किया है। ऐसी दृष्टि रखकर चलने से लाखों के जीवन में शान्ति उत्पन्न होगी। महावीर की वाणी का यही सार है।
- समाज के लोग साथ बैठे हैं, कभी सभा, सोसाइटी या मीटिंग में एक दूसरे का मत नहीं मिले, एक-दूसरे के साथ आपस में बोल-चाल का मौका आ जाय, क्रोध आ जाय, तेज बोल गए तो आपका कर्तव्य है कि आये हुए क्रोध को दबा दें, शान्त कर दें।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

अध्यात्म के पर्याय थे गुरुहस्ती

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा पाली में फरमाए गए प्रवचन से संकलित-**सम्पादक**

आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष 'अध्यात्म चेतना वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। जानने, जागने व जीने की इच्छा से जिज्ञासु भव्य ने जिज्ञासा रखी-''अध्यात्म क्या है ? ''

आन्तरिक भक्ति व अनुभूत ज्ञान ने एक लय, एक रस से उत्तर दिया-''अध्यात्म माने-गुरु हस्ती!'' मैंने कहा-मनुष्य सदैव सुख चाहता है, दुःख नहीं चाहता। निराकुलता चाहता है, आकुलता नहीं चाहता। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बोध चाहिए-''आत्मा भिन्न है और शरीर भिन्न है। आत्मा चैतन्य है, शरीर पुद्गल है। आत्मा कर्मों के आवरण के कारण सुख-दुःख के चक्रव्यूह में भटक रही है। मनुष्य पदार्थ की प्राप्ति में सुख खोज रहा है, किन्तु वह सुख क्षणिक होता है तथा दुःखरूप में परिणत हो जाता है।

प्रश्न उठता है कि फिर शाश्वत सुख कैसे मिले या दुःख का सदैव के लिए तिरोभाव कैसे हो ? पदार्थ का अपना धर्म है, चैतन्य का अपना धर्म है। पदार्थ 'पर' है, चैतन्य 'स्व' है। हमें इन दोनों के अनुबन्ध को समझ कर उससे मुक्त होना होगा। संसार में रहकर भी उससे जुड़ना नहीं है। जब पदार्थ से जुड़े ही नहीं तो उसे छोड़ने का दुःख कहाँ से होगा। बस, यही नियम है सुख-दुःख से परे होने का। यह नियम यदि जीवन में उतर गया तो हमारा चैतन्य स्वामी होगा और शरीर सेवक होगा। चाह राह में बदल जायेगी जिसकी मंजिल होगी दुःखरहित जीवन। इसके लिए मान-अपमान, हानि-लाभ, सुख-दुःख की स्थितियों में भी समता की साधना करनी होगी। समता की इस यात्रा का नाम है-अध्यात्म। अनासक्त चेतना की अवस्थिति है-अध्यात्म। विषमता से समता की ओर जाना है-अध्यात्म। विभाव से स्वभाव की ओर प्रस्थान है-अध्यात्म। 'पर' को खोकर 'स्व' को पाना है-अध्यात्म। निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि स्वरूप बोध की प्राप्ति का अध्यवसाय है-अध्यात्म। अनेकान्त के प्रकाश में महर्षियों ने अध्यात्म की अनेक परिभाषाएँ दीं हैं। उनके अध्ययन से प्रतीत होता है कि वे सभी धाराएँ समाहित हो रही हैं 'हस्ती' रूपी महासागर में।

अत: मैं कह सकता हूँ–अध्यात्म का अर्थ है गुरु हस्ती। उनका जीवन अध्यात्म की सृष्टि थी, उनका आचरण अध्यात्म का अनुष्ठान था, उनका चिन्तन आत्म-चेतना का ऊर्ध्वारोहण था, उनका अनुभव अध्यात्म का सार था, उन्होंने आत्मा को, आत्मा में, आत्मा से धारण कर लिया था। इसीलिये वे अध्यात्म के प्रतिमान ही नहीं, साक्षात् पर्याय थे। उनका हर समय (काल) समय (आत्मा) पर केन्द्रित था। उनका हर समय (सिद्धान्त) समय (आत्मा) से सम्बन्धित था एवं उनका हर समय (क्षेत्र) समय (आत्मा) में अवस्थित था। उनकी तपःपूत देह अध्यात्म की माटी का दीवट था, उनका संयम अध्यात्म का तेल था, उनकी साधना अध्यात्म की बाती थी, उनकी दृष्टि अध्यात्म की लौ थी, उनका ध्यान अध्यात्म की धूप था। अन्त में उनका ज्ञान और दर्शन अध्यात्म का प्रकाश था। इसलिए वे परम हंस, परम आध्यात्मिक महापुरुष थे, अब हमारे लिए वे अध्यात्म के अध्याय हैं, पर्याय हैं, हम अध्यात्म को कह नहीं सकते, पर 'हस्ती' की तरह अध्यात्म में रह सकते हैं, हम अध्यात्म को लिख तो नहीं सकते, पर हस्ती के जीवन से अध्यात्म सीख तो जरूर सकते हैं। आइये, हम गुरु हस्ती को आराधें! अध्यात्म-चेतना को साधें!

पाठक-प्रतिक्रिया

श्रीमती सीमा धींग

मुझे पिछले कुछ वर्षों से जिनवाणी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। घर पर अनेक पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं, उनमें बहुत कम पत्र-पत्रिकाएँ जिनवाणी के समकक्ष स्थान बना पाती हैं। आप जैसे विद्वान इस पत्रिका के सम्पादक हैं तो पत्रिका का विशेष स्थान बनेगा ही। श्री चंचलमल जी चोरड़िया के स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख मुझे विशेष अच्छे लगते हैं। मेरी कॉलोनी में अन्य श्राविकाओं को भी जिनवाणी विशेष पसन्द आती है। जिनवाणी में सभी प्रकार की सामग्री पढ़ने को मिल जाती है। निन्दा-विकथा से यह कोसों दूर है। किसी भी संघ की पत्रिका उस संघ का दर्पण होती है। जिनवाणी के माध्यम से रत्न संघ की विशाल व सुलझी हुई दृष्टि अभिव्यक्त होती है। मौजूदा समय में ऐसे ही सन्तुलित, सहिष्णु और समन्वित दृष्टिकोण की जरूरत है। अध्यात्म-चेतना वर्ष भी बड़े उत्साह से मनाया जा रहा है। सबको साथ लेकर चलना अनुकरणीय है।

आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी के अवसर पर समस्त बहिनों से मेरा अनुरोध है कि वे स्वयं को स्वाध्याय से जोड़ें। अपने पारिवारिक सदस्यों को भी स्वाध्याय आदि से जोड़ें।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

प्रवचन

अधिकार लोलुपता छूटे तो कषाय घटें

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा दिनाँक28 सितम्बर, 2004 को महावीर भवन, अशोक नगर, बैंगलोर में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-**सम्पादक**

अधिकार की भावना को तिलांजलि देकर सर्वोच्च पद के अधिकारी बनने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और उसी पूर्ण पद पर अधिकार करने के लिए जड़ पर अपने अधिकारों को छोड़कर फिलहाल संघ के अधिकारी बनने वाले आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन के पश्चात्-

अधिकार लोलुपता कषाय के उदय में निमित्त बनती है। वह कषाय के दावानल को सुलगाती है। यह जीव किसी पर अपने अधिकार की लोलुपता रखना चाहता है, यह अधिकार लोलुपता ही लोभ है। इस लालसा के कारण से स्वभाव की वंचना रूप माया होती है। अधिकार की भावना अहंकार तो है ही और क्रोध की भी यह जननी है। इसीलिये संवेग का गुण आवश्यक है। उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में यह पहला बोल है। इसमें 73 बोल तक की यात्रा की क्षमता समायी हुई है। मुक्ति की उत्कृष्ट अभिलाषा ही संवेग है।

कषायनी उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष।
भव खेद अन्तर दया, त्यॉं आत्मार्थ निवास।।

अधिकार लोलुपता संवेग की विरोधी है। जो अपनी आत्मा का अधिकारी बन गया वह सर्वोच्च पद का अधिकारी बन गया। अपनी आत्मा का अधिकारी बनने के लिए समकित आवश्यक है।

पंजाब-हरियाणा प्रान्त में विचरण करने वाले प्रवर्तक सुदर्शन लाल जी के किन्हीं संतरत्न द्वारा निर्मित भजन हम प्रार्थना में प्रतिदिन बोलते हैं-

लिया तुम्हारा शरणा है, मोह निराकृत करना है।

मोह निराकरण की भावना ही तो संवेग है- अनन्तानुबंधी की सत्ता चारों गतियों के जीव समाप्त कर सकते हैं, उसे विसंयोजना कहा जाता है, पर मिथ्यात्व और मिश्र मोह की सत्ता मात्र मनुष्य खापा सकता है। संवेग अर्थात्

व्याकुलता की तीव्र अग्नि समस्त दोषों को भस्मीभूत करने में सदा सर्वदा समर्थ है।

क्षायोपशम समकित की प्राप्ति के लिए क्रोध-मान-माया-लोभ को कम करना पड़ेगा। अनन्तानुबंधी रुकेगा तो शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा, आस्तिक्य की प्राप्ति होगी। समकित के साथ ज्ञानावरण का क्षयोपशम भी होगा। इसके लिए पुरुषार्थ करना होगा। आज सीखना शुरु करो तो सीखा जा सकता है। जोधपुर के घोड़ो का चौक में अनन्तराम जी ने पिचहत्तर साल की उम्र में छह कर्मग्रन्थ कण्ठस्थ किए हैं। उनके आँख की रोशनी नहीं थी, संतों से - श्रावकों से सुन-सुनकर छह कर्मग्रन्थ कण्ठस्थ कर लिये। वर्ष 1997 के फरवरी मास में चार से पांच बजे गाथाओं का अर्थ समझते थे। क्यों? किन्हीं संतों से पृच्छा की- सम्यग्दृष्टि कैसे बन सकता है- उत्तर मिला सूक्ष्म पदार्थों का चिन्तन करो। पुनः पूछने पर छः कर्मग्रन्थ याद करने व छठे कर्मग्रन्थ के भागों का चिन्तन करने का संकेत मिला। व्याकुलता थी, अतः जुट गए। कैसी लगन थी! हमारे यहाँ सम्पतसिंह जी भाण्डावत साहब बैठे हैं। इनके दादाजी नवरतनमल जी भाण्डावत रिटायर्ड होने के बाद गुरुचरणों में आए। उन्हें प्रतिक्रमण की पुस्तक दी गई, सात दिनों में प्रतिक्रमण याद करके पुस्तक लौटा दी। जब निराशा रूपी पिशाचनी से पिण्ड छूटता है तब याद हो सकता है, अन्यथा बारह साल घोकने के बाद भी याद नहीं होता। आप-हम-सब अधूरे हैं, पूर्ण तो वीतराग भगवन्त होते हैं।

एक साधु पाँच सौ गाथाएँ रोज याद कर सकता है। दूसरा साधु पाव गाथा भी मुश्किल से याद कर सकता है। पांच सौ गाथा याद करने वाले ने सवा सौ याद की और पाव गाथा याद करने वाले ने वन्दन करते-करते, बार-बार वन्दन करते आधी गाथा याद कर ली दोनों में ढ़ाई सौ गुना अन्तर रहा। बाहर में देखने वालों को एक सौ पच्चीस गाथाएँ बहुत नज़र आती हैं, पर ज्ञानियों की दृष्टि में उसने पाव काम किया, जबकि दूसरे ने दुगुना याद किया। पहले ने क्षयोपशम गुमाया, दूसरे ने वर्धाया। याद नहीं होने का रोना नहीं रोना है। क्षयोपशम पुरुषार्थ का नाम है, हमें पुरुषार्थ करना चाहिये, फल की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। जो पुरुषार्थ नहीं करता, ज्ञानियों की दृष्टि में वह अपने

वीर्य का गोपन करता है और वीर्य का गोपन माया है।

से जहावि अणगारे- उज्जुकडे, नियागपडिवन्ने अमायं कुव्वमाणे वियाहिए।

साधु कौन? जो ऋजु है, सरल है, वह साधु है। सरलता साधु का पहला विशेषण है। तीसरे विशेषण में पुनः कहा- 'अमायं कुव्वमाणे' माया नहीं करता हुआ साधु है। किसी जिज्ञासु ने पूछ लिया- सरलता और माया में क्या अन्तर है? टीकाकारों ने लिखा-स्ववीर्यनिगूहनं माया। अपने वीर्य का गोपन करना माया है, अपने पुरुषार्थ को छिपाना माया है। कोई एक उपवास कर सकता है, पर नहीं करता, यह भी माया है। कोई आधे घंटे का स्वाध्याय कर सकता है, लेकिन वह पुरुषार्थ नहीं करता तो भी माया है। तपस्या में पुरुषार्थ छिपाना भी माया है। रात का पहला प्रहर पूरा हो गया। अभी और जग सकता है, लेकिन सहारा लेकर बैठ गया, यह भी एक तरह से माया हो गई। अपने पुरुषार्थ को छिपाना माया है। हम याद कर सकते हैं, आप पौषध कर सकते हैं, स्वाध्याय किया जा सकता है, आप चाहें तो लोगों में धर्म जागृति ला सकते हैं, पर टी.वी. में समय पूरा कर देंगे, अखबार में समय बिता देंगे, लेकिन आत्म-जागृति में पीछे रह जायेंगे उसको भी माया कहा है। क्या आप पुरुषार्थ फोड़ने को तैयार हैं? अर्थात् यहाँ प्रमाद को स्ववीर्य निगूहन रूपी माया से सम्बोधित किया है। यह क्षयोपशम का प्रबल विरोधी है।

पुरुषार्थ किसको कहते हैं? उदय के प्रभाव में प्रभावित नहीं होना पुरुषार्थ है। कर्म का उदय आ रहा है, उसे निष्फल कर देना पुरुषार्थ है। भगवती सूत्र के पच्चीसवें शतक के सातवें उद्देशक और औपपातिक सूत्र में तप का विवेचन आया। उसमें बाह्य तप के छठे भेद प्रतिसंलीनता में इसे कहा गया है- उदय प्राप्त कषायादि को निष्फल करना अथवा उदय प्राप्ति के पूर्व ही उसका निरोध कर देना। यह है पुरुषार्थ, यह है क्षयोपशम। कषाय-मुक्ति की अभिलाषा, दोष-मुक्ति की अभिलाषा, संसार-मुक्ति की अभिलाषा रूप संवेग का ही परिणाम है यह क्षयोपशम। कर्म-सिद्धान्त का नियम है कि चतुः स्थान, त्रिस्थान आदि कषाय के उदय होने पर जीव पुरुषार्थ से कषाय के रस को कम कर सकता है। पहले जो कर्म बांधे हैं उनको ढ़ीला कर सकता है। गाढ़ कर्म को ढ़ीला करने की ताकत जीव में है। अनंतानुबंधी के उदय में अनंतानुबंधी बांधेगा- अवश्य

बांधेगा, पर जीव का पुरुषार्थ अनुभाग को कम कर देगा।

चेतन चतुर कषाय, उपशम कीजिये रे।
शुद्ध समता रस रुच-रुच पीजिये रे ।।
क्रोध चण्डाल समान कहावे,
तापस तपत भृकुटि चढ़ावे,
परभव नरक-निगोद भमावे,
उपशम कीजिये रे ।।

जब समता रस आ जायेगा, कषाय को जाते देर नहीं लगेगी।

बन्धो! क्रोध! विधेहि किञ्चिदपरं स्वस्याधिवासास्पदं,
भ्रातर्! मान! भवान्नपि प्रचलतु त्वं देवि! माये! व्रज।
हं हो लोभसखे यथाभिलषितां गच्छ द्रुतं वश्यतां,
नीतः शान्तरसस्य सम्प्रति लसद्-वाचा गुरूणामहम् ।।

डॉक्टर धर्मचन्द जी जैन यहाँ बैठे हैं, उनको देखकर श्लोक याद आ गया। इस जीव को भोगने के लिए तैयार रहना चाहिये। आज घर-घर में आग लग रही है। ऊपर से क्रोध दबाना यद्यपि लम्बे समय के लिए उपयोगी नहीं, पर तत्काल आवश्यक है। तत्काल का उपचार लम्बे समय के लिए प्रभावी नहीं हो सकता। एक क्षण का क्रोध भी लम्बी साधना को जलाकर भस्म कर देता है। क्रोध के दमन के लिए कठोर अनुशासन की आवश्यकता है। उत्तराध्ययन सूत्र के पहले अध्ययन की पन्द्रहवीं गाथा में आत्मा के दमन के लिए किए कहा है। तस्सउत्तरी करणेणं में भी तो यही कहा है- पाप के लेबल से ऊपर उठो। सबसे पहले पाप से ऊपर उठने की जरूरत है। गुस्सा शान्त हो जाता है तो क्या होता है? जैसे शराबी का नशा उतर जाता है तो मन में शराब पीने का खेद होता है। वह विचार करता है कि आज नहीं पीऊँगा। सामायिक की साधना में बाहर की प्रवृत्ति रोककर बाहर का सम्बन्ध टूटे, इसका प्रयास होता है। अन्तर से ग्लानि पैदा होने पर व्यक्ति सरलता से पापों का लेखा-जोखा करता है और गुरुचरणों में प्रायश्चित्त करने के लिए तत्पर होता है। दोष हुआ उसमें उतना हर्ज नहीं, जितना हर्ज दोष-मुक्ति की भावना नहीं जगने में है। जिनकी भी दोष-मुक्ति की भावना जगी उनकी अनुमोदना हो। प्रायश्चित्त करने वाला सरलता से

प्रायश्चित्त करे।

जैन दर्शन समग्र है, उसे टुकड़ों में नहीं लिया जा सकता। कथन अपेक्षा से होता है। किसी के पैर में कांटा चुभ गया, पैर मैला है तो वह कांटा नहीं दिखता। पैर साफ कर लिये तो भीतर में चुभा कांटा नज़र आ सकता है। आप तस्सउत्तरी के पाठ में बोलते हैं 'विसोहिकरणेणं' फिर आता है विसल्लीकरणेणं। पाप की शुद्धि शुरु की, खोज को निकले। हमारे पं. रत्न शुभेन्द्रमुनि जी का जयपुर में सिर दुःखने लगा। जोधपुर में मालू साहब ने सिटी स्केन किया तो ज्ञात हुआ अंदर में गांठ है। सिर का दर्द बाहर है, भीतर में क्या है-ट्यूमर। कारण की खोज किए बिना शुद्धि नहीं होगी। सामायिक का अर्थ पढ़ें। फिर उस पर चिंतन करें। तब कहीं जाकर सामायिक में मन एकाग्र होता है। कांटा निकालना है तो पहले खोज करनी पड़ेगी कि कांटा है कहाँ? तब पाँचवाँ चरण 'पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए' पापकर्मों को सम्पूर्ण निकालने की तैयारी होगी। वीतराग की साधना पूर्ण साधना है। व्यक्ति दोनों समय प्रतिक्रमण कर ले तो उसे कहीं जाने की जरूरत नहीं, आत्मा की शुद्धि हो जायेगी और शरीर भी नीरोग रहेगा। भाव शुद्धि सहित यह शरीर के योग व्यायाम की भी पूरी विधि है।

कई सामायिक तो करते हैं, पर सामायिक में कैसे बैठना चाहिए, नहीं आता। कोई सामायिक में झुक कर बैठते हैं, कोई बार-बार आसन बदलते हैं। आप कभी रीढ़ की हड्डी को सीधा करके बैठें और एक आसन पर बैठकर सामायिक करें तो समाधि में पहुँच सकते हैं। उदय के बहाव में बहना आस्रव है। उदय के प्रभाव से प्रभावित नहीं होना संवर है। आप न सुख में सुखी बनें, न दुःख में दुःखी, तब कहीं जाकर सामायिक-साधना होती है।

सुख-दुःख दोनों क्षणभंगुर हैं, क्या हंसना क्या रोना।
रहो अकर्म कर्मरत रहकर, मन का कलिमल धोना।।

कोई भी क्रिया की जाए लक्ष्य पर दृष्टि, सही रीति, पूरी शक्ति, पवित्र भावना एवं फलासक्ति रहित की जाए। सामायिक 32 दोष रहित होकर करें। कुआसन नहीं, चलासन नहीं। यह सब शुद्धि भी लक्ष्य पर दृष्टि-लक्ष्य प्राप्ति के प्रति व्याकुलता रूप संवेग पर ही तो निर्भर है।

भीतर में राग-द्वेष का कांटा चुभा हुआ है। उसे निकालने की

आवश्यकता है। यह कांटा कब निकलेगा? जब व्यक्ति खुद प्रयास करेगा तो पैर में चुभा कांटा, निकल जायेगा। कोई शराबी, शराब पीता जावे और स्वयं छोड़ने का प्रयास न करे तो क्या शराब छूट जायेगी? राग-द्वेषादि कषायों को छोड़ने में पहले क्रोधादि की अनन्तानुबंधी छूटेगी, फिर मिथ्यात्व छूटेगा। किन्तु भीतर में जब तक विषयों का रस है तब तक मिथ्यात्व छूटने वाला नहीं, क्रोधादि कषाय छूटने वाले नहीं।

क्रोध को जीतने के लिए क्रोध को जानना जरूरी है। भगवती सूत्र शतक बारह उद्देशक पांच में कहा है- 1.कोहे (क्रोध), 2. कोवे (कोप), 3. रोसे (रोष), 4. दोसे (द्वेष), 5. अखमा (अक्षमा), 6. संजलणे (संज्वलन), 7. कलहे (कलह), 8. चंडिक्के (चाण्डिक्य), 9. भंडणे (भण्डन), 10. विवाए (विवाद)।

क्रोध के दस, मान के बारह, माया के पन्द्रह और लोभ के सोलह इस तरह तिरेपन का जोड़ बना रखा है। समवायांग सूत्र के बावनवें समवाय में मोह के 52 पर्यायवाची नाम हैं। हम चाहे शास्त्रीय आधार से सुनें या कथा भाग से सुनें, सुनने का सार है समझना। एक बादशाह का खोजा था। वह बादशाह की पगचम्पी करता था। बादशाह की पगचम्पी करने वाले को खोजा कहते हैं। एक दिन खोजा ने बादशाह से अर्ज की कि मुझे मक्का-मदीना जाना है। उसने दो-चार बार मिन्नतें करके बादशाह को मना लिया। बादशाह ने भी उसके जाने की व्यवस्था कर दी।

खोजा रवाना हुआ। गाँव के बाहर उसे एक फकीर मिल गया। फकीर कौन होता है, आप जानते होंगे।

पेट समाता अन्न ले, देह समाता चीर।
फिकर का फाका करे, उसका नाम फकीर।।

पेट में जितनी भूख हो उतना आहार ले, देह को जितने वस्त्र की जरूरत हो तो उतना ले तथा कोई चिन्ता न करे वह फकीर है।

खोजा को फकीर मिल गया तो पूछा- खोजा! कहाँ जा रहा है?

खोजा बोला- मैं हज़ करने जा रहा हूँ। फकीर बोला-

ना खुदा काबा में, और ना वो बुतखाने में है।
सच अगर पूछो तो वो दिल काशाने में है।।

काबा में खुदा नहीं । बुतखाने-मंदिर में भगवान नहीं । भगवान तो घट में विराजमान हैं । आपने मारवाड़ी भजन सुना होगा-

थारे घट में विराजे भगवान, मंदिर में कांई ढूंढतो फिरे ।।

फकीर ने कहा- अल्लाह यहाँ बैठा है, फिर तू कहाँ जा रहा है ? तूं तो यहीं बैठ जा । जो मिल जाय, खा लिया करना । बस, गुस्सा मत करना । माया-लोभ से दूर रहना, अपने-आपमें लीन हो जा और किसी जीव को मत सताना ।

फकीर ने समझाया कि भगवान तो तेरे घट में विराजमान हैं, तुझे कहीं जाने की जरूरत नहीं, यहीं बैठ जा । खोजे को बात ठीक लगी और वह वहीं टूटे-फूटे ढूंढ़ा पड़े मकान में बैठ गया । वह न किसी से बात करता और न ही किसी से कोई अपेक्षा ही रखता । लोग उधर आते तो टूटे-फूटे झोंपड़े में बैठे फकीर को देखकर कोई बेटा मांगता और कोई अन्य मनौती करता । लोगों की भावनाएँ फलीभूत होने लगीं तो श्रद्धा बढ़ गई और एक ने दूसरे को कहा- यहाँ ओलिया प्रकट हुए हैं । लोग उसे ओलिया कहने लगे, पीर कहने लगे । एक-दूसरे ने एक-दूसरे से सुना तो चारों ओर खबर फैल गई कि यहाँ पीर प्रकट हुए हैं और जो भी मनौती मांगता है वह पूरी होती है । ओलिये की खबर बादशाह तक पहुँची । बादशाह ने सोचा- चलो पीर साहब प्रकट हुए हैं तो वहाँ देखकर आएँ । बादशाह ओलिये के स्थान पर पहुँचा । ओलिये ने बादशाह को आते देख दरवाजे पर पर्दा कर दिया और पैर पसार कर मस्त अपने में लीन हो गया ।

बादशाह आया, अन्दर गया और देखा- अरे! यह तो खोजा है । बादशाह बोला- अजी मियांजी कब से पांव पसारे? जवाब मिला- जबसे हाथ समेटे । हाथ फैलाना, हाथ पसारना, कामना से मांगना बन्द कर दिया तो पैर पसार लिये ।

बादशाह बोले- पर तुम तो बैठे मक्का ।

जवाब मिला- तब ज्ञान नहीं था पक्का ।

बादशाह हैरान हो गया और पूछा- कुछ पाया?

जवाब मिला- हाँ,हाँ, पहले मैं तेरे आता था, अब तूं मेरे यहाँ आया ।

अब तो बादशाह की श्रद्धा जग गई, बोले- कुछ हमको भी बता।

सार मिला- किसी को मत सता ।

सताना पाप है। किसी को दुःख नहीं देना। क्योंकि दुःख देने से दुःख होता है। आचारांग में कहा- न हंतव्वा न अज्जावेयव्वा.......... । हनन नहीं करे, अधिकार नहीं चलावे। अधिकार लालसा कषाय है, हिंसा की जननी है।

बादशाह ने पूछा- तूं यहाँ अल्लाह की गाय बन कर क्यों बैठा है? तूने तो तीर्थ यात्रा पर जाने को कहा था।

तित्थ- त्रिस्थ अर्थात् जो तीन में स्थित होता है, ज्ञान दर्शन चारित्र में स्थित है वह तीर्थ है। 'तीर्यते अनेन इति तीर्थः' जिससे तिरा जाता है वह है तीर्थ। द्रव्य तीर्थ में तो आदमी डूब सकता है, लेकिन भाव तीर्थ संघ होता है। जो क्रोध-मान-माया-लोभ छोड़ता है तो वह श्रावक बनता है। जो शान्त है वह संत है। इन्हीं समता आराधकों, अधिकार लोलुपता त्यागियों एवं संवेगधारियों का तीर्थ है मोक्षाभिलाषियों का संघ है।

शुद्ध समता रस, रूच- रूच पीजिये रे।
चेतन चतुर कषाय, उपशम कीजिये रे।।

विकारों को छोड़ने की जरूरत है। गुस्सा छोड़े बिना तीर्थ क्या?

एक व्यक्ति को गुस्सा आता रहता था। वह एक दिन किसी संत के पास पहुँचा और बोला- महाराज! मुझे गुस्सा आता है। महाराज ने कहा- जिस दिन गुस्सा आ जाय उसके अगले दिन चौविहार उपवास कर लेना, तुम्हारा गुस्सा छूट जायेगा।

उसने संत की बात मान ली। नियम लेकर घर आ गया। गुस्से की प्रकृति थी, नहीं चाहते हुए भी गुस्सा आ गया। उसे चौविहार (अशन, पान, खादिम एवं स्वादिम इन चारों आहारों के त्याग रूप) उपवास करना पड़ा। गुस्सा आते रहने से उसने दो-तीन बार उपवास किया, परन्तु उपवास में उसे पूरे दिन में तारे दिखते थे। उपवास बड़ा कठिन है। जब भी गुस्से का प्रसंग आता उसे चौविहारी उपवास याद आ जाता। चौविहार उपवास न करना पड़े, इसलिये शान्तमूर्ति बने रहने का प्रयास करने लगा। धीरे-धीरे उसका यह प्रयास सफल हो गया। एक दिन उसके भतीजे ने सोचा-काका तो गजब का त्यागी बन गया। वह सच्चा तीर्थ नहाकर आया है।

भतीजा धनाढ्य था। उसने पूरे गांव में बहुत बड़े जीमणवार का आयोंजन किया। सभी को न्यौता दिया। सबको तो न्यौता दिया, लेकिन काका

को न्यौता नहीं दिया। काकी ने पूछा- तो काका ने कहा कि घर में शादी हो तो क्या घर वालों को न्यौता दिया जाता है? भतीजे ने अपनी तीर्थ यात्रा का जीमण किया है, अपने को चलना ही है। तो काका काकी के साथ पहुँच गया। भतीजा दरवाजे पर खड़ा सबका स्वागत कर रहा था और ज्यों ही उसने काका-काकी को आते देखा, द्वार से दूर जाकर खड़ा हो गया। काकी ने कहा- देखा, मैंने कहा था ना, हमारा कितना निरादर हो रहा है, चलो वापिस। काका सोचने लगा- कोई आग लगाकर भगोले को तपाए, मुझे तो नहीं तपना है और तप गया तो चौविहारी उपवास। काका ने काकी को समझाया- मैं घर पर आता हूँ तो क्या तुम स्वागत करती हो? घर आने पर स्वागत तो दूर, उपालम्भ मिलता है। अपने घर में स्वागत की क्या जरूरत? अपना ही तो घर है- चलो अन्दर चलें।

ये जो बाहर की परिस्थितियाँ हैं साधक उन्हें भीतर में घटित करके देखता है। मैं वीतराग का उपासक हूँ। मुझे संवेग प्रकट करना है तो मैं सोचूँ- मैं किसके लिए साधक बना? आप सामायिक करते हैं किसके लिए? स्वयं की शान्ति के लिए, कषायों के उपशम के लिए। उपशम सार है। सामने वाला कोई वन्दन करे, न करे, मुझे हर परिस्थिति में शान्त रहना है। क्षमा के लिए कभी-कभी हमारे भाई कहते हैं कि मैंने क्षमायाचना की, परन्तु सामने वाला तो बोला ही नहीं। सामने वाला बोले, न बोले, यह उस पर निर्भर है। माफी मांगने वाले की आराधना होती है।

हर जीव संवेग का गुण प्रकट कर सकता है। यदि आपको कभी क्रोध आए तो चौविहार उपवास याद कर लेना। भतीजा सबको पुरसगारी कर रहा था। वह दूधपाक सबको परोस रहा था। ज्यों ही काका की थाली आई, नीचे झुका, धूल उठाई और काका की थाली में डाल दी। यह देख काकी दौड़ी-दौड़ी आई और बोली- मैंने कहा था ना, यह हमारी बेइज्जती करेगा। इसकी बदतमीजी किसी भी हालत में सहन नहीं की जा सकती। काका के अन्दर विचार चले- भगोले में डालकर कोई औटाए तो अपने को औटना नहीं और ओट गए तो चौविहारी उपवास।

पत्नी को समझाया यह हमारी गलती है। घर वाले पहली पंगत में बैठे तो उसका धूलधाणी तो होना ही है। अपने को पुरसगारी करनी चाहिये थी ना। अब

परोसगारी कर काका-काकी अंतिम पंगत में बैठे, उनके भतीजे ने उन्हें खीरपाक नहीं परोसी, आगे वाले को परोसी। काकी फिर लाल-पीली हो गई। काका ने सोचा- भगोले में सिझाकर कोई छमका लगाए अपने को तो भभकना नहीं। भभक गए तो चौविहारी उपवास। कितना सुन्दर परिवर्तन हुआ काका का। जीमणवार की बात दो-चार दिन में भुलाई में पड़ जायेगी। पर यदि मैं क्रोध-कषाय का शिकार हो गया तो न जाने कितने वर्षों तक इस आत्मा को फल भुगतना पड़ेगा। आज भाई-भाई में और संघ-समाज में बात-बात पर झगड़े हो जाते हैं। ऐसी स्थिति जब भी आए, अपने-आपको पीछे हटा लें। जहाँ भी अपने निमित्त से अशांति का वातावरण बनता है, पीछे हट जाना चाहिये। हर स्थिति को अपने-आप पर घटाकर देखें फिर संघ-समाज और परिवार में वातावरण दूषित नहीं होगा।

काका ने काकी को समझाया- घर में खाना हो और कोई चीज कम रह जाय तो क्या घर वालों को उससे वंचित नहीं रहना पड़ता? काका की शांति देखकर भतीजा पैरों में गिर पड़ा। मैंने आपकी परीक्षा के लिए यह सब किया। आप जैसा गुस्सैल आदमी इतना शांत हो सकता है, यह मैंने जान लिया।

यह संवेग प्राप्ति की तैयारी है। उदय के प्रभाव से अपने-आपको रोकें। दोष के अवसर को टाल दिया तो शांति से काम सम्पन्न हो जायेगा। 'तस्सउत्तरी' के पाठ का अर्थ समझें तो भीतर में आनन्द आयेगा और यह जीव आगे बढ़ता जायेगा।

विनय

सौ. कमला सिंघवी

1. विनय धर्म का मूल है।
2. विनय से अशुभ कर्मों का नाश होता है।
3. विनय से नीच गोत्र का क्षय होता है।
4. विनय अभिमान को घटाता हैं।
5. विनय सभी सद्गुणों का प्रवेश द्वार है।
6. विनय से ज्ञान की प्राप्ति होती है।
7. विनय एक उच्च कोटि का तप है।

-अध्यापिका, जैन पाठशाला, ज्ञानमंदिर, भड़गांव (महा.)

अध्यात्म

आत्मा का स्वरूप-बोध

श्री जशकरण डागा

जीवतत्त्व- समग्र जगत् दो तत्त्वों से निर्मित है- जीव और अजीव। ये दोनों ही अनादि, अनन्त और शाश्वत हैं। जिसमें चेतना है, उपयोग है, सुख-दुःख की अनुभूति है और जो विज्ञाता है, वह जीव है। यह परिणमन स्वभावी होने से शुभ, अशुभ व शुद्ध भाव से शुभ, अशुभ व शुद्धभाव रूप होता है।[1] जीव के मुख्य लक्षण हैं- ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य एवं उपयोग।[2] प्रत्येक जीव अनन्त, दिव्य एवं शाश्वत शक्ति का पुंज है। कहा है-

शुद्ध बुद्ध चैतन्य घन, स्वयं ज्योति सुख धाम।
बीजु कहिए केटलुं, कर विचार तो पाम॥[3]

जीव के मुख्य दो भेद हैं- सिद्ध (अमूर्त) और संसारी (मूर्त)। सिद्ध कर्म रहित, शुद्ध, बुद्ध एवं मुक्त हैं, जबकि संसारी जीव कर्म सहित होने से कर्मबद्ध अशुद्ध अवस्था में परिणमन करते हैं। संसारी जीवों के दस लक्षण (परिणाम) कहे हैं।[4] यथा- 1. गति 2. इन्द्रिय 3. कषाय 4. लेश्या 5. योग 6. उपयोग 7. ज्ञान 8. दर्शन 9. चारित्र एवं 10. वेद। संसारी जीव स्वयं उपार्जित कर्मों से बंधकर संसार में जन्म-मरण कर चार गति चौरासी लाख जीवयोनियों में परिभ्रमण करता रहता है।[5] प्रत्येक जीव असंख्यात प्रदेशी, अनादि, अविनाशी एवं शाश्वत है।[6] भगवद्गीता में भी कहा गया है- 'आत्मा शस्त्र से भेदित नहीं हो सकता, अग्नि से प्रज्वलित नहीं हो सकता, जल से गल नहीं सकता और वायु से शोषित नहीं हो सकता।[7]

संसारी जीव दो प्रकार के होते हैं- 1. बहिरात्मा (मिथ्यादृष्टि) एवं 2. अन्तरात्मा (सम्यग्दृष्टि)। बहिरात्मा वे हैं जो जीवादि तत्त्वों को सम्यग् (सही) रूप में नहीं जानते-मानते हैं। उनके लिए कहा है-

बहिरात्मा उसको कहें, लखे न आत्म स्वरूप।
मगन रहे पर द्रव्य में, मिथ्यावंत अनूप॥

अन्तरात्मा वे हैं जो आत्मा एवं शरीर को अलग-अलग जानते व

मानते हैं। उनकी 'आत्म' तत्त्व के प्रति यथार्थपूर्ण निष्ठा होती है।

अजीव तत्त्व- इसमें जीव तत्त्व की भाँति चेतना, उपयोग, सुख-दुःख की अनुभूति आदि गुण नहीं होते हैं। यह जड़ तत्त्व भी अनादि, नित्य, अविनाशी व शाश्वत है, किन्तु संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेशी होने की अपेक्षा सूक्ष्म-स्थूल, हलका-भारी आदि अनेक प्रकार का होता है। जड़ या अजीव द्रव्य के मुख्य दो भेद हैं- रूपी एवं अरूपी। रूपी अजीव पुद्गल द्रव्य है जिसके लक्षण हैं- वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द, अंधकार, उद्योत, प्रभा, छाया, आतप आदि। अरूपी अजीव (जड़) के चार भेद हैं-- 1. धर्मास्तिकाय 2. अधर्मास्तिकाय 3. आकाशास्तिकाय एवं 4.काल। इनमें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श,शब्द आदि नहीं होते हैं।

जीवतत्त्व की अजीवतत्त्व से भिन्नता : कतिपय आधार- अनेक व्यक्ति संदेह करते हैं कि जीव तत्त्व अलग है या मात्र पंचभूत (पृथ्वी, वायु, अग्नि, जल व आकाश) का यौगिक रूप मात्र है। ऐसे व्यक्ति गंभीरता से विचारें कि इस प्रकार की शंका करने वाला कौन है? क्या अजीव भी ऐसी शंका कर सकता है? अजीव जड़ है, उसमें इस प्रकार की शंका त्रिकाल में कभी पैदा नहीं हो सकती है। यह महान् आश्चर्य माना जायेगा कि स्वयं जीव अपने अस्तित्त्व के विषय में शंका करता है। कहा है-

चेतन की शंका करे, चेतन पोते आप।
शंका जो करतार ते, अचरज एह अमाप।।[9]

जीवों में भी ऐसी शंका एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीवों में नहीं होती, कारण कि उनके मन न होने से ऐसा चिन्तन-मनन करने की उनमें योग्यता ही नहीं होती है। जो संज्ञी पंचेन्द्रिय मन एवं बुद्धि के धारक हैं, उनमें भी अनेक विशिष्ट विद्वान् होते हुए भी उनके दर्शन मोहनीय कर्म का विशेष उदय होने से, वे स्वयं अपने अस्तित्त्व के विषय में शंकाशील बने रहते हैं। जैसे सर्प से दंशित प्राणी को नीम भी कड़ुवा नहीं लगता, वैसे ही मिथ्यात्व मोहनीय कर्म से ग्रसित प्राणियों की दृष्टि निर्मल न होने से, उन्हें स्वयं के अस्तित्व के प्रति भी अनास्था रहती है। वे शरीर से ही जीव की उत्पत्ति मानते हैं और शरीर एवं जीव को भिन्न तत्त्व नहीं मानते हैं, किन्तु उनकी यह मान्यता भ्रामक है। कहा है-

भास्यो देहाध्यास थी, आत्मा देह समान।
पण ते बन्ने भिन्न छे, जेम असि ने म्यान।।[10]

वस्तुतः आत्मा व देह दोनों साथ रहते हुए भी उसी तरह भिन्न हैं, जैसे तलवार और म्यान। जो लक्षण जीव के कहे हैं, वे तीन काल में जड़ या अजीव तत्त्व में पैदा नहीं हो सकते हैं।

जो जड़ शरीर से जीव की उत्पत्ति मानते हैं, उन्हें विचारना चाहिए कि शरीर तो मृत्यु के पश्चात् भी बना रहता है, उसमें पाँचों तत्त्व रहते हैं तथा उनमें कोई न्यूनता या अधिकता हुई हो तो उसकी पूर्ति भी की जा सकती है। किन्तु मृत कलेवर में किसी भी प्रयोग या उपाय से पुनः जीव पैदा नहीं किया जा सकता, न उसे पुनर्जीवित किया जा सकता है। वस्तुतः जड़ से चेतन की उत्पत्ति किसी भी प्रकार संभव नहीं है। कहा है-

जड़ थी चेतन उपजे, चेतन थी जड़ थाय।
एवो अनुभव कोई ने, क्यारे कदी न थाय।।

जो व्यक्ति जीव को स्वतंत्र मौलिक तत्त्व नहीं मानते हैं, वे विचारें कि चिन्तन, मनन, अनुशीलन, हँसना, रोना, इच्छा, मूर्च्छा, स्मृति, हिताहित का विवेक, सत्यासत्य का निर्णय, अपने-पराये का भाव तथा प्रयोग-प्रयत्नादि अजीव पदार्थों में क्यों नहीं मिलते हैं।

आज विज्ञान का विकास चरम सीमा पर है। जीव सम्बन्धी अनेक प्रयोग वैज्ञानिकों द्वारा किए जा चुके हैं। मनुष्य की हड्डी, पसली, आँते, हृदय, गुर्दे आदि सभी अंग बदल दिए जाते हैं, किन्तु ऐसे निष्णात वैज्ञानिक एवं डॉक्टर भी मृत्यु होने के पश्चात् पुनः जीवनदान नहीं दे सकते हैं। यह 'जीव' की पृथक् मौलिक सत्ता होने का ज्वलन्त प्रमाण है। यदि पंचभूतों में से जीवन एवं जीव के गुण पैदा हो सकते हों तो मृत पंच भूत के पुतले में भी जीवन उत्पन्न क्यों नहीं हो जाता? इससे भी सिद्ध है कि जीव एवं पुद्गल पृथक् सत्ता वाले द्रव्य हैं।

भौतिक विज्ञानवादी यह भी कहते हैं कि 'आत्मा' नामक कोई द्रव्य है, तो भले ही वह परमाणु से भी सूक्ष्म हो, तो भी विज्ञान के विकसित साधनों से उसका पता लगाया जाकर दुनियाँ को दिखाया जा सकता है। किन्तु आत्मा की खोज के लिए किए गए सभी प्रयोगों से 'आत्मा' तत्त्व को

अभी तक खोजने में वैज्ञानिक सफल नहीं हुए हैं। कारण कि आत्मा भौतिक विज्ञान का विषय नहीं है। आत्मा अरूपी तत्त्व है। उसमें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श या रूपी परमाणु का अंशमात्र भी नहीं है। वह तो मात्र ज्ञान रूप है, जिसे भौतिक साधनों से नहीं पकड़ा जा सकता है। यह अरूपी आत्मा, नेत्रादि इन्द्रियों का विषय भी नहीं है। जो इन्द्रियाँ मात्र अपने-अपने विषय को ग्रहण करती हैं, उन सभी इन्द्रियों के ग्राह्य विषयों का विज्ञाता एक आत्मा है। कहा भी है-

जे द्रष्टा छे दृष्टि नो, जो जाणे छ रूप।
अबाध अनुभव जे रहे, ते छे जीव स्वरूप।।[11]
छ इन्द्रिय प्रत्येक ने, निज-निज विषय नुं ज्ञान।
पाँचों इन्द्रिय विषयनुं, पण आत्मा ने भान।।[12]

कुछ व्यक्ति आत्मा को तो मानते हैं, परन्तु उसका शरीर के साथ ही पैदा होना एवं नाश होना मानते हैं। यह मान्यता भी ठीक नहीं है। 'आत्मा' नित्य और शाश्वत तत्त्व है। आत्मा न कभी पैदा होता है और न कभी उसका नाश होता है। न ही उसका कभी एक प्रदेश मात्र कम अधिक होता है। उसका मरण मात्र देह-परिवर्तन है, पुनर्जन्म का कारण है। पैदा होते ही शिशु स्तनपान करने लगता है, सर्पादि में जन्म से ही क्रोध-प्रकृति देखने को मिलती है। ये संस्कार उनमें पूर्व जन्म का होना स्पष्ट करते हैं। पूर्व जन्म की स्मृति की भी अनेक घटनाएँ प्रायः सुनने व देखने को मिलती हैं तथा उन घटनाओं की मनोवैज्ञानिकों द्वारा जाँच कर पुष्टि की गई है। इस प्रकार जब जीव अन्य स्थान व गति से मरकर यहाँ जन्म लेता है तो फिर यहाँ से मरकर अन्यत्र जन्म लेना भी सुनिश्चित है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि जन्म-मरण आत्मा का नहीं, मात्र देह का होता है और आत्मा कथंचित् नित्य शाश्वत तत्त्व है जो न कभी पैदा होता है और न कभी मरता (नष्ट होता) है।

आत्मा का शुद्धस्वरूप- संसारी आत्मा कर्म सहित होने से अशुद्ध है और वह कर्मानुसार नाना योनियों में जन्म-मरण करती रहती है, देह बदलती रहती है, किन्तु सम्यग् आराधना और साधना के द्वारा जो आत्मा अपने समस्त कर्मों को क्षय कर देता है तो वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो

अपने मूल शुद्ध स्वरूप को उपलब्ध हो, उसी में सदा-सदा के लिए अवस्थित हो जाता है। इसे ही मोक्ष कहा गया है।

परमात्मदशा-प्राप्ति के उपाय- धातु विशेषज्ञों ने अशुद्ध स्वर्ण को शुद्ध करने हेतु चार उपाय कहे हैं, यथा-

मूसा पावक सोहगी, फूंका तणो उपाय।
राम चरण चारों मिले, मैल कनक को जाय।।

संसारी आत्मा भी अशुद्ध स्वर्णवत् है। इसकी विशुद्धि के भी चार उपाय ज्ञानियों ने कहे हैं, यथा- 1. सम्यग्ज्ञान 2. सम्यग्दर्शन 3. सम्यक्चारित्र तथा 4. सम्यक् तप। यहाँ स्वर्ण से आत्मा, मूसा से दर्शन, पावक से तप, सोहगी से ज्ञान व फूंका से चारित्र समझना चाहिए। यह रत्न चतुष्टय रूप मार्ग ही सच्चा मार्ग है। जो भी संसारी जीव सिद्ध-बुद्ध मुक्त हुए हैं, हो रहे हैं और होंगे वे सब इसी रत्न-चतुष्टय रूप मोक्ष मार्ग को अपना कर हुए हैं, हो रहे हैं, और होंगे। परमात्म दर्शन की उपलब्धि का यही एक शाश्वत सत्य मार्ग है। इससे भिन्न अन्य कोई मोक्षमार्ग नहीं है।

अतः जो भी आत्मबोध और निर्वाण पद चाहते हैं, वे सभी बहिरात्मा से अंतरात्मा तथा अंतरात्मा से महात्मा हो परमात्मस्वरूप की उपलब्धि हेतु सभी एषणाओं (सांसारिक कामनाओं) एवं इच्छाओं को त्याग कर रत्नचतुष्टय रूप मोक्ष मार्ग को भलीभाँति समझ उसके पथिक बनें।

-डागा सदन, संघपुरा मौहल्ला, टोंक (राज.)

संदर्भ-

1. प्रवचनसार 1/9
2. उत्तराध्ययन 28/11
3. श्रीमद् राजचन्द्र
4. प्रज्ञापना सूत्र, परिणाम पद 13 व ठाणांग 10/3
5. सूत्रकृतांग 1/2/1/4
6. दशवैकालिक नि. भाष्य 42
7. श्रीमद्भगवद्गीता 2/23
8. श्रीमद् राजचन्द्र (आत्मसिद्धि)
9. श्रीमद् राजचन्द्र (आत्मसिद्धि)
10. श्रीमद् राजचन्द्र (आत्मसिद्धि)
11-12. श्रीमद्राजचन्द्र (आत्मसिद्धि)

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक (7)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली नेअपने शब्दों में धारावाहिक रूप में किया है।

मौन का कल्पवृक्ष

पथिक,

एक बार युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी (बाद में आचार्य) ने
गुरुदेव के बारे में कहा था-
"कौन कहता है वे बोलते नहीं,
वे बहुत बोलते हैं, वाणी से नहीं, जीवन से।"
जीवन से बोलने वाले उस महान् साधक की
मुक्ति-यात्रा का एक प्रमुख पाथेय था- मौन।
मौन उनका दीक्षा पाठ था
जिसे उन्होंने एकान्त की पाठशाला में पढ़ा।
वे नित्यप्रति वीतराग के मंदिर में
मौन की सीढ़ी लेकर चढ़ते
और निर्भय, निर्विकल्प बनकर आत्मस्थ हो जाते।
उनकी मौन साधना वाणी के मौन से
आत्मा के मौन तक चली जाती।

वाणी के मौन से आत्मा का मौन?
कृपया इसका आशय स्पष्ट करें, मुनिवर!

पथिक,

गुरुदेव के मौन का अर्थ बड़ा व्यापक और गहन था।

उनकी वाणी के मौन का अर्थ था-पापकारी वचन नहीं बोलना,

उनकी काया के मौन का अर्थ था- संयम से अनुप्राणित रहना,

उनके मन के मौन का अर्थ था -मन के विकल्पों को रोकना

एवं उनकी आत्मा के मौन का अर्थ था- विभाव से स्वभाव में आना।

यही है पथिक, वाणी के मौन से आत्मा का मौन।

इसी को कहते हैं- आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना।

आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना?

मुनिवर! मेरे लिये तो अभी तक यह एक अनबुझी पहेली है।

इस सूत्र में तो दो आत्माएँ आ गई हैं-

एक देखने वाली और दूसरी दृश्य।

फिर, आत्मा तो स्वयं प्रकाशमान है,

सूर्य को देखने के लिये

किसी दूसरे सूर्य की क्या आवश्यकता है?

पथिक,

अध्यात्म की यात्रा के लिये आगमकार ने एक सूत्र दिया है-

'संपिक्खए अप्पगमप्पएणं'

अर्थात् आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना।

जब हम बाहर ही बाहर देखते हैं तो

पदार्थ के प्रति हमारी आसक्ति गाढ़ी हो जाती है।

और हम अपनी अन्तरात्मा को भूल जाते हैं।

इस स्थिति में हमारी आत्मा 'बहिरात्मा' बन जाती है।

लेकिन जब भीतर की यात्रा शुरू होती है

तब पता लगता है कि आनन्द का अजस्र स्रोत अन्दर ही है।

जब उस आनन्द का अनुभव होने लगे तब हमारी आत्मा

'अन्तरात्मा' बन जाती है।

बाहर और भीतर की अवस्थाओं के बीच
अज्ञान का गहन अंधकार है,
उसे दूर करने के लिये शुद्ध चेतना का दीप लेकर
अन्तर के महान् प्रकाश पुंज तक पहुँचना होता है।
इसी का नाम है- आत्मदर्शन।
इसी को कहते हैं- आत्मा से आत्मा को देखना।
गुरुदेव के लिये मौन एक शुद्ध चेतना का दीपक था,
रूपान्तरण का एक उत्कृष्ट साधन था।

उनके मौन व्रत की अखण्ड साधना चलती थी-
प्रतिदिन मध्याह्न में दो घड़ी,
प्रत्येक गुरुवार एवं प्रत्येक माह की दशमी को।

पथिक,
कालान्तर में वे बीज मौन के कल्पवृक्ष बन गये
और उन पर आत्मशांति के फूल खिलने लगे।
कल्पवृक्षों से उनका आत्म उपवन सदा हरा-भरा रहता था
क्योंकि उनका पोषण करने वाली माताएँ थीं-
वचन गुप्ति और भाषा समिति।
भला जहाँ माँ बालक की रक्षा करती है
उसे कोई कर्म शत्रु नष्ट करने के लिये
कैसे छू सकते हैं।

पथिक,
मौन को संयम का प्रथम सोपान कहा गया है क्योंकि,
मौन वाणी, काया और मन को नियन्त्रित कर
भावों को आश्रय देता है,
क्रोध का दमन कर उपशम भाव का सृजन करता है,
विकल्पों का परिहार कर संकल्प शक्ति का संवर्धन करता है
एवं आत्मिक बल को पुष्ट करता है।

अधिक क्या कहूँ, पथिक!
मौन मन का नियोजन करता है,
अतः प्रतिकूलता में धैर्य का परिचायक है
और अनुकूलता में संयम का सहायक है।
मौन आत्मा का आरोग्य है,
अतः कामनाओं के प्रचण्ड वेग में
संतोष का उद्गाता है
तो विषम स्थितियों में समभावों की सृष्टि करता है।
मौन अन्तरतम का माधुर्य है
अतः मन का मांगलिक है।
मौन स्वयं को निहारने का दर्पण है,
अतः मुक्तिपथ का साहचर्य है।
इसके महत्त्व का मैं क्या बखान करूँ?
भगवान् महावीर ने निरन्तर बारह वर्ष
मौन साधना की थी,
इसी से मौन का महत्त्व प्रतिपादित हो जाता है।

पथिक,
गुरुदेव जब मौन साधना में होते थे
और कोई श्रद्धालु उस मौन मूर्ति को अपलक निहारता था
तब ऐसा लगता था मानो गुरुदेव का निर्मल प्रेम
निर्झर बनकर श्रद्धालु के अन्तर को आप्लावित कर रहा हो।
वह उनकी मृत्युंजयी नीरव वाणी का नाद सुनते-सुनते
आत्म विभोर हो जाता।
एक बार ऐसा ही अनुभव एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक को हुआ।
गुरुदेव गुरुवार को मौन व्रत में थे।
डॉ. दौलत सिंह जी कोठारी का दर्शनार्थ आगमन हुआ।
वे अपना आसन लेकर चुपचाप
निर्निमेष दृष्टि से गुरुदेव को निहारने लगे।

उनका मन गुरुदेव के मौन में चला गया।
वाणी के बन्धन टूट गये,
चेतना हर्षित हो गई और वे आनन्द सिन्धु में ओतप्रोत हो गये।
विदा होते-होते उनके प्रांजल मन से सहज ही स्वर निकल पड़े-
"बिना बोले ही इतने सामीप्य और आनन्द की अनुभूति
जीवन में पहली बार हुई।"
क्यों न हो ऐसी अनुभूति?
पथिक, मौन की भाषा वाणी की भाषा से
कहीं अधिक बलवती होती है।
वैज्ञानिक तो प्रयोगशाला में प्रयोग करके
किसी भौतिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं,
पर अध्यात्म का प्रतिपादन जीवन की प्रयोगशाला में होता है।
गुरुदेव का जीवन एक अध्यात्म की प्रयोगशाला था।
उसमें प्रतिपादित सिद्धान्त को
मानो एक वैज्ञानिक ने आत्मसात् कर
अपूर्व आनन्द की अनुभूति की।

पथिक,
जब ग्लेशियर पिघलता है
तभी नदी में पानी आता है।
किसी के सम्मुख बैठने वाले के मन में
आनन्द की तरंगें तभी उठती हैं जब
सामने वाले के प्राणों से प्रवाहित शीतल समीर
का उसे स्पर्श मिलता है।
डॉ. कोठारी की अनुभूति जन-जन की भी अनुभूति थी।

हे गुरुदेव!
तुमने कहा था कि
मौन साधकों का दूसरों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
तुमने तो अपनी उक्ति को

अपने ही जीवन से प्रमाणित कर दिया।

वाणी भले ही तुम्हारा व्यवहार थी,

पर मौन तुम्हारा स्वभाव था।

तुम्हारा मौन मनीषियों के लिये मंगल माधुर्य था।

तुम्हारी मौन साधना में

विकारों का बहिष्कार, विचारों का परिष्कार एवं आत्मा का साक्षात्कार था।

मौन तुम्हारी तप-साधना की अमूल्य निधि थी

जिसे पाकर तुमने शुद्धात्मा के साथ ऐक्य स्थापित कर लिया।

हे गुरुदेव!

तुम मौन साधना में सौम्य इन्दु थे,

शुभ भावों के सिन्धु थे।

तुम शब्द यात्रा के नहीं, अपितु भाव यात्रा के पथिक थे,

इसीलिये तुम्हारा एक-एक शब्द मंत्र बन गया।

तुम्हारा मौन व्रत अखण्ड था,

इसीलिये तुम 'अक्षर' के अधिकारी बन गये।

पथिक,

मौन के इस कल्पवृक्ष के फूलों की गन्ध तुम्हें मिल रही है,

इसे केवल संचित ही नहीं करना,

अपितु इसे बांटने के सुख से वंचित भी नहीं रहना।

गुरुदेव मेरी स्मृति के शून्याकाश में एक निःशब्द छन्द है,

आत्म-रमण में मस्त सत्-चेतन-आनन्द है।

हृदय की गवाही और श्रद्धा की स्याही से

उनके जीवन के बारे में दो शब्द भले ही लिख दूँ,

पर उनका जीवन तो मौन की भाषा में एक अनुपम ग्रन्थ है

जिसका अनुवाद अभी बाकी है।

(क्रमशः)

कथानक (1)

शेर बना शाकाहारी

श्रीमती पारसकंवर भण्डारी

अहिंसा विश्व का सर्वश्रेष्ठ धर्म है। अहिंसा आत्मा का धर्म है, कारण कि आत्मा से ही इसका साक्षात् सम्बन्ध है। विश्व में शायद ही कोई ऐसा समाज हो जो अहिंसा को श्रद्धा एवं आदर की दृष्टि से नहीं देखता हो। किसी ने ठीक ही कहा है- अहिंसा रहित जीवन शिव नहीं शव बन जाता है। शव में सब कुछ रहते हुए भी चैतन्य के अभाव में वह निस्सार हो जाता है। इसी प्रकार जीवन में दूसरे सारे गुण विद्यमान होने पर भी अहिंसा का अभाव, जीवन को मृतक की तरह अपवित्र और सर्व शून्य कर देता है। ज्योंहि अहिंसा भाव का आविर्भाव होता है तो साधक का मानस मक्खन की तरह कोमल तथा शशि-किरणों की तरह शीतल हो जाता है। पारिजात-पुष्प की तरह अहिंसक की भावना सुरभिपूर्ण हो जाती है। जैसे कल्पवृक्ष अपनी शरण में आने वालों को अभीष्ट फल प्रदान करता है, वैसे ही अहिंसा भी अपने साधकों को मनोवांछित फल प्रदान करती है।

अहिंसा के संदर्भ में एक छोटी सी कहानी प्रस्तुत कर रही हूँ। नगरी एवं व्यक्ति के नाम काल्पनिक हैं।

चम्पापुरी नाम की एक नगरी थी। वह अति सुन्दर और मनोहर तथा सबका मन हरण करने वाली थी। बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ, सुन्दर-सुन्दर बाजार, चौड़ी-चौड़ी सड़कें, जगह-जगह बाग-बगीचे लगे हुए थे। वह नगरी दर्शकों का मन मोह लेती थी। जैसे चम्पा के फूलों की खुशबू चारों ओर फैल कर सबको आनन्दित करती है, उसी प्रकार चम्पा नगरी की प्रशंसा भी चारों ओर फैल रही थी। जो भी कोई सुनता, उसे देखने की इच्छा होती, और देखने के बाद प्रशंसा करते नहीं थकता था।

चम्पानगरी में जितशत्रु राजा राज्य करते थे। जैसा नाम वैसे उनमें गुण भी थे। एक राजा में जितने गुण होने चाहिए उतने सारे गुण उनमें मौजूद थे। वह प्रजा को पुत्रवत् पालने वाला उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने वाला, शत्रुओं से

नगर की रक्षा करने वाला तथा चोर-डाकुओं को कड़ी से कड़ी सजा देने वाला था। वह स्वभाव से सरल और मिलनसार था। राजा को किसी से दुश्मनी नहीं थी, वह सब से मित्रता बनाये रखता था। राजा के मित्र भी बहुत थे, जब कोई कार्य होता तो वह मित्रों की सलाह लिया करता था और मनोरंजन में भी मित्र साथ रहते थे। इस मित्र मंडली में एक सुदत्त नामक सेठ भी था, जो जैन धर्म का पालन करने वाला धुरन्धर श्रावक था। उसके बारह व्रत ग्रहण किये हुए थे। धन-सम्पत्ति से सम्पन्न उसको किसी बात की कमी नहीं थी। लक्ष्मी तो मानो उसकी दासी बनी हुई थी। वैभवशाली होते हुए भी उसमें अहंकार बिल्कुल नहीं था। सरल-स्वभावी और भद्रिक पुरुष था। वह स्थावर जीवों की हिंसा में मर्यादा करने वाला और त्रस-जीवों को अभय दान देने वाला था। व्रतों के पालन में वह चट्टान के समान कठोर था, तो मित्रता निभाने में नवनीत के समान कोमल हृदय था। राजा जितशत्रु के साथ उसकी गहरी मित्रता थी। उन दोनों में भाई जैसा प्यार था। राजा भी उससे हर वक्त सलाह लिया करता था, उसकी बातों पर राजा को बहुत भरोसा रहता था, क्योंकि वह कभी गलत या ऐसी-वैसी सलाह नहीं देता था। राजा उसके विचारों को बहुत महत्त्व देता था।

राजा को एक और शौक था पशु-पक्षी पालने का। उसने दूर-दूर से अनेक गाँवों से बहुत सारे पशु-पक्षी मंगवाकर इकट्ठे कर रखे थे। तरह-तरह के पशु-पक्षियों से एक बाग पूरा भर गया था, जिसे अंग्रेजी में 'जू' कहते हैं। उन पशु और पक्षियों को पालने के लिए तथा देख-रेख के लिए उसने बहुत से आदमी रखं छोड़े थे। पशु-पक्षियों को कोई तकलीफ न हो इस भावना से उनकी पालना एवं देख-रेख होती थी।

राजा हमेशा बाग से आता और पशु-पक्षियों को देख-देखकर खुश होता। पक्षियों के पिंजरों के पास जाकर खड़ा हो जाता और उन्हें एकटक देखता रहता। उनकी चहकती हुई मधुर-मधुर आवाज राजा के कानों में पड़ती तो राजा का हृदय गद्-गद् हो जाता, वह खुशी से उछलने लगता, मानो सारे जगत् का सुख उसे ही मिल गया हो। थोड़ी देर के लिए राजा अपने आपको भूल कर एकाग्र मन से उनकी आवाजें सुनता रहता था। दिन में एक बार तो वह अवश्य ही बाग में आ जाता था, मानो उसका यह रोज का नियम ही बन गया हो। राजा को बहुत खुशी थी, मेरे पास इतने पशु और पक्षियों का भण्डार है। मेरे राज्य में किसी बात

की कमी नहीं है। लेकिन यह सन्तोष ज्यादा दिन नहीं टिक पाया और उसके विचारों ने पलटा खाया।

एक दिन राजा को बैठे-बैठे विचार उत्पन्न हुआ कि मेरे पास तरह-तरह के और बहुत सारे पशु-पक्षी हैं, पर एक शेर की कमी है, शेर के बिना यह पशु-धन सूना-सूना सा है। राजा को शेर की कमी अखरने लगी और विचार करने लगा कि शेर के बिना मेरा यह पशु बाग अधूरा है। इस कमी को कैसे पूरा किया जाय, इसी उधेड़बुन में रात बिताई। सुबह होते ही मंत्री को बुलवाया और विशिष्ट पदाधिकारियों को भी बुलवाया। सबके आने के पश्चात् राजा ने अपनी बात रखते हुए कहा कि मेरे राज्य में पशु-पक्षी बहुत हैं और अनेक प्रकार के हैं, पर शेर नहीं है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि एक शेर मंगवाया जाय, हम शेर को पालना चाहते हैं। राजा की बात सुनकर सब आश्चर्य चकित हो गये और सब एक साथ कहने लगे कि राजा साहब! शेर को आप कैसे पालोगे? सिंह तो खूँखार जानवर है और नरभक्षी भी, उसे कैसे पाल सकते हैं। हम आदमियों के बीच शेर कैसे रह सकता है? मंत्री ने कहा-राजा साहब! शेर अपने राज्य में नहीं रह सकता, क्योंकि बाग के सारे जानवर उससे डर जायेंगे, जिससे बाग उदास हो जायेगा। शेर तो जंगल में ही ठीक है, वह यहाँ नहीं रह सकता। ऐसे भी वह मांसभक्षी है, उसके लिए हमेशा कोई एक जानवर मार कर मांस परोसना पड़ेगा। इसलिए शेर को लाने की बात को त्याग दीजिये। वह शहर में रहने के लायक नहीं है। सब अपनी-अपनी सलाह देकर चले गये, पर राजा को उनकी बात से संतोष नहीं हुआ। राजा के मन में विचारों की आंधी चल रही थी। वह इसी उधेड़-बुन में लगा रहा कि शेर तो आयेगा ही, पर उसे कैसे लाया जाए। सोचते-सोचते चार पाँच दिन और निकल गये, पर राजा को चैन नहीं पड़ रहा था।

आखिर उसने अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि तुम लोग जंगल में जाकर शेर पकड़ने वाले शिकारियों को बुलाकर लाओ। राजा की आज्ञा को शिरोधार्य कर अनुचर लोग जंगल की ओर रवाना हो गये। इधर-उधर घूम-घूम कर शिकारियों की खोज करने लगे। चार-पाँच दिन की दौड़-धूप के बाद कुछ शिकारी मिल गये, जो शेर को पकड़ने का काम करते थे। अनुचर लोग उनको लेकर राजा के पास पहुँचे।

राजा ने उन शिकारियों को देखकर पूछा, क्या तुम लोग शेर को पकड़ सकते

हो? हाँ हुजूर! हम तो वर्षों से यही काम करते आ रहे हैं। आपके आदमी हमें यहां पकड़ कर लाये हैं तो क्या हमारे से कोई गलती हो गई है? आदेश करें मालिक! हमने तो कोई ऐसा गलत काम नहीं किया है, फिर भी हमें क्यों पकड़ कर लाया गया है? अरे नहीं-नहीं, तुम्हारी कोई गलती नहीं है, और न ही इन अनुचरों की कोई गलती है। मैंने ही तुमको बुलवाया है। क्यों मालिक! हमें क्यों बुलाया है? तुमको हमारा एक काम करना पड़ेगा। फरमाइये माई-बाप! हमारे से जो बन पड़ेगा वह हम जरूर करेंगे। अरे मैं तुम्हारा काम ही तुम्हें सौंप रहा हूँ। मुझे एक शेर चाहिए। हमारे लिए तुम एक जिन्दा शेर पकड़ कर ले आओ, हम तुम्हें खूब इनाम देंगे। हम शेर को पालना चाहते हैं। क्या साहब? आप शेर को पालेंगे? ऐसे खूंखार जानवर को आप शहर में रखेंगे। हाँ भाई ! हम शेर को पालना चाहते हैं। हाँ, तुम में से किन्हीं दो व्यक्तियों को यहाँ शेर की देख-भाल के लिये रहना भी पड़ेगा। ठीक है माई-बाप! आपकी आज्ञा सिर आँखों पर। पर शेर को पकड़ने के लिए पिंजरा चाहिए, उसके बिना शेर शहर में आ नहीं सकता। पिंजरे में ही शेर को लाया जा सकेगा। ठीक है, हमारे आदमी पिंजरा बनवा कर दे देंगे, उसके बाद तुम लोग अपना काम शुरू कर देना।

पिंजरा बनकर आ गया, वे लोग पिंजरे को उठा कर जंगल की ओर रवाना हो गए। राजा के मन में शान्ति मिली कि, अब मेरी इच्छा पूर्ण होने जा रही है। राजा की ज़िद के सामने मंत्री आदि किसी की एक नहीं चली, सब चुप हो गये।

कुछ दिनों की दौड़-धूप के बाद एक सुन्दर सलौना शेर पकड़ा गया। वे आदमी शेर के पिंजरे को लेकर राज दरबार में पहुँचे, शेर को दरबार में देखते ही भीड़ डर के मारे तीतर-बीतर हो गई। सब मन में डरने लगे और सोचने लगे कि यहाँ शेर का क्या काम। इसे दरबार में क्यों लाया गया है?

शेर हृष्ट-पुष्ट और युवा था। दरबार में आते ही जोर से दहाड़ मारी। उसकी दहाड़ सुनकर तो लोग भाग खड़े हुए। राजा शेर को देखकर खुशी से नाच उठा, आज उसके मन की मुराद पूरी हुई। वह खुशी से झूमता हुआ पिंजरे के पास आया, और शेर को एक-टक देखने लगा, उसके हृदय में प्यार उमड़ रहा था, शेर भी राजा को एक-टक देखने लगा। अनायास राजा का हाथ पिंजरे में चला गया और वह शेर के मस्तक को सहलाने लगा। शेर भी चुपचाप खड़ा रहा, जैसे बरसों से दोनों परिचित हों, दोनों में दोस्ती हो गई। सब लोग देखकर आश्चर्य

कर रहे थे कि राजा को डर नहीं लग रहा। इतने में अनुचरों ने पूछा कि क्या पिंजरा बाग में रखवा दें। राजा ने कहा नहीं-नहीं पिंजरा बाग में नहीं जायेगा, यहीं मेरे दरबार में ही रहेगा। इसको मैं हमेशा मेरी नजरों के सामने देखना चाहता हूँ। इसलिए इसे यहाँ दरबार में रख दो। यह सुनकर सबको आश्चर्य हुआ कि दरबार में पिंजरा कैसे रहेगा ? यहाँ तो इतने लोगों का आना-जाना रहता है, शेर को देखकर लोग डर जायेंगे और यहाँ आना भी शायद छोड़ दें। किन्तु राजा के आगे किसी की बोलने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। पिंजरा वहीं दरबार में रख दिया गया। राजा साहब खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। उनका मन चाहा काम जो पूरा हो गया। राजा सवेरे नित्य-नियम से निपट कर, तैयार होकर जल्दी ही दरबार में पहुँच जाते और दिन भर पिंजरे के पास बैठकर शेर से बातें करते रहते। शेर भी राजा की बातें ध्यान से सुनता और प्यार भरी नजरों से देखता रहता। कहते हैं कि-बालक हो या पशु, वह प्यार चाहता है। वह प्यार करने वालों का कुछ भी नहीं बिगाड़ता है। फिर ज़हरीले जानवर और खूँखार पशु भी वश में हो जाते हैं।

(क्रमशः)

-128, मिण्ट स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई (तमि.)

मन

डॉ. रमेश 'मंयक'

मन तो घोड़ा है
जो थोड़ा अड़ियल है
तेज दौड़ता
निरकुंशता दर्शाता है
कभी-फटकार से
कभी- पुचकार से
तो कभी
संयम और साधना की
लगाम से नियंत्रित हो जाता है।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001(राज.)

English-Section

Vinay (Humility)

Shri Pravin K. Shah

Humility is external and internal respect towards all living beings. In fact, humility is an inherent virtue of the soul (Atma), with other virtues like knowledge, faith, contentment, forgiveness and so on. Humility is the king of all spiritual characteristics. Humility denotes humbleness, modesty, decency, politeness, courtesy, kindness, reverence, admiration, honor and respect. Many popular sayings such as "Ego is the source of sin," "One who bows is liked by all," and "Even the pride of king Rāvaṇ went to dust," points out that pride is a vice while humility is a virtue. Pride makes all our fame and great work useless. Without humility, the right knowledge, the right faith, and the right conduct cannot be obtained, hence, one cannot improve oneself and cannot achieve liberation.

Developing Humility-

Bhagawān Mahāvīr has said, "Become victiorious over ego by humility. "Bhagawān was once asked, "What do we achieve by practicing humility?" The Bhagawān replied, "With humility, our inner feelings become purified and such inner feelings eradicate the eight types of ego."

The following is a brief description of eight types of ego.

Pride of Knowledge:- One may acquire vast amounts of knowledge because of studying scriptures, discussion with other aspirants (Swādhyāy or Satsanga), and the practice of meditation. If one prides him/herself on this learning and looks upon others as inferior, it is pride of knowledge.

Pride of Worship:- When several types of human and superhuman attributes become manifest within oneself,

when one's fame spreads all over the world, and when one wins regard, honor, and worship from leaders, wealthy people, great ascetics and scholars, and if he looks at himself as high and great, it is pride of worship.

Pride of Family:- Suppose one's relatives had been honored with a high government position, a high position in some other profession, a high spiritual position and so on. If this individual boasts of his own greatness due to that, it is pride of the family.

Pride of Race:- Suppose one's ancestors are of a high and noble family, or from some other respectable race, or so on. If this individual boasts of his own greatness due to that, it is pride of race.

Pride of Power:- One might be in the full bloom of youth and endowed with unique physical power, one might have cultivated grand eloquence that pleases and amazes thousands ; one might have a sweet resounding voice; one might be blessed with the willpower by which one can stick to the activity until he is victorious. If one becomes arrogant due to one or more of these, then it is pride of power.

Pride of Accomplishment:- One might attain a super human achievement, like far seeing far hearing. flying, and victory in a particular sport, and so on, through self-control or other means. If one becomes proud of it, then it is pride of accomplishments.

Pride of Austerity:- While practicing various types of austerities such as fasting, reciting prayers, meditation, Swādhyāy and overcoming of taste (Rasa), if one starts feeling that he/she is an unparalleled Tapasvi and experiences the sense of vanity, it is pride of austerity.

Pride of Body:- When various parts of the body such as the eyes, ears, nose, chin, chest and so on are quite handsome or beautiful and well proportionate, and the elegance of the body is eye catching, if one becomes proud, then it is pride of

body.

The Eightfold pride disturbs the social, intellectual and spiritual progress of the aspirant. One should therefore know fully this Eightfold pride, abandon it in the daily routine of life and resort to humility. If this is done, humility as a virtue will reveal itself in a short time. Humility is the ladder that leads to true philosophical thinking and a happy life.

Types of Humility:-

There are numerous types of humility. A few important ones are:-

- Humility of right knowledge (Jňān Vinay); (a) tıeating knowledge and those who have acquired knowledge with devotion, (b) honoring them, (c) noble contemplation on what our Trithankar has said, (d) putting in self effort to acquire knowledge and (e) putting knowledge into practice.
- Humility of right belief (Darshan Vinay); respect for the right faith, respect for people who have the right faith and, the self-effort needed to acquire the right faith.
- Humility of right conduct (Chāritra Vinay); respect for right conduct, respect for persons who have the right conduct and, self-effort to practice the right conduct.
- Humility of right austerity (Tapa Vinay); respect for right austerity, respect for persons who practice right austerity and, self-effort to practice right austerity.
- Humility towards the spiritual leaders and great people (Upachār Vinay), one must be polite toward elders and spiritual superiors. One should bow (Pranām) to them. One must offer them a seat. When they are passing by, one should stand up with respect. One should behave him/herself in their presence, with decency.

Fruits of Humility:-

There are many fruits of adopting humility in daily

conduct. Some are as follows:-

When one become considerate of other people's inconveniences, speech softer and courteous, not authoritative, not aggressive, and without hidden intent.

A loving conduct and a spirit of tolerance are developed, We learn to apologize when a mistake is made.

Real greatness starts emerging, and boasting ends. We start seeing the positive side of others rather than the negative side. We learn to respect others as our equals. We give up the habit of comparing ourselves with others.

"I" is replaced by "WE". There is no presumption about what is right and wrong.

Just as trees rich in fruits hang low, similarly, people with true humility always look humble.

Like sugar in milk, if humility is associated with knowledge, one attains real greatness. Humility is the root of the process of purification. It is the necessity for social, professional, intellectual, mental, and spiritual prosperity.

Summary:-

Humility is the king of all characteristics. Ego destroys everything we work for. Vinay should be synchronized in all three phases: in action, in speech, and in thinking. Without humility, one cannot have right knowledge. Without right knowledge, one cannot have right faith. Without right faith, one cannot have right conduct. Without the right conduct, one cannot achieve Moksha. Let us develop this great virtue.

-Extracted from:

Jain Philosophy and Practice-2,
JAINA Education Committee. Federation
of Jain Associations in North America,
509, carriage Woods circle, Raleigh
Nc 27607-3969 USA

प्रेरक-जीवन

आत्मार्थी सन्तरत्न
श्री बलभद्रमुनि जी : एक उत्कृष्ट साधक

श्री नौरतन मेहता

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्यरत्न आत्मार्थी श्री बलभद्र मुनि जी महाराज का जन्म वि.सं. 1998 की पौष शुक्ला पूर्णिमा गुरुवार तदनुसार दिनांक 1 जनवरी 1942 को जोधपुर जिलान्तर्गत बिलाड़ा तहसील के झाक ग्राम में ओसवंशीय सुश्रावक श्री हस्तीमल जी सुराना की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती सायरकंवर जी की रत्नकुक्षि से हुआ। तीन भाई एवं दो बहिनों का भरापूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से संस्कारित है।

सुराना परिवार के कुलदीपक श्री बाबूलाल जी का बचपन गाँव की गलियों में बीता। प्राकृतिक छटा से ग्राम झाक समृद्ध है। बालक बाबूलाल शान्त, सहज, सरल और स्वाभिमानी था। पिताश्री ने अपने लाल को अध्ययन हेतु श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में भर्ती करवाया,जहाँ व्यावहारिक शिक्षण के साथ धार्मिक ज्ञानाभ्यास एवं जीवन-जीने की कला सिखाई जाती है। क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ के संस्कार सुराना कुलदीपक के जीवन में उत्तरोत्तर पल्लवित-पुष्पित होते गये। उन्होंने हिन्दी साहित्य विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की एवं धार्मिक ज्ञान में सामायिक-प्रतिक्रमण का अभ्यास किया।

सुराना परिवार झाक से बिलाड़ा आ गया। बिलाड़ा में व्यापार-व्यवसाय करते प्रामाणिकता की सुवास से सुराना परिवार समृद्ध हो गया। उस समय मारवाड़ के अधिकांश ग्राम-नगरों के लोग दक्षिणी प्रान्तों में व्यापार-व्यवसाय के लिए निरन्तर जाने लगे तो सुराना परिवार भी मद्रास जिसे आज चैन्नई कहा जाता है वहाँ जाकर बस गया। बिलाड़ा में रहते हुए सुश्रावक श्री बाबूलाल जी सुराना ने बिलाड़ा श्री संघ के कोषाध्यक्ष का दायित्व लगातार चार वर्षों तक निर्वहन किया। चैन्नई जाने के बाद अयनावरम् संघ के उपाध्यक्ष एवं तदनन्तर संघाध्यक्ष का उत्तरदायित्व भी उन्होंने बखूबी निभाया।

सुश्रावक श्री बाबूलाल जी एवं उनकी धर्मपरायणा धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती शांतिदेवी जी सत्संग-सेवा और संत-समागम का सुअवसर आने पर उसका भावनापूर्वक लाभ लेने में सदा सजग रहे। सुराना दम्पती के संस्कार उनके सुपुत्र श्री सुरेशचन्द जी, दिलीपकुमार जी, पदमचन्द जी के जीवन-व्यवहार में देखे जा सकते हैं।

सुश्रावक श्री बाबूलाल जी का जीवन धर्मनिष्ठ था। वे त्याग-तप में भी पुरुषार्थ करने में सजग थे। वर्ष 1991 में उन्होंने मासखमण की तपश्चर्या की। वे धार्मिक शिक्षण देने में भी सदा तत्पर रहते थे। उनकी धर्म-साधना में और जीवदया के कार्यों में उनकी धर्मपत्नी का भी बराबर सहयोग रहता था, परिवार में से कोई भी दीक्षित होने की भावना करता, सुश्रावक बाबूलाल जी उनकी भावना बढ़ाने में सहयोग करते। अपनी भानजी सुश्री पुष्पा बागमार को संयम-पथ पर अग्रसर करने में श्रावकरत्न श्री बाबूलाल जी की विशेष रूप से प्रेरणा रही। सुश्री पुष्पा जी की दीक्षा पर उन्होंने जूते-चप्पल का उपयोग नहीं करने का नियम ले लिया था।

सुश्राविका श्रीमती शांतिदेवी जी सुराना के असामयिक देहावसान पश्चात् तो श्रावकरत्न श्री बाबूलाल जी का मन न तो व्यापार-व्यवसाय में लगा और न ही सांसारिक भोग-विलास उन्हें इष्ट थे। वे अधिकतर समय सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, ध्यान, मौन और सत्संग-सेवा में लगाते रहे। श्रावकरत्न ने सात-आठ वर्ष तक पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ दीं और जहाँ भी धार्मिक शिविर लगता वे शिविरार्थियों को पढ़ाने में सदैव तत्पर रहे। उनके निकट सहयोगी सुश्रावक श्री कन्हैयालाल जी हिरण की प्रेरणा से वे दिसम्बर 2000 से संत-सतियों की सेवा में समय सार्थक करने लगे। संत-सेवा में रहते हुए श्रावकरत्न के मन में रह-रहकर दीक्षा की तरंगे हिलोरें लेने लगीं। वे शीघ्र दीक्षित हो जाना चाहते थे, किन्तु अपने छोटे पुत्र के सम्बन्ध होने तक दीक्षा की भावना होते हुए भी उन्होंने उत्तरदायित्व-निर्वहन को प्राथमिकता दी।

संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति करते हुए वे ज्ञानाभ्यास वृद्धि हेतु भी सदा सजग रहे। गुरु हस्ती के शिष्यद्वय गुरु हीरा एवं गुरु मान से वे विशेष रूप से प्रभावित रहे। वे गुरु चरण सरोजों में अपनी भावना यह रखते- "भगवन्! मुझे

अपनी चरण-सेवा में स्थान दो।''

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. भक्त को भक्त रखने के बजाय उसे भगवान बनाने में सदा से उदार रहे हैं इसीलिये संघशिरोमणि-संघनायक ने महाराष्ट्र क्षेत्र में विचरण-विहार करते हुए विरक्त बंधु श्री बाबूलाल जी की एवं उनके पारिवारिक-परिजनों की मनःस्थिति जान-समझकर विरक्त बन्धु की भावनानुसार महाराष्ट्र के घोटी नगर में वि.सं. 2059 की चैत्र शुक्ला दूसरी चौथ, बुधवार तदनुसार दिनांक 17 अप्रेल 2002 को भागवती दीक्षा प्रदान की।

विरक्त बन्धु की भावनानुसार दीक्षा महोत्सव पर न कार्ड छपे, न अभिनन्दन-समारोह किया गया। दीक्षा पर न शोभा यात्रा निकली और न ही श्री संघों का आवागमन रहा। विरक्त अवस्था में वे चैन्नई में कतिपय घरों में मात्र नियम करवाने की भावना से गये, किन्तु वहाँ पर भी सत्कार-सम्मान से उन्होंने परहेज ही रखा। घोटी में दीक्षा पर पारिवारिकजनों की उपस्थिति में मुमुक्षु श्री बाबूलाल जी सुराना ने प्रवचन सभा में आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से दीक्षा अंगीकार की।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने दीक्षा महोत्सव पर जन समुदाय का आह्वान करते हुए फरमाया था कि आप त्याग-तप में एवं व्रत-प्रत्याख्यान में देखा-देखी करके साधना-आराधना को मंहगी नहीं करने की सीख, इस दीक्षा प्रसंग से जरूर लें।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षा सम्पन्न हुई तो बड़ी दीक्षा वि.सं. 2059 की चैत्र शुक्ला एकादशी, मंगलवार तदनुसार 23 अप्रेल, 2002 को इगतपुरी में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। दीक्षा महोत्सव की तरह बड़ी दीक्षा पर भी श्रावक-श्राविकाओं ने व्रत-नियम की श्रद्धा समर्पित करने में अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। कई दम्पतियों ने शीलव्रत के खंद कर दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना का लाभ लिया।

नवदीक्षित संतरत्न का नामकरण **बलभद्र मुनि** के रूप में किया गया।

61 वर्ष की वय में दीक्षा लेने के पश्चात् भी ज्ञानाराधन में उनका

पुरुषार्थ युवक की भांति प्रबल था। नवदीक्षित संतरत्न ने अपने प्रथम चातुर्मास बालकेश्वर-मुम्बई में उत्तराध्ययन सूत्र का बत्तीसवां अध्ययन कण्ठस्थ करना प्रारम्भ किया तो गुरु से नित्य प्रति पाठ लेने एवं दूसरे दिन कण्ठस्थ करके सुना देने का क्रम यथावत् चलता रहा। वे जीवन के 69 वें बसन्त में भी अपने प्रिय ग्रन्थ आचारांग को कण्ठस्थ करने में तत्पर रहे। वे ज्ञान-चर्चा में प्रायः कहते थे कि मेरे पास शब्दों का जाल तो नहीं है, किन्तु भावों का माल जरूर है। वे स्वाध्याय की निरन्तरता-क्रमबद्धता के प्रबल पक्षधर थे। इसीलिये उन्होंने दशवैकालिक, उत्तराध्ययन के 35 अध्ययन, आचारांग सूत्र के 6 अध्ययन, आवश्यक सूत्र तथा नन्दी-सूत्र के साथ कई बोल-थोकड़ों को अपनी तीव्र मेधाशक्ति से कण्ठस्थ कर लिया। अन्तिम दिवस की संध्या तक भी उनका कण्ठस्थीकरण का श्रम चलता रहा।

वे प्रबल पुरुषार्थी संत थे। स्वाध्याय और सेवा के साथ वे लम्बे विहार में भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने एक-एक दिन में बीस-तीस किलोमीटर तक का विहार किया फिर भी ज्ञान-दान के क्रम में वे हर इच्छुक व्यक्ति को सिखाने में तत्पर रहते थे। अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में वे कुशल थे। नया व्यक्ति तो उन्हें चालीस-पचास वर्ष का दीक्षित संत समझता था। बालोतरा में प्रार्थना पश्चात् संतरत्न श्री बलभद्रमुनि जी महाराज की पच्चीस बोल की कक्षा की सुज्ञजन मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते नहीं थकते थे।

संत शान्त होता है और शान्त ही सहज रह सकता है, यह उक्ति रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्यरत्न श्री बलभद्रमुनि जी महाराज के जीवन में फलित हुई। वे सरल, सहज, सहिष्णु प्रकृति के संत थे। उनके जीवन में कोई प्रपंच नहीं था। वे हर आगत को उसकी रुचि व भावनानुसार बोल-थोकड़े सिखाने में और शास्त्र स्वाध्याय का सम्बल देने में सदा सजग रहे।

गुरु आज्ञा को सर्वोच्च मानकर आज्ञा-आराधन में वे मन-वचन-कर्म से समर्पित रहे। उनका जीवन साधना-आराधना में रचा-पचा रहता था। वे प्रमाद से कोसों दूर थे।

वे आत्मार्थी संत थे। घटित घटना को होनी मानकर वे न तो प्रसन्न होते

और न ही उन्हें कभी खिन्नता ही होती। प्रतिफल की उन्हें आकांक्षा तक नहीं थी, इसीलिये वे हर स्थिति -परिस्थिति में सहज रहे।

वय सम्पन्नता में दीक्षा लेकर भी संतरत्न ने साधना के प्रति सजगता रखी। उन्होंने गुरुचरणों में बालकेश्वर-मुम्बई, इचलकरंजी, बैंगलुरु, चेन्नई, बंगारपेठ, बीजापुर, कांदिवली-मुम्बई और अहमदाबाद के चातुर्मास में स्व-पर कल्याण की भावना से अपना जीवन समुन्नत किया। ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना के साथ गुरु-आज्ञा आराधन में वे सजग रहे।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति मुनिपुंगवों के सद्यः सिवाना समागम के प्रसंग पर प्रमोदभावना उनके चेहरे पर स्पष्ट परिलक्षित हो रही थी और उन्होंने स्वरचित भजन के माध्यम से भी समागम का प्रभावी चित्रण किया।

बालोतरा में पाँच मुमुक्षु बहिनों की भागवती दीक्षा महोत्सव पर अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते संतरत्न श्री बलभद्र मुनि जी म.सा. ने कहा कि मनुष्य आज इच्छाओं का गुलाम बना हुआ है और इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह निरन्तर प्रयास भी करता रहता है। मुनि श्री ने संयम में रमण करने और इच्छाओं का त्याग करने का आह्वान किया।

बालोतरा में नवदीक्षित साध्वियों की बड़ी दीक्षा 22 मई को सम्पन्न हुई। दिनांक 23 मई को आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10 का विहार हुआ तो मुनि श्री विहार में करीब एक किलोमीटर साथ पहुँचाने गये और लौटकर स्थानक पधारे। सायंकालीन प्रतिक्रमण पश्चात् तक भी नित्य की भांति मुनिश्री का स्वाध्याय का क्रम यथावत् चला। वयोवृद्ध श्री मोहनमुनि जी म.सा. पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे, परठने-परठाने में वयोवृद्ध मुनि को सहयोग देने की भावना से रात्रि में श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. परठने गये तब उनके श्वास की तीव्रता का अनुभव हुआ, कुछ टसकने की टीस सुनी गई, शरीर भी उष्ण पाया गया। वैसे रात्रि विश्राम के पूर्व पिछले करीब डेढ़ वर्ष से वे प्रतिदिन संथारा-प्रकीर्णक की गाथा सोने के पूर्व बोलते आ रहे थे। मुनि श्री ने कल्याण मन्दिर आदि स्तोत्र बोलकर सागारी संथारा नित्य क्रमानुसार किया ही था, फिर

भी तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने मुनि श्री की भावनानुसार पुनः सागारी संथारे का पाठ बोलकर सुनाया एवं संथारालीन मुनि को आत्म-जागरण में सम्बल देने का बराबर लक्ष्य रखा।

श्री बलभद्र मुनि सरल संतरत्न थे। वे प्रायः लघुवय के संतों को कहते थे "आप पुण्यशाली हैं, लघुवय में दीक्षा लेने के कारण आपने संसार में कोई विशेष पाप-कार्य नहीं किया, लेकिन मैं तो साठ वर्ष तक संसार की मोह-माया में रचा-पचा रहा, इसलिये मैंने पाप-कर्मों का अधिक बंध किया है। मेरे पास समय कम है और रास्ता लंबा है लेकिन आप (लघु वय के संतों को सम्बोधन) के पास समय की बहुलता है और रास्ता कम है इसलिए आप लोग कम साधना से जल्दी पार पहुँच जाओगे, पर मेरी स्थिति विपरीत है।" मुनिश्री के भावों का फलितार्थ यही है कि वे अन्तरंगता से संयम में रमण करने वाले संतरत्न थे। उन्होंने कतिपय भजनों की रचना भी की जिनमें प्रमुख भजन हैं- (1) "दुनियाँ में संत अनेकों हैं, पर धर्मदेव का क्या कहना, (2) जिनशासन का गौरव है, आत्म-ज्ञान की सौरभ है, (3) चिन्तन करले रे चेतनिया, आत्म स्वरूप का रे...., (4) म्हारे हिवड़े उमंग उल्लासजी, म्हारे दीक्षा लेवण री..., (5) इस योग्य मैं कहाँ हूँ, परमात्म-पद पा जाऊँ.....। मुनि श्री के भजन-गीतों से भी उनकी मनोभावना का सहज आभास होता है कि वे सरल प्रकृति के संत थे। उनकी आवाज में तेज था, तेजी नहीं। उनका जीवन बोलता था। चाहे भीड़-भाड़ हो या निरा एकान्त, प्रवचन में अच्छी उपस्थिति हो या कम, हर परिस्थिति में समभाव रखना मानो उनकी प्रकृति थी। आत्मार्थी संतरत्न ने आत्मभावों में लीन रहते हुए तीसरा मनोरथ सिद्ध कर लिया।

बालोतरा श्री संघ के सेवाभावी श्रावकों ने 24 मई को प्रातः करीब 4 बजे के लगभग संथारा सीझने के समाचार पहुँचाने प्रारम्भ किए तो सूर्योदय पश्चात् समीपस्थ ग्राम-नगरों से श्रद्धालुओं का बालोतरा पहुँचने का क्रम प्रारम्भ हो गया जो मध्याह्न, पार्थिव देह उठाने तक बराबर बना रहा। बालोतरा श्री संघ व संघ सदस्यों ने स्वर्गस्थ मुनि श्री की पार्थिव देह के संस्कार की तैयारी की। बालोतरा श्री संघ की सूचना के मुताबिक मध्याह्न में करीब 3.30 बजे जय-जयकारों के गगनभेदी जयनादों के साथ चांदी से निर्मित बैकुंण्ठी में

बैठाकर मुनिश्री की देह को स्थानक से प्रमुख-प्रमुख मार्गों एवं बाजारों से ले जाते हुए पूरे रास्ते भजन-गीत व जय-जयकार के जयनाद चलते रहे। हजारों-हजार लोगों ने स्वर्गस्थ मुनि श्री को श्रद्धांजलि तो दी ही, अन्तिम संस्कार में भाग लेने की भावना से जन समुदाय स्थान-स्थान से जुड़ता गया। ओसवाल स्वर्गाश्रम पहुँचने के पूर्व दिवंगत मुनिश्री के सांसारिक परिजन एवं सुपुत्र चैन्नई से दिल्ली और दिल्ली से जोधपुर हवाई-मार्ग से यात्रा कर बालोतरा पहुँचे, और अन्तिम संस्कार में सम्मिलित हुए। स्वर्गस्थ मुनि श्री के सुपुत्रों एवं परिवारजनों के साथ संघ पदाधिकारियों ने पार्थिव देह को मुखाग्नि दी। दाह संस्कार पश्चात् भक्तों ने स्थानक पहुँचकर आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर सहित मुनिपुंगवों के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण की। दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम के लाभार्थी जागीरदार परिवार ने आगत श्री संघों व श्रद्धालुओं की भोजन-व्यवस्था के माध्यम से स्वधर्मि वात्सल्य-सेवा का लाभ लिया।

आत्मार्थी संतरत्न ने आठ वर्ष से कुछ अधिक समय तक सजगता से संयम का परिपालन किया और संथारे के साथ समाधिमरण का वरण किया, उसके पीछे मुनिश्री की सरलता, सजगता और खाली हाथ नहीं जाने की भावना ही थी जो संतरत्न को अमरता की ओर बढ़ा ले गई।

आत्मार्थी संत के गुणकीर्तन- गुण स्मरण करने के प्रयोजन से 25 मई 2010 को बालोतरा स्थानक में गुणानुवाद सभा का आयोजन रखा गया। प्रातः 9 बजे के लगभग तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने "हे समय नदी की धार.....उद्‌बोधन से स्वर्गस्थ मुनिश्री का जीवनव्रत का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया। वीर दादा श्री हनुमानचन्द जी सालेचा (जागीरदार) ने संघ के लिए संतरत्न की अपूरणीय क्षति बताई और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। बालोतरा संघ के उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने मुनिश्री के अप्रमत्त गुण को रेखांकित करते हुए सरलमना संतरत्न को संघ की ओर से श्रद्धांजलि दी। वीरपुत्र श्री दिलीप जी सुराना- चैन्नई ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि पिताजी महाराज ने दीक्षा के बाद हम परिवारजनों से कभी सांसारिक बात तक नहीं की। हम जब भी दर्शन-वन्दन हेतु आते तो वे फरमाते कि एक के बजाय दो सामायिक करो और त्याग-तप में आगे बढ़ो। वीरपुत्र ने आचार्यप्रवर के

मुखारविन्द से आजीवन मिठाई का त्याग किया। स्वर्गस्थ मुनिश्री के सांसारिक सखा श्री कन्हैयालाल जी हिरण ने अपनी श्रद्धा समर्पित करते हुए कहा कि उस महान् आत्मा ने संयम-पथ का शानदार निर्वहन किया। बालोतरा संघाध्यक्ष श्री डूंगरचन्द जी श्रीश्रीमाल ने अपनी ओर से एवं श्री संघ की ओर से स्वर्गस्थ मुनिश्री के गुणों को ग्रहण करने की बात कहकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. (स्वर्गस्थ मुनि श्री की सांसारिक भानजी) ने कहा- मुनिश्री अप्रमत्त जीवन जीने वाले रहे, हम सतियों को पढ़ाते-पढ़ाते अनेक हितशिक्षाएँ देने में वे सदा उदार रहे। हमसे कहते कि प्रतिक्रमण पश्चात् वन्दना के कार्यक्रम में जो समय मिलता है उसमें मैं 500 के करीब गाथाओं का स्वाध्याय कर लेता हूँ, आप भी समय का उपयोग कर सकती हैं। महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री सिद्धिप्रभा जी म.सा. ने भजन के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते कहा कि न जन्म का महत्त्व है न मृत्यु का। महत्त्व है जन्म और मृत्यु के बीच बहने वाली जीवन रूपी सरिता का। स्वर्गस्थ मुनि श्री हमारे लिये स्टेपनी थे। उन्हें जिस काम में नियोजित किया जाता वे उस काम को चाहे वह प्रार्थना हो, प्रवचन हो, प्रश्नोत्तर हो, सीखने-सिखाने का काम हो हर कार्य के लिए वे तत्पर रहते थे। वे अप्रमत्त तो थे ही, सजग भी थे।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने कहा- स्वर्गस्थ मुनि श्री का जीवन प्रेरणादायी रहा। आचार्य श्री हीरा के शासन में उन्होंने संयम स्वीकारा और गुरु की सन्निधि में ही अपनी साधना सफल कर ली। वे गुणग्राही सरलमना संत थे।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने स्वर्गस्थ मुनि श्री के जीवनवृत्त का विवेचन करते फरमाया कि उस संतरत्न ने समय को व्यर्थ नहीं गवां कर समय का अर्थ पहचाना और समय को सार्थक किया। आपने मुनिश्री के अनेकानेक गुण सुने हैं, आप कोई एक गुण-ग्रहण का लक्ष्य रखें तो गुणानुवाद सभा में आना, सुनना सार्थक होगा।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया कि

उनका जीवन साठ साल की उम्र में आठ साल जैसा रहा। आठ साल का विद्यार्थी जिस लगन से पढ़ाई करता है, मुनि श्री ने साठ वर्ष में दीक्षा लेकर वैसी लगन रखी, उनका सीखने का उत्साह अन्त तक बना रहा। उपयोगी संत का एकाएक जाना संघ के लिए क्षति जरूर है, पर उस आत्मा ने जो पुरुषार्थ और पराक्रम प्रकट किया वह अनुमोदनीय तो है ही, अनुकरणीय भी है।

बालोतरा की भांति जोधपुर, जयपुर, नागौर, बीजापुर, भरतपुर, मैसूर, सवाईमाधोपुर, चेन्नई, बैंगलोर आदि अनेक ग्राम-नगरों में श्रद्धाञ्जलि सभा में सन्त-सतियों एवं जन समुदाय ने आत्मार्थी संतरत्न के गुणस्मरण-गुणकीर्तन कर उस दिव्यात्मा को श्रद्धा-भक्ति से याद किया।

आत्मार्थी संतरत्न का गुरु चरण-सेवा में समर्पण अनूठा था। वे निस्पृही साधक थे। प्रमाद से दूर अध्ययन-अध्यापन में जीवन के अंतिम क्षण तक वे सजग रहे। वे शान्त थे, सहज थे और रत्नसंघ की आन-बान-शान के लिए समर्पित रहे। ऐसे सुयोग्य संतरत्न को भावपूर्ण श्रद्धांजलि!

-सह-सम्पादक, जिनवाणी एवं अतिरिक्त महामन्त्री
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ [मई-2010] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'एक हाथी और सात अंधे' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 22 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	प्रतीक्षा जैन-जयपुर	20
द्वितीय पुरस्कार-200/-	मनीष जैन-आचीणा	19.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	अदिति जैन-इन्दौर	19.25
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	उत्कर्ष जैन-हिण्डौनसिटी	19
	गरिमा जैन-कोटा	19
	नीति संघवी-बदनावर	19
	रितिका मेहता-जोधपुर	19
	हर्षल छोरीया-मालेगाँव	19

प्रेरक-जीवन

सन्त-रत्न श्री बलभद्र मुनि जी का प्रेरक जीवन

पी. शिखरमल सुराणा

(1) **श्रेष्ठ उदाहरण :** मेरे मन-मस्तिष्क पर जिन सन्तों का विशेष प्रभाव हुआ है, उनमें श्रद्धेय श्री बलभद्र मुनि जी म. सा. भी एक थे। 23 मई 2010 रविवार वैशाख (द्वि.) शुक्ला दशमी, भगवान महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस को रात्रि तीन बजे वे देवलोक सिधार गये। उन्होंने 61 वर्ष की ढलती उम्र में दीक्षा ली और 8 वर्ष, 1 माह, 5 दिन तक श्रमण जीवन का अप्रमत्त व निरतिचार पालन किया। वे एक श्रेष्ठ उदाहरण बन गए कि प्रगाढ़ भावना हो तो बड़ी उम्र में दीक्षा लेकर भी जीवन को सार्थक किया जा सकता है।

(2) **सम्यक्त्व पराक्रमी :** ज्योतिषियों और पंडितों ने भविष्यवाणी की थी कि उनके दीक्षा का योग नहीं है। लेकिन उनका वैराग्य दृढ़ था। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म. सा. उनकी दीक्षा के प्रबल प्रेरक बने। आचार्य भगवन्त ने उनको दीक्षा प्रदान कर संघ और समाज पर महान् उपकार किया। यह घटना सिद्ध करती है कि सम्यक्त्व में पराक्रम करके ज्योतिषीय कथनों को झुठलाया जा सकता है। श्री बलभद्र मुनि जी सम्यक्त्व में पराक्रम करने वाले एक तेजस्वी श्रमण थे।

(3) **संयम में आनन्द :** मैंने जब भी उनके दर्शन किये और वन्दना करके सुख-साता की पृच्छा की तो एक ही जवाब मिलता - "वकील साहब! संयम में परम आनन्द है। आप भी आ जाओ, अब देर क्यूँ करो हो ?" सचमुच, उन्हें संयम में असीम आनन्द का अनुभव होता था। वे बड़े हर्ष, उल्लास एवं उमंग के साथ अपनी संयम-यात्रा को आगे बढ़ा रहे थे तथा मुझे और अनेक भव्य प्राणियों को संयम व आत्म-कल्याण की निरन्तर प्रेरणा भी दे रहे थे।

(4) **समय के प्रहरी :** श्री बलभद्र मुनि जी समय के सजग प्रहरी थे। सायंकालीन प्रतिक्रमण से दस मिनट पूर्व भी कभी मैं उनके दर्शनार्थ पहुँच

गया तो मैंने देखा कि वे खिड़की के एकदम नजदीक खड़े-खड़े डूबते सूरज के आखिरी मंद प्रकाश में भी आगम का स्वाध्याय कर रहे हैं। वे एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गँवाते थे।

(5) **आत्मभावों में संलग्न :** वे जब भी कोई भजन, स्तवन, स्तुति, गीत, प्रार्थना आदि गाते थे तो बड़े भाव विभोर होकर तन्मयता से, अन्तरात्मा से गाते थे। इस तरह वे विविध उपायों से निरन्तर आत्मभावों में संलग्न रहते थे।

(6) **शास्त्राधारित प्रवचन :** चेन्नई प्रवास के दौरान श्री बलभद्र मुनि जी अइनावरम उपनगर में (जहाँ उनका सांसारिक घर था) श्री नन्दीषेण मुनि जी एवं श्री प्रमोद मुनि जी के साथ दो सप्ताह विराजे। वहाँ प्रतिदिन एक घण्टे का पूरा प्रवचन उन्होंने दिया था। मुझे याद है कि उनके प्रवचन बहुत ही प्रभावशाली, शास्त्राधारित और रोचक होते थे।

(7) **साधना का सुप्रभाव :** चेन्नई से अक्षय तृतीया के पारणों के बाद वैशाख की भारी गर्मी में आचार्य भगवन्त एवं वरिष्ठ संतों के साथ उनका बंगारपेट की ओर विहार हुआ। रास्ते में पता चला कि उन्हें टाइफाइड हो गया है। आचार्य भगवन्त ने इजाजत दी कि वे एक सप्ताह रुककर स्वस्थ होने पर विहार करें। लेकिन मुनिश्री ने टाइफाइड में भी विहार जारी रखा। डॉक्टरों की दवा उन्होंने नहीं ली। उनकी उत्कृष्ट साधना और प्रबल इच्छा शक्ति का सुप्रभाव था कि उनका टाइफाइड अपने आप ठीक हो गया।

(8) **अनूठा स्वाध्याय प्रेम :** बंगारपेट चातुर्मास के दौरान एक दिन वे अस्वस्थ थे। रात को दस बजे मैं स्थानक से घर जा रहा था तो देखा कि श्री बलभद्र मुनि जी बैठे-बैठे शास्त्र की पाटियाँ दोहरा रहे थे। मैंने पूछा - "बावजी आप अस्वस्थ हैं और आपने अभी विश्राम नहीं किया ?" वे बोले - "संत को दस बजे से पूर्व सोना उचित नहीं है, अभी-अभी दस बजे ही हैं।"

(9) **कष्ट सहिष्णु :** उम्र की वजह से तथा जैन साधु जीवन के परीषहों के कारण कभी उनका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होता तो भी वे किसी से कुछ

नहीं कहते थे। उनमें परीषह सहन करने की क्षमता निराली थी।

(10) **यथा नाम तथा गुण** : वे प्रकृति के बड़े ही सरल तथा क्रोधादि कषायों से कोसों दूर थे। अनका आत्मबल (बल) तथा प्रकृति की भद्रता (भद्र) देखकर ही शायद आचार्य भगवन्त ने उनका नाम बलभद्र मुनि रखा होगा।

(11) **सबके प्रेरणास्रोत** : उनके लघुभ्राता सरल स्वभावी श्री मानचन्द जी सुराणा को भी उनकी पावन प्रेरणा से वैराग्य आया है। मुनिश्री की सांसारिक सुपुत्री सरला बाई बनवट का कहना है कि दीक्षा के बाद श्री बलभद्र मुनि जी म. सा. ने कभी कोई सांसारिक बात नहीं की। वे धर्म के सिवाय अन्य कोई बात नहीं करते थे। इस तरह वे युवा व बुजुर्ग, सबके लिए प्रेरणा के स्रोत थे।

(12) **श्रेष्ठ स्वाध्यायी** : दीक्षा लेने से पूर्व भी उन्होंने वर्षों तक अनेक स्थानों पर वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में पर्युषण पर्व में सेवाएँ दीं। जिन-जिन क्षेत्रों में वे स्वाध्यायी बनकर गये, वे क्षेत्रवासी तथा जो स्वाध्यायी उनके साथ सेवाएँ देने गये; वे सब-के-सब आज भी उनके गुणगान करते हुए नहीं थकते हैं। आरकाट के रेखचन्द जी का कहना है कि स्वाध्यायी श्री बाबूलाल जी सुराणा (श्री बलभद्र मुनि जी का पूर्व नाम) के आने के बाद ही वहाँ विशेष धर्म जागृति हुई।

(13) **अप्रमत्त आराधक** : श्री बलभद्र मुनि जी ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, विनय-धर्म, गुरु-आज्ञा पालन आदि सबकी साधना-आराधना अप्रमत्त होकर करते थे। मध्याह्न में जल्दी गोचरी करके वे जप-ध्यान में संलग्न हो जाते थे। तन-मन की स्थिरता के लिए वे वज्रासन करते थे।

(14) **थोकड़ों के विशेषज्ञ** : वे थोकड़ों के अच्छे जानकार थे। श्रावक-श्राविकाएँ तो उनसे थोकड़े सीखने के लिए लालायित रहते ही थे, छोटी-बड़ी साध्वियाँ भी आचार्य भगवन्त से विनति करके उनसे थोकड़े सीखने की अनुमति लेती थीं। मुनिश्री थोकड़े इतने सुन्दर ढंग से समझाते थे कि कोई भी आसानी से उन्हें हृदयंगम कर लेता। थोकड़े सिखाने और आगम-चर्चा में वे पूर्ण श्रद्धा, अपार निष्ठा और असीम धैर्य का परिचय

देते थे। एक ही प्रश्न को बार-बार पूछने पर भी वे लेशमात्र विचलित नहीं होते थे।

(15) आगम-निष्ठ सन्त : मुनिश्री को आगमों में सुदृढ़ श्रद्धा-भक्ति थी। वे आगमों के अलावा दूसरी पुस्तकें वगैरह नहीं पढ़ते थे। उनका आगम-ज्ञान अच्छा था तथा वे सम्यक्त्व पर खूब जोर देते थे।

(16) अनेक विशेषताओं के धनी : उनके जीवन में अनेक विशेषताएँ थीं। मुनिश्री के परिचितों व उनके सम्पर्क में आने वाले श्रावक-श्राविकाओं से यदि लेख, कविताएँ, संस्मरण आदि आमंत्रित किये जाएँ तो इतनी सामग्री इकट्ठी हो सकती है कि उनकी स्मृति में एक पुस्तक निकाली जा सके।

(17) संत-रत्न : वे आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म. सा. के ऐसे शिष्य-रत्न एवं सन्त-रत्न थे, जिन्होंने जिनशासन की अथक व अनुकरणीय सेवा की। उन्होंने न सिर्फ सुराणा वंश को गौरवान्वित किया, अपितु संघ व समाज की गरिमा में भी चार चाँद लगाये।

(18) समाधिमरण : ऐसे अप्रमत्त सन्त-रत्न को जीवन के आखिरी समय में संथारा लेने की सहज भावना हुई तथा श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनि जी म. सा. ने उन्हें संथारा के प्रत्याख्यान करवाये। श्री प्रमोद मुनि जी ने श्री बलभद्र मुनि जी के जीवन की अन्तिम घड़ियों तक खूब साथ दिया तथा संयम मार्ग में उनका हमेशा हौंसला बढ़ाया।

(19) नमन : ऐसे सन्त-रत्न के देवलोकगमन से संघ को क्षति पहुँची है। उनके महाप्रयाण से दुःख तो हुआ ही है; लेकिन उन्होंने अपना जीवन और मरण पूर्ण सार्थक कर लिया। यदि मेरा स्वास्थ्य अनुकूल रहा और श्रमण-पथ पर चलने का सौभाग्य पा सका तो उनका संयम-जीवन भी एक प्रेरक कारण रहेगा। ऐसे सन्त-रत्न की सदा जय हो। उन्हें नमन! वन्दन!!

-अध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

International Law Centre

61-63, Dr. Radhakrishnan Marg,

Mylapore, Chennai-600004

उपन्यास (17)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- इधर मुम्बई में विश्वास और मीनाक्षी के जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ दस्तक दे रही थीं। सेठजी ने अस्पताल की विकास-योजना की सारी जिम्मेदारी विश्वास को सौंप दी थी, अतः वह अत्यधिक व्यस्त हो गया। उधर किशनलाल के घर में...........।

आज सुबह से ही किशनलाल उदास है। आगरा के सारे डॉक्टरों ने अपने हाथ ऊपर उठा लिये थे। न तो आरती की बीमारी ठीक हो रही है, और न ही दीपक के कटे हाथ से हो रहा रक्त-स्राव रुक रहा है। क्या किया जाये? जीवित-लाशों जैसे इन दोनों को कहाँ-कहाँ, कैसे लिए घूमता फिरे?

बेहद मायूस हो रहा है आज किशनलाल। उसे स्पष्ट दिखलाई पड़ रहा है कि उसने, अपनी जिंदगी में जितने भी सपने संजोये थे, वे सब के सब, एक-एक करके चटक गये हैं।

'कितना पैसा बहाया है मैंने विश्वास पर।'-उसकी आँखों में विश्वास का चेहरा उभर आया।

'पर, उसने भी मेरे सारे अरमानों पर पानी फिरा दिया। नहीं, नहीं, मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए।' सच तो यह है कि वह अपनी पत्नी को साथ लेकर घर आया था, इस विश्वास के साथ, कि हम उन दोनों को सहज ही स्वीकार कर लेंगे। अपने घर में उन्हें ससम्मान स्थान दे देंगे। किन्तु,.....क्या मैं यह कर सका?'

'मैंने ही उसके विश्वास को सम्बल नहीं दिया, उसकी आशाओं को झकझोर कर रख दिया, उन दोनों से अपना मुँह मोड़ लिया, तो फिर, उसे ही सारा दोष कैसे दिया जा सकता है?.....नहीं, नहीं, उसे घर से बाहर निकालने में, मैं ही पूर्णतः दोषी हूँ।.....न जाने कहाँ, किस हालत में होगा बेचारा?'

'अजी सुनते हो, दीपक को चक्कर आ रहे हैं'- शान्ति ने आंगन में से ही चिल्लाते हुए कहा- 'जल्दी से डॉक्टर को बुलाओ।'

शान्ति की तेज आवाज सुनकर, किशनलाल की विचार-मुद्रा भङ्ग हुई। अब वह, अपने आप में वापस लौटा, तो शान्ति को आश्वासन देते हुए बोला- 'डॉक्टर की कोई जरूरत नहीं है। मैं गोली निकाल कर दिये देता हूँ। ठीक हो जायेगा।'

'डॉक्टर को ही बुला लो। लापरवाही ठीक नहीं है'- शान्ति ने उसे सतर्क करते हुए सुझाव दिया।

'अच्छा'- कहकर किशनलाल अपने ड्राइंग रूम में आया, और डॉक्टर चटर्जी का फोन मिलाकर उसने कहा- 'डॉक्टर साहब! दीपक को चक्कर आ रहे हैं। आप जरा देख लीजिए, क्या बात है?'

पाँच-दस मिनिट बाद, ज्यों ही डॉ. चटर्जी आये, वह उन्हें सीधा दीपक के कमरे में लिवा ले गया।

'खून ज्यादा बह जाने से इसे कमजोरी अधिक है। हाथ के घाव में भी मवाद पड़ चुका है। डर है, कहीं यह ज्यादा खतरनाक न बन जाये। आप इसे जल्दी ही, देहली या मुम्बई ले जायें, तो उत्तम रहेगा'- डॉ. चटर्जी ने दीपक का निरीक्षण करने के बाद अपना सुझाव दिया।

'और आरती को?'

'तब आप मुम्बई जावें। वहाँ पर व्यवस्था अच्छी है। संशय की स्थिति भी मिट जायेगी। मैं आपको अपने एक मित्र का पता दिये देता हूँ। वे डॉक्टर हैं। उनसे मिल लीजिएगा? कहने के बाद डॉ. चटर्जी ने मित्र का पता लिखकर किशनलाल को दे दिया।

डॉक्टर को विदा करने के तुरन्त बाद किशनलाल ने मुनीम को फोन किया, और बतलाया-'चार टिकिट मुम्बई के लिए, हवाई जहाज के बुक करा लो।' फिर, उसने निकट खड़ी शान्ति से कहा- 'तुम, आरती और दीपक के कपड़े व सामान लेकर जल्दी से तैयार हो जाओ। तीन बजे के प्लेन से चलना है।'

'इतनी जल्दी किस बात की है?'

'तुम्हीं तो कह रही थी, बीमारी में लापरवाही ठीक नहीं है। रोग व दुश्मन, दोनों का जितनी जल्दी हो सके, समाधान कर देना चाहिए।'

'क्या समय हुआ है?'

'दो बज रहे हैं।.......अरे मोती!'

'जी सरकार!'

'ड्राइवर से कहो, कार निकाले। एयरपोर्ट चलना है।'

'अभी कहता हूँ सरकार!'

'और सुनो! हम सब मुम्बई जा रहे हैं। यहाँ की सारी जिम्मेदारी अब तुम्हारी है।'

'वापिस कब पधारेंगे सरकार?'

'कुछ कह नहीं सकते। पन्द्रह दिन भी लग सकते हैं, महीना भी लग सकता है।'

'आप चिन्ता न करें। मैं सब सम्हाल लूँगा' - कहकर वह बाहर निकल गया।

किशनलाल ने एक बैग अपने कंधे पर टाँग कर पत्नी से कहा- 'शान्ति! तुम आरती को लेकर नीचे चलो। मैं दीपक को लेकर आता हूँ।'

'दीपक! उठो बेटे। चलो।' - किशनलाल ने उसके पलंग के पास पहुँचते हुए कहा।

'मेरे कपड़े वगैरह?' -दीपक ने पूछा।

'तुम्हारी माँ ने ले लिये हैं। आओ मेरे कंधे को थाम लो।'

'दीपक ने पिता के कंधे को हाथ से थामा, और खड़ा हो गया। फिर, उनके साथ-साथ चल पड़ा।

सीढ़ियों से उतर कर, वे सामने खड़ी कार में जाकर बैठ गये। करीब बीस मिनिट में ही उनकी कार, हवाई अड्डे पर पहुँच गई।

अड्डे के प्रवेश द्वार पर खड़े मुनीमजी से उन्होंने चारों टिकट लिये, और चलकर वायुयान में जा बैठे। दो तीन मिनिट बाद, उन्मुक्त पंछी की तरह, वायुयान आकाश में उड़ चला।

आगरा से बम्बई तक की यह सीधी उड़ान। तीन घन्टे बाद ही वे मुम्बई जा पहुँचे।

वायुयान से उतरकर, किशनलाल सबको साथ लिये बाहर आया, और एक टेक्सी में सबको बिठाकर वह ड्राइवर से बोला- 'दादर ले चलो।'

'दादर किसलिये चल रहे हैं?' -शान्ति ने पूछा।

'वहाँ मेरे मित्र रहते हैं महादेव भाई गुजराती। उनसे राय लेकर ही किसी अस्पताल में चलेंगे।'

'भाईसाहब! दादर में कहाँ पर उतरना है आपको।' ड्राइवर ने पूछा।

'जैन मंदिर के पास।'-किशनलाल ने उसे बतलाया।

'अच्छा' - कहकर ड्राइवर ने कार की गति थोड़ी बढ़ाकर, जल्दी ही उन्हें जैन मंदिर के पास पहुँचा दिया।

'दीपक! चलो बेटे!' टैक्सी से उतरकर, दीपक को उन्होंने सहारा देते हुए कहा, फिर शान्ति से कहा-'तुम आरती की उंगली पकड़ लो। महादेव भाई का घर वह रहा, एकदम सामने।'

महादेव भाई अपने घर के नीचे ही खड़े थे। उनकी निगाह, किशनलाल पर पड़ गई। वे उनके एकदम नजदीक चलकर आये, और बोले- 'अरे तुम लाला किशन! कब से यहाँ हो भाई?'

'अभी चला आ रहा हूँ आगरा से।' किशनलाल ने उत्तर दिया।

'यह क्या हालत बना रखी है?'

'सब कर्मों का खेल है महादेव भाई! बुढ़ापे में दुःख लिखा था, भोग रहा हूँ।... दिल्ली की रेल दुर्घटना में, इन बच्चों की यह हालत हो गई। इसीलिए यहाँ इन्हें लेकर आया हूँ।'

'ठीक है, ऊपर चलो, फिर सोचते हैं।'

सब, महादेव भाई के साथ-साथ लिफ्ट में चढ़े, और उसके फ्लेट में पहुँच गये।

महादेव भाई की पत्नी और पुत्र, दोनों घर पर थे। उनका परिचय कराते हुए उसनें कहा- 'किशनलाल! यह है मेरी पत्नी-सुलोचना, और यह है मेरा बेटा अनुपम। व्यापार में यही मेरा साथ देता है। काटन एक्सचेन्ज की दुकान भी यही सम्हालता है।'

सबने एक दूसरे को नमस्कार किया।

'देखो लाला! तुमसे तो मेरा परिचय है। मगर, बाल बच्चों से नहीं है। इनका परिचय दे दो।'

किशनलाल ने मुस्कराकर कहा-' यह है मेरी पत्नी- शान्ति! यह पुत्र-दीपक और यह है बेटी आरती। रेल दुर्घटना में यह अपनी स्मरण शक्ति और आवाज, दोनों ही खो चुकी है।'

'ओह प्रभो! कितनी सुन्दर लड़की है। इसके साथ कैसा भंयकर हादसा हुआ

है। मैं तो अपने अनुपम के लिये ऐसी ही सुन्दर बहू की तलाश में हूँ। काश! यह..' सुलोचना के मुँह से अनायास निकल पड़े ये शब्द।

'अरे! तो क्या हुआ? अनुपम को अगर आरती पसन्द हो, तो मैं किशनलाल से बात कर लूँगा।' – महादेव भाई ने अपनी पत्नी के मन को प्रोत्साहित करते हुए कहा।

'अनुपम ने मुस्कराते हुए अपनी गर्दन नीचे झुका ली है'– यह देखकर, महादेव भाई किशनलाल से बोला–'क्यों लाला! क्या विचार है आपका?'

'महादेव भाई!' – किशनलाल ने भरे–भरे से स्वर में उसे उत्तर दिया–'आरती ठीक हो जाये। उसके बाद ही मेरे मन को तसल्ली मिलेगी। फिर, सुलोचना भाभी कहेंगी, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी!...क्यों शान्ति?'

'तब भला हमें क्या एतराज होगा?'–शान्ति ने सहजता से सहमति दी अपनी।

'मुझे उम्मीद है लाला! आरती ठीक हो जायेगी। यदि वह ठीक नहीं हुई, तो भी, मैं आरती को पुत्रवधू बनाने को तैयार हूँ। मुझे विश्वास है, अनुपम मेरी बात को नहीं टालेगा।'– महादेव भाई ने किशनलाल को आश्वासन और तसल्ली दोनों देते हुए कहा।

'क्या सेवा है मालिक!'–सुलोचना द्वारा बजाई घन्टी सुनकर, तीर्थराम ने सामने आकर पूछा।

'क्या मंगवाऊँ आप लोगों के लिये?–अच्छा, ऐसा करो तीर्थराम! सात लिम्का ले आओ।'

'तीन बोतलें तो फ्रिज में रखी है मालिक।'

'उन्हें रहने दो!'

'अच्छा मालिक।'

तीर्थराम बाहर निकल गया।

लिम्का के स्वाद के साथ–साथ वे लोग, भविष्य की योजना, और कार्यक्रम तय करने में लग गये। अन्त में, महादेव भाई ने अपनी राय प्रकट की 'पहले मैं सब पता कर लूँ। उसके बाद ही किसी अस्पताल में इन्हें भर्ती कराया जायेगा।'

(क्रमशः)

युवा-स्तम्भ

शांति का बोध

श्री के.एस. गलुण्डिया (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

पुत्र ने पिता से पूछा- "पिताजी! मन बड़ा अशांत रहता है, सब कार्य सुचारु रूप से चल रहे हैं, व्यवसाय में, परिवार में समाज में कहीं कोई समस्या अथवा तकलीफ नहीं है फिर यह अशांति क्यों?"

पिता ने सहज भाव से उत्तर दिया- "पुत्र अशांति से 'अ' हटा दो, शांति मिल जाएगी"

पुत्र ने झुंझलाकर कहा- "पिताजी! आप शब्दों से खेल रहे हैं। केवल 'अ' हटाने से शब्दार्थ में शांति मिल सकती है वास्तव में नहीं, मैं मन की शांति की बात कर रहा हूँ।"

पिता ने शांत स्वर में फिर दोहराया- "बेटे 'अ' हटाने से मेरा तात्पर्य अहंकार से है। जहां अहंकार है वहाँ मैं और मेरा सदैव बना रहता है और यही आसक्ति एवं ममत्व को उत्पन्न करता है। सही मायने में ये ही मन को अशांत करते हैं।"

"यह कहना बहुत आसान है। वास्तव में बिना अहम् के व्यक्ति की कोई पहचान ही नहीं है एवं बिना पहचान के व्यक्ति न तो भौतिक प्रगति कर सकता है, न ही जीवन में कोई महत्त्वाकांक्षा प्राप्त कर सकता है।" पुत्र ने थोड़ी असहमति जताते हुए कहा और प्रश्न किया "क्या आप, नहीं सोचते कि जो प्रगति आज तक हुई है उसके पीछे बड़े-बड़े लोगों ने चाहे वे वैज्ञानिक हों, दार्शनिक हों, राजनेता हों अथवा समाज सुधारक हों, उनके कुछ सपने थे, महत्त्वाकांक्षा थी, और वे उसको प्राप्त करके अपनी पहचान बनाना चाहते थे, अपना नाम करना चाहते थे। एक सफल एवं सार्थक जीवन के लिए इस जीवन में अपने अहम् और अभिमान को बनाये रखना आवश्यक है।"

पिता ने समझाने का प्रयास किया- "पुत्र! मैं इससे सहमत हूँ कि हर व्यक्ति को अपनी पहचान बनानी चाहिए, सपने देखने चाहिए, संकल्प शक्ति

से उन्हें पूरा करना चाहिये व जीवन को सार्थक एवं सफल बनाना चाहिये। लेकिन सब कुछ करने के बाद भी यह देखा गया है कि व्यक्ति संतुष्ट नहीं होता है। बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त करता है तो उसे एहसास होता है कि वह अल्पज्ञानी है। बहुत सम्पत्ति प्राप्त करने के बाद वह अपने को ज्यादा दरिद्र समझने लगता है। जितना विषय भोग और वासना को तृप्त करने का प्रयास करता है उतनी ही भूख बढ़ती जाती है। सब कुछ पाने के बाद भी और अधिक पाने की लालसा बनी रहती है। मन अशांत रहता है, आखिर क्या कारण है?''

पुत्र ने कहा- ''अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण पाना बहुत कठिन है।''

पिता ने दोहराया- ''अशांति व अहंकार का गहरा सम्बन्ध है। जहां मैं और मेरा है वहाँ दुःख ही दुःख है। मनुष्य जब तक आसक्ति और ममत्व के मायाजाल में फंसा रहता है वह असहनीय कष्ट एवं दुःखों को झेलता है, लेकिन जब उसकी दृष्टि में बदलाव आता है और अपने अहंकार पर विजय प्राप्त कर लेता है तो मन में असीम शांति का अनुभव करता है।

वार्तालाप चलता रहा। पुत्र ने फिर पूछा- ''आखिर व्यवहार में इसको कैसे उतारा जाए?''

पिता- ''पुत्र! मैं यहाँ यह बताना चाहता हूँ कि जीवन में छोटी-छोटी बातें बहुत महत्त्व रखती हैं। यदि मनुष्य दूसरे व्यक्तियों को भी अपने समान समझे, तथा प्रेम, आदर व शिष्टाचार रखे तो जीवन में सरलता व निर्मलता का अनुभव कर सकता है। यदि व्यवहार में आप अपने अधीनस्थ कर्मचारी या अपने से छोटे व्यक्तियों को आगे होकर नमस्कार, गुड मॉर्निंग अथवा जय-जिनेन्द्र बोलते हो तो एक सकारात्मक सोच बनती है एवं आपके साथ, मित्र व परिवारजन भी उसका पालन करने लगते हैं। इसी प्रकार 'धन्यवाद' व 'कृपया', 'कैसे हो' व 'बहुत अच्छा', 'शाबास', 'क्षमा करना' वे शब्द हैं जो व्यवहार में मधुरता लाते हैं और जीवन की राह को आसान बना देते हैं। इसके विपरीत जो लोग अपने अहम् और अहंकार का कचरा ढोते रहते हैं उनकी राह उतनी ही कठिन हो जाती है और परिवार में, समाज में व अपने कार्य-स्थल में कहीं भी शांति का अनुभव नहीं करते हैं। आवश्यकता है अहंकार को विनम्रता और परोपकार में

बदलने की। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जितने यशस्वी लोग हुए हैं चाहे वे राजनेता हों, धर्मगुरु हों, वैज्ञानिक या साहित्यकार हों उनमें विनम्रता का गुण अवश्य रहा है।''

विनय व क्षमा का महत्त्व– भगवान् महावीर ने कहा है कि उसी की आराधना सार्थक होती है जो क्रोध, अभिमान, कपट, लोभ व रागद्वेष को शांत कर क्षमा मांगता है और क्षमा करता है। इसके अभाव में सारी साधना-आराधना निरर्थक हो जाती है। किसी ने ठीक ही कहा है ''झुकते वही हैं जिनमें जान होती है, अकड़ तो मुर्दों की पहचान होती है।''

सब धरा रह जाएगा जब छोड़ चलेगा बंजारा– महाराणा फतेहसिंह जी मेवाड़ के जाने माने शासक हुए हैं। जैन संतों का वे बहुत आदर किया करते थे। आचार्य चौथमल जी महाराज से वे बहुत प्रभावित थे और उनसे उन्होंने बोध प्राप्त किया। उन्होंने अपने सेवकों में एक चौबदार को केवल इस कार्य के लिए रखा था कि जब कभी वे महलों से बाहर जाते तब वह अजान लगाता था– ''सब धरा रह जाएगा जब छोड़ चलेगा बंजारा।'' जीवन अनित्य है। राजपाट व शान शौकत एवं ऐश आराम सब एक दिन यहीं रह जायेंगे, कुछ साथ जाने वाला नहीं है, इस सत्य की वे बार-बार अनुभूति करते थे।

जो विनम्र हैं, अहम् को झुकाकर लोक व्यवहार करते हैं उनके लिए प्रगति व जीवन पथ सुगम हो जाता है। अहंकार ही स्वार्थ, लालच, झूठ, गुस्सा एवं कटाक्ष-भाषण आदि कई प्रकार के दुर्गुणों को जन्म देता है जो परिवार, समाज व लोक व्यवहार में कटुता एवं द्वेष को जन्म देते हैं। किसी शायर ने कहा है–

गुलशन वालों गुलों से मुस्कुराना सीखो,
किसी के दिल में घर बसाना सीखो।
खुद ब खुद झुक जायेंगे औरों के सिर,
पहले अपना सिर झुकाना सीखो।।

शांति का बोध तभी संभव होता है जब दूसरों के प्रति आदर, दया, सेवा व परोपकार का भाव जागृत होता है।

-53, लेन नं. 2, गोपालबाड़ी, जयपुर (राज.)

प्रेरक व्यक्तित्व

समताशील स्वाध्यायी साधक
श्री सम्पतराज जी डोसी : एक प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व

श्री धर्मचन्द जैन

प्रज्ञाशील स्वाध्यायी, तत्त्वज्ञ एवं चिन्तनशील साधक, प्रशान्तात्मा, आगमों एवं थोकड़ों के मर्मज्ञ, करुणाशील श्रावकरत्न श्रीमान् सम्पतराज जी डोसी का जीवन जैन समाज में प्रेरणादायी रहा एवं रहेगा। आदरणीय डोसी साहब ने अपने पिता श्री उदयराज जी डोसी तथा माता श्रीमती आचुकी देवी जी से प्राप्त धार्मिक एवं नैतिक सुसंस्कारों को निरन्तर आगे बढ़ाया।

स्वाध्याय प्रवृत्ति के विकास में योगदान- आदरणीय डोसी साहब परमाराध्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म. सा. के अप्रमत्त संयम जीवन से प्रभावित होकर सन् 1971 में स्वाध्याय संघ - जोधपुर के सक्रिय स्वाध्यायी बने। आपकी ज्ञान गरिमा, वक्तृत्व शैली, कार्य - निष्ठा एवं समन्वयशीलता आदि विशेषताओं को देखकर आपको सन् 1972 में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ - जोधपुर का संयोजक मनोनीत किया। लगातार 21 वर्षों तक आपने संयोजक के रूप में स्वाध्याय की अनूठी मिशाल कायम की। संयोजक के दायित्व से मुक्त हो जाने के बाद भी आपकी सेवाएँ स्वाध्याय संघ को सतत मिलती रही। साथ ही शिक्षण बोर्ड, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल एवं श्रावक संघ की गतिविधियों में भी आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ रही हैं।

आपने अपनी आन्तरिक रुचि वाले इस स्वाध्याय के कार्य को विस्तार देने में पूर्ण समर्पण भाव से कार्य किया। केन्द्र सरकार के डाक विभाग में सेवारत होते हुए भी रात्रि के समय में, अवकाश के दिनों में तथा अवकाश लेकर भी स्वाध्याय संघ के कार्य को आगे बढ़ाने हेतु अथक परिश्रम किया। जहाँ स्वाध्याय संघ में प्रारंभ में गिनती के स्वाध्यायी सेवा देते थे, वहीं आपके समर्पित प्रयासों से स्वाध्यायियों की संख्या सैकड़ों में पहुँच गयी।

आपने सोजतसिटी, जलगांव, बैंगलोर, कोयम्बटूर, मैसूर,

हैदराबाद, फत्तेपुर, कानपुर, जामनेर, काल्कापुर, चालीसगांव, जालोर, नीमच, नाभा, मेड़ता, कलकत्ता, बनारस, कपासन, सिंगोली, खेरोदा, भोपालगढ़ आदि क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधन हेतु अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कीं।

कषाय विजय के प्रभावी प्रेरक– स्वाध्यायियों के ज्ञान-वर्धन हेतु आपने सैकड़ों शिविरों में धार्मिक अध्ययन करवाया। आप कषाय-विजय एवं तनावमुक्ति की बहुत ही प्रभावी प्रेरणा किया करते थे। क्रोधादि कषायों की उत्पत्ति कैसे होती है ? उन्हें कैसे रोका जा सकता है। नहीं रोकने से क्या - क्या हानियाँ होती हैं? इनका सुन्दर, सरल एवं प्रभावी ढंग से उल्लेख आपने अपनी पुस्तक 'कषाय-विजय के व्यावहारिक उपाय' में किया है। केवल उल्लेख ही नहीं अपितु अपने आपको भी क्रोधादि कषाय से सदैव दूर रखा है। स्वाध्यायियों की सुविधा हेतु उन्होंने 1. स्वाध्याय स्तवन माला, 2. सप्तचरित्र संग्रह, 3. स्वाध्याय गीतिका नामक पुस्तकें भी तैयार कीं, जो स्वाध्याय संघ से प्रकाशित हुईं।

तत्त्वज्ञान की अनूठी मिशाल– थोकड़ों सम्बन्धी, आगम-सम्बन्धी विवेचन करने में आप सिद्धहस्त थे। आप कई वर्षों तक थोकड़े फेरते नहीं थे, किन्तु आपकी प्रज्ञा इतनी निर्मल थी कि जब भी कोई प्रश्न पूछा जाता तो आप तुरन्त ही सटीक जवाब देते थे।

सन् 1984 में डाक विभाग से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद तो आमका अधिकांश समय ज्ञान-ध्यान एवं अध्यापन कार्यों में व्यतीत होने लगा। घोड़ों का चौक स्थानक में जो भी सन्त - सती पधारते, उनको आगमों एवं थोकड़ों का ज्ञान - ध्यान सिखाने में, उनमें आध्यात्मिक-भावना भरने में आपकी महनीय सेवाएँ रहीं।

आप राग-द्वेष से उपरत होने तथा कषाय विजय करने की सतत प्रेरणाएँ व्यावहारिक दृष्टान्तों के माध्यम से करते रहते थे। तत्त्वज्ञान सम्बन्धी गूढतम जिज्ञासाओं का आप आगम प्रमाण सहित, सरल एवं व्यावहारिक उदाहरणों से उत्तर देने में विशेषज्ञ थे।

स्वधर्मी सेवा कार्य में अग्रणी– आध्यात्मिक ज्ञान के साथ परोपकारिता,

स्वधर्मि-वात्सल्य भावना एवं करुणाशीलता का अनूठा संगम आपके जीवन में रहा हुआ था। प्रसिद्ध समाज सेवी, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट श्रीमान् माणकचन्द जी संचेती के साथ आपने जोधपुर के सैकड़ों परिवारों को स्वधर्मी सेवा से लाभान्वित करने का कार्य अनेक वर्षों तक किया। लाखों रूपये की खाद्य सामग्री, दवाइयाँ, शिक्षण सामग्री आदि प्रतिमाह जरूरत मन्द परिवारों को बिना किसी आडम्बर - प्रदर्शन के उपलब्ध कराना आपकी अति विशिष्ट सेवा रही है।

निभने - निभाने की प्रभावी प्रेरणा- आपके प्रभावी वक्तव्य में एक बात जरूर आती थी कि जिसने निभने और निभाने की कला सीख ली, वह व्यक्ति परिवार, समाज, संघ तथा संयम अवस्था में सुखी रह सकता है तथा जिसने इस समायोजन की कला नहीं सीखी, घर-परिवार में शान्ति से रहना नहीं सीखा तो वह जीवन में आगे कैसे बढ़ेगा।

पारिवारिक समन्वय के प्रेरक- व्यक्तिगत जीवन में, पारिवारिक जीवन में संयमी जीवन में तथा संघ-समाज में जहाँ कहीं भी वैचारिक भिन्नता को दूर करने में डोसी साहब को याद किया जाता, वे सदैव तत्पर रहते थे। आपने अनेक परिवारों के आपसी विवाद, मनमुटाव एवं समस्याओं का निराकरण कर उन्हें प्रेमपूर्वक जीवन जीने में बहुत बड़ा सहयोग प्रदान किया है, यही कारण है कि आपको देवपुरूष, साधक आत्मा, कषाय विजयी आदि नाम से जाना जाता है।

समत्वगुण से परिपूरित साधक- जब तक आपका स्वास्थ्य ठीक रहा, तब तक आप रात्रि में संवर घोड़ों का चौक स्थानक में करते। पाँचों तिथि दयाव्रत की आराधना करते। स्वस्थ रहते, आवश्यक शारीरिक निवृत्ति (शौचादि) हेतु आप प्रायः बाहर ही पधारते थे। डोसी साहब ने जीवन भर समता, शान्ति एवं प्रसन्नता पूर्वक संघ - सेवा के कार्य किये। स्वाध्याय, समता, साधना, स्वधर्मी सेवा, मिलनसारिता, ज्ञान-दर्शन-चारित्र के विकास में महनीय योगदान आदि विशेषताओं के कारण आपको सन् 2005 में अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा संघ के सबसे उच्च श्रेणी के सम्मान 'संघरत्न' से सम्मानित किया गया।

पारिवारिक सहयोग– डोसी साहब का पारिवारिक जीवन नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत रहा। आपकी सहधर्मिणी सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी डोसी ने धर्म कार्यों में सदैव आपको सहयोग प्रदान किया। यही कारण है कि डोसी साहब अनेक स्वाध्यायी शिविरों में अध्यापन हेतु, स्वाध्यायी प्रचार-प्रसार कार्यों हेतु, जोधपुर के समीपवर्ती एवं सुदूरवर्ती क्षेत्रों में पधारकर अनेक वर्षों तक अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान करते रहे।

डोसी साहब के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द जी डोसी स्वयं सरल, शान्त एवं सेवाभावी हैं, जिन्होंने नवसारी का जमा-जमाया व्यवसाय छोड़कर सपरिवार जोधपुर आकर 3-4 वर्षों तक पिताश्री की निर्मल भावों से सेवा की। श्री प्रेमचन्द जी डोसी व श्रीमती संगीता जी डोसी ने जो आत्मीय भावों से सेवा की है, वह अपने आप में अनुकरणीय उदाहरण है। आपकी तीन सुपुत्रियाँ - श्रीमती चेतन इन्द्रमल जी मेहता-अहमदाबाद, श्रीमती ज्ञानकंवर अर्जुनराज जी भंसाली-जोधपुर, श्रीमती रतनकंवर नरेन्द्र सा. भंसाली-जोधपुर हैं। पौत्र - समकित डोसी, पौत्री - प्रेक्षा डोसी तथा पूत्रवधू श्रीमती संगीता जी डोसी हैं। डोसी साहब के अनुज श्री नवरतन जी डोसी की भी स्वाध्याय संघ - जोधपुर के संयोजक के रूप में महनीय सेवाएँ रही हैं। पूरा परिवार सुसंस्कारित होने के साथ ही धार्मिक भावनाओं से ओत - प्रोत है।

हार्दिक आभार– आपने सैकड़ों स्वाध्यायियों को तत्त्वज्ञान सिखाया। मैं भी अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे भी आदरणीय डोसी साहब ने अनेक थोकड़े तथा उनकी धारणाएँ, जीवनोपयोगी बातें, संघ - समाज में कार्य करने के महत्त्वपूर्ण सूत्र आत्मीयता पूर्वक सिखलाये। उनके इस उपकार के प्रति जितनी हार्दिक कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करें, उतना ही कम है।

उनकी प्रेरणाएँ, उनके उपदेश उनके जीवन के अभिन्न अंग थे, इस कारण वे हमारे लिए अनुकरणीय बन गये। डोसी साहब ने 76 वर्ष की उम्र में संथारापूर्वक, समाधि भावों से देह का विसर्जन किया। उनकी समता, सहनशीलता, सक्रियता, समन्वयशीलता, समर्पणता एवं सेवाभावना हमेशा हमारा पथ प्रदर्शित करती रहेगी।

रजिस्ट्रार-अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड,
घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

प्रेरक-व्यक्तित्व

मेरे वन्दनीय पिताश्री

श्री प्रेमचन्द डोसी

मेरे पिताश्री सम्पतराज जी डोसी का जीवन शान्त और समतामय था। आपके सरल व्यक्तित्व में विशेष आकर्षण था। आपकी शिक्षा थी राग-द्वेष को कम करो, विषय-कषाय को दूर करो। मम और अहम् में ज्यों-ज्यों कमी होगी त्यों-त्यों जीवन सरल एवं शान्त बनता जाएगा। आपकी सोच थी धर्म का फल तत्काल मिलता है, कोई भी प्रतिकूल परिस्थिति हो समभाव रखो, धैर्य रखो, प्रतिकूल परिस्थिति धीरे-धीरे अनुकूल होती जाएगी। आर्थिक परेशानी जीवन में बार-बार आई, किन्तु आपको वह नहीं डिगा सकी। आपने उसमें भी अपनी परीक्षा समझी और हर दुःखद परिस्थिति में सकारात्मक सोच के साथ मुझे समझाते थे शायद इससे भी अधिक तकलीफ हो सकती थी, यह तो नहीं हुआ। आपका जीवन धर्म के आचरण में रमा हुआ था। वे कहने की अपेक्षा करके दिखाते थे। आपने कभी भी दबाव से धर्म करने को नहीं कहा, प्रेरणा देते एवं मात्र संकेत करते थे और हम सभी परिवार वाले आपका संकेत समझ लेते थे। आपके जीवन में विनय एवं विवेक का गुण कूट-कूटकर भरा हुआ था।

आपकी दृष्टि में समाज के सभी लोग समान होते हैं। समाज में मात्र धनी लोगों को बहुत महत्त्व या पदवी देने के आप पक्षधर नहीं थे। अगर वह व्यक्ति वास्तव में कार्य करता हो तो उसे वह सम्मान दिया जा सकता है।

कषाय विजय पर आपका बहुत बल था। क्रोध को कैसे कम किया जाए? मान पर विजय कैसे हो? माया को कैसे जीता जाए? लोभ को कैसे रोका जाए? इन विषयों पर आपके विचार सुलझे हुए थे। उन्होंने मुझे भी लोभ के सम्बन्ध में समझाया- संतोष से ही सच्चा सुख मिलेगा। लोभ बढ़ाने से, धन बढ़ाने से कभी शांति नहीं मिल सकती। व्यवहार चले इतना कमाना भी जरूरी है, लेकिन अहं बढ़े तो उसके लिए कमाना मूर्खता है। मेरा व्यापार जोधपुर से बाहर था, पिताजी ने मुझे समझाया-"किसके लिए इकट्ठा करना है, घर-खर्च के लिए यहाँ भी व्यापार है" मेरी समझ में उनकी बात थोड़ी मुश्किल से आई, किन्तु समय रहते आ गई।

सब कहते हैं मैंने सेवा की, काम छोड़कर जोधपुर आया, लेकिन आपने मेरी सेवा 24 साल तक की, जब तक कमाने नहीं लग गया और आज तक कर रहे हैं सुसंसकार देकर। आपका जीवन मेरे लिए प्रेरणास्रोत है, सभी को ऐसे गुणी माता-

पिता मिलें। हम भी अपने बच्चों को ऐसे संस्कार दे सकें। हम हर परिस्थिति में एडजस्ट करना सीखें, निभने और निभाने की कला आए तथा क्षमा करना और क्षमा मांगना आए।

'परिवार में कैसे जीएँ' – इस सम्बन्ध में आपके विचार स्पष्ट एवं सुलझे हुए थे। सबको साथ में बिठाकर, बराबर का समझकर समाधान करते थे। आप कहते कोई भी परेशानी है तो उसे जल्दी सुलझा लो, परेशानी को बढ़ाना उचित नहीं। स्वयं बड़े होकर भी कहते थे, मुझमें जो कमी है तुम लोग मुझे बताओगे तो ही मैं अपने को सुधार पाऊँगा। बड़ा छोटा कोई नहीं, सभी बराबर के मित्रवत् हैं, एक दूसरे का भला चाहते हैं। आपमें बड़े होने का कभी मान नहीं रहा। आप झूठ और कपट से कोसों दूर रहते थे। जैन धर्म का जो अपरिग्रह सिद्धान्त है, उसे आपने जीवन में जीया। धन में आपको बुराई अधिक और अच्छाई कम नजर आती थी। स्वयं आर्थिक रूप से कमजोर होने पर भी दूसरों को मदद करते थे।

आपका कहना था– हम सबको क्रोध, मान, माया और लोभ या राग-द्वेष की बीमारी कम या अधिक रूप से लगी हुई है। मम और अहम् को छोड़ते हुए समभाव की साधना ही इस बीमारी का रामबाण इलाज है जिससे बन्धे हुए कर्म क्षय हो जाते है। आपने कहा– समभाव ही जीवन का सार एवं धर्म का सार है। आप कहते थे। कोरी क्रिया करने से नहीं आचरण में उतारने से धर्म होता है।

परिवार के सदस्यों, संघ एवं श्रमण-श्रमणी वर्ग का तहेदिल से आभारी हूँ कि आप सबके सहयोग से पिताश्री ने संलेखना संथारा ग्रहण कर देह त्याग किया।

समर्पित जीवन था उनका

श्रीमती ज्ञानकंवर भंसाली

आप धीर, गम्भीर, सरलहृदय, व्याख्यानी, स्वाध्याय-प्रेमी, शांत स्वभावी, मधुरभाषी, संयमनिष्ठ थे। आपके जीवन में इतने गुण थे कि उन्हें शब्दों में लिखना संभव नहीं है। आपने अपना पूरा जीवन साधर्मिक-सेवा में समर्पित कर दिया। आप संघ, समाज, परिवार व मौहल्ले में हर किसी की सेवा के लिए तत्पर रहते थे।

वे हम सबको यही शिक्षा देते थे कि आपस में कभी मन-मुटाव हो जाये तो प्रेमपूर्वक बातकर समस्या सुलझा लेनी चाहिए, जिससे आगे मनमुटाव न बढ़े। संघ के प्रति उनका समर्पण अद्वितीय था, संत-सतियों को भी थोकड़ों का बोध कराने में तत्पर रहते थे। आपका 14 घंटे का संथारा आपके श्रेष्ठ जीवन का परिणाम था। आपके स्वर्गवास से परिवार ही नहीं सम्पूर्ण जैन समाज में अपूरणीय क्षति हुई है।

बाल-कविता

हम नन्हें-नन्हें श्रावक हैं

डॉ. दिलीप धींग

हम नन्हें-नन्हें शावक हैं।
हम नन्हें-नन्हें श्रावक हैं।
हम महावीर के अनुयायी,
नवकार मंत्र के गायक हैं।

हम दिखने में छोटे-छोटे,
पर काम हमारे बहुत बड़े।
दुनिया को शान्ति सिखाते हैं,
हम प्रेम बाँसुरी वादक हैं।

यूँ मत समझो नादान हमें।
करने दो अच्छे काम हमें।
देखो, आने वाले कल के,
हम देश धर्म के नायक हैं।

हालाँकि राहें अनजानी।
पर हमने चलने की ठानी।
मुस्तैदी से बढ़ने वाले,
हम नन्हें-नन्हें धावक हैं।

तेरा-मेरा हम नहीं जानें।
झगड़े-टण्टे से अनजाने।
मिलजुलकर रहना सिखलाते,
हम सच्चे धर्म प्रभावक हैं।

ये बड़ी-बड़ी बातें छोड़ो।
टूटी-बिखरी कड़ियाँ जोड़ो।
ये घास घृणा की जल जाए,
हम चिनगारी हैं, पावक हैं।
हम नन्हें-नन्हें श्रावक हैं।

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

नारी-स्तम्भ

स्वभाव ही है सच्चा सौंदर्य

डॉ. साध्वी चिन्मय श्री

10 दिसम्बर 1980, गुजरात समाचार दैनिक में सुप्रसिद्ध डॉक्टरों की शोध का निष्कर्ष है कि कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधनों के प्रयोग से वृद्धावस्था कुछ जल्दी आती है। कृत्रिम रासायनिक पदार्थों से बने सौंदर्य प्रसाधनों का त्वचा पर भारी असर पड़ता है। अतः विदेशों में महिलाएँ इनका प्रयोग घटा रही हैं, जबकि भारत में कृत्रिम प्रसाधनों का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। पिछले 20 वर्षों में 400% वृद्धि हुई है। इनसे चर्म रोग होता है। आज नारी Facial (मुखशृंगार) Fairness (रंग निखार) Fashion (तन शृंगार) तथा Fitness (शारीरिक सौष्ठव) के पीछे अंधी दौड़ लगा रही है। कोई मेडिसन का सेवन कर रही हैं, कोई बाहरी क्रीम बनाम केमिकल काम ले रही हैं, तो कितनी ही हानिकारक मशीनों (साधनों) को अपना रही हैं।

आइब्रो पेन्सिल के लेड से अन्धत्व हो जाता है। सफेद क्रीम में रहे एनीमो मरक्यूरिक क्लोराइड से किडनी खराब होती है। परफ्यूम में वर्गामोट होता है, जिससे त्वचा पर झांई व धब्बे आ जाते हैं। पाउडर में मिला तारकोल झांई, दाग व त्वचा संबंधी रोगों को जन्म देता है। लिपस्टिक में रहे टाईटेनियम डाइऑक्साइड और बेन्जोइक ऐसिड से होठ काले होते हैं, खुजली आती है, सूजन भी आ जाती है व कैंसर की स्थिति निर्मित हो जाती है। हेयर डाई में हाइड्रोजन पैरा ऑक्साइड, अमोनिया ऐसिड, लेड ग्रेनाइट होने से बाल झड़ते हैं, रूखे हो जाते हैं। सिर की त्वचा पर एक्जीमा और खुजली हो जाती है। फाउण्डेशन रुज में बरगामोट रोम छिद्रों को बंद करता है व त्वचा कुपोषण का शिकार हो जाती है। नेल पॉलिश, हेयर स्प्रे तथा अन्य सौंदर्य प्रसाधनों में मिले हुए पैराफिनायलीन डायमीन जो आँखों में जलन, खुजली एवं माइग्रेन रोग पैदा करता है। ब्लीचिंग पाउडर से त्वचा कैंसर होने की आशंका होती है। टेलकम पाउडर में मैंगनीशियम सिलीकेट और जस्ता मिला होता है, जो श्वासनली में आकर जम जाने से श्वास रूक जाती है व दम घुटने लगता है।

स्त्री को प्रकृति से सुंदरता मिली है फिर भी बाहरी सुन्दरता को पाने के लिए पीड़ा उठा रही है, पैसे खर्च कर रही है, परेशानी को आमंत्रण दे रही है। उसे बाह्य सौंदर्य नहीं आन्तरिक सौंदर्य प्राप्त करना है, मन सुंदर होगा तो तन स्वतः ही सुंदर हो जाएगा।

'संस्कार' पुस्तक से साभार

कविता

ध्यानः मोक्ष की ओर गमन

श्री प्रवीण चोरडिया

स्थिर अध्यवसान अर्थात् मानसिक एकाग्रता ही है ध्यान।
जो साधक नित्य करते हैं, उनको होते अनेक ज्ञान।।

जैसे जल का योग पाकर नमक विलीन हो जाता है।
वैसे ही साधक का चित्त निर्विकल्प समाधि में लीन हो जाता है।।

मन, वचन, काया को जो ना रोके वे संसार में भटकते हैं।
करते हैं जो मन को एकाग्र, वे शांति एवं सुख पाते हैं।।

बुरे आचरण की गर्हा करे, सब प्राणियों से क्षमाभाव पाये।
निश्चल करके करते रहे ध्यान, जब तक कर्म नष्ट न हो जायें।।

मन को एकाग्र कर किसी एक में रमण करें।
धर्म ध्यान के माध्यम से मोक्ष गति की ओर गमन करें।।

क्रोध मान माया और लोभ का ध्यान से ही हनन करें।
कर मन को एकाग्र ध्यान से जिनवाणी का मनन करें।।

मौन होकर साधना करने से मन होता अति प्रफुल्लित।
कोई विचार नहीं आता मन में स्थिर हो जाता सब चित्त।।

चित्त स्थिर करने से ही कर्म नष्ट किए जाते हैं।
मोक्ष में चले जाते हैं साधक, कभी न वापस आते हैं।।

समय मात्र का भी करना नहीं है हमको प्रमाद।
मन स्थिर करके ही हम करते रहेंगे प्रभु को याद।।

कर मन को एकाग्र 'प्रवीण' अगर मोक्ष में जाना है।
या चौरासी भटक-भटक कर मानव भव में आना है।।

-गौतम मार्ग, कुम्हार गली नं. 5, उज्जैन-456006 (म.प्र.)

बाल-स्तम्भ

देह-सौन्दर्य से आत्म-सौन्दर्य की ओर

श्री नेमीचन्द पटोरिया

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अगस्त 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

छह खण्ड पृथ्वी के अधिपति चतुर्थ चक्रवर्ती सनत्कुमार का शरीर-सौष्ठव इतना मनोहर था कि मानो सौन्दर्य या लावण्य ने उसे अपने हाथों से सजाया-संवारा या संजोया हो। तीनों लोकों में इस आकर्षक देहयष्टि की न तो कोई होड़ थी और न जोड़। उसके इस अद्भुत सौन्दर्य की यश-गाथा इहलोक से उड़ती हुई देवलोक तक पहुँच गई। स्वयं इन्द्र ने देवताओं की सभा में उनके त्रिभुवन में अप्रतिम शरीर सौन्दर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की तो दो ईर्ष्यालु देव विजय और वैजयन्त इस प्रशंसा की परीक्षा करने तथा ऐसे अनूठे सुरूप को देखने मचल उठे और वे शीघ्र भूतल पर अवतरित हुए।

उन दोनों देवों ने वृद्ध ब्राह्मणों का रूप बनाया और चक्रवर्ती सनत्कुमार के राजमहल में आये। उस समय चक्रवर्ती सनत्कुमार अखाड़े से निकले थे। अतः वे धूल-धूसरित, बिखरे बाल तथा अस्त-व्यस्त अल्प परिधान पहिने थे। उन देवों ने उस सौन्दर्य-गरिमा को देखा और उन्हें विश्वास हो गया कि इन्द्र द्वारा वर्णित प्रशंसित यह रूप सवाया अधिक है। फिर महाराज से कहा-"हे नराधिप पूज्य! आपके अनुपम रूप-सौन्दर्य को देखकर हमारे नेत्र कृतार्थ हो गये। ऐसी लावण्यश्री हमने कभी इस भूतल पर कहीं देखी तो क्या, सुनी तक नहीं।"

वृद्ध ब्राह्मणों के मुख से अपनी सुन्दरता की उन्मुक्त प्रशंसा सुनकर

चक्रवर्ती के हृदय में सौन्दर्य का दर्प जाग उठा। वे बोले-"हे विप्रदेव! यदि वास्तविक सौन्दर्य देखना हो तो वस्त्राभूषण से सुसज्जित होकर मैं जब राजसभा में आऊँ तब देखना।" "अच्छा महाराज!" कह ब्राह्मणों ने करबद्ध नमस्कार किया और महल से बाहर निकले। चक्रवर्ती भी स्नानगृह की ओर चले गये।

वे ब्राह्मणरूप दोनों देव राजसभा में उस समय आये जब महाराज सुन्दर वस्त्र व बहुमूल्य आभूषणों से अलंकृत मणि-मण्डित राजमुकुट पहिने स्वर्ण राजसिंहासन पर आसीन थे। ब्राह्मणों ने सम्पूर्ण शरीर का बारीकी से अवलोकन किया, फिर कुछ निराश स्वर में बोले-"महाराज! जो बात पहिले थी अब वह बात नहीं है। मानव का सौन्दर्य स्थायी नहीं होता, वह क्षणभंगुर है। क्षण-प्रतिक्षण यह सुन्दर काया क्षीण हो रही है और साथ ही उसकी रूपश्री भी।"

ब्राह्मणों की बात सुनकर महाराज रोष-मिश्रित भाषा में बोले-'विप्र! क्या कह रहे हो? तब से अब तक यह रूप-सौन्दर्य शतगुणित निखर आया है। देखते नहीं कि ये सुन्दरवस्त्र, बहुमूल्य अलंकार और साज-सज्जा मेरे रूप, गरिमा पर कितना आकर्षण और निखार लाये हैं।"

ब्राह्मण बोले-"क्षमा करें महाराज! पहले आपका सौन्दर्य निरावृत, खुला, स्वाभाविक या सहज रूप में था और अब वस्त्र और अलंकारों से आवृत, कृत्रिम व बनावटी बन गया है। तब वह निरभ्र प्रभातकिरण-सी सुगढ़ देह, स्वच्छ, आभायुक्त थी और अब.....।" ब्राह्मण कहते-कहते रुक गये। "और अब क्या हो गया?" चक्रवर्ती ने रोषपूर्वक पूछा।

"महाराज! अब यह शरीर रुग्ण हो चला है। अनदेखी और अनाहूत अनेक व्याधियों के अणु शरीर में प्रवेश पा चुके हैं। विश्वास न हो तो जरा थूक कर देख लीजिए।"

चक्रवर्ती ने थूका तो उसमें कुछ दुर्गन्ध-सी आयी। इससे चक्रवर्ती विचार में पड़ गये। उन्हें लगा कि सचमुच यह शरीर व्याधि-मन्दिर हो चला है और यह सौन्दर्यकान्ति क्षण-क्षण मलिन हो रही है। महाराज सिंहासन से उठकर अपने महल की ओर चले गये। साथ में विचार लेते गये कि देहयष्टि इष्ट नहीं, वह व्याधिमंडित अनिष्ट और विनाशशील है। चिन्तन करते हुए

यह विचार उनके हृदय में गहरा उतरता गया। वे देह से विरक्त हो गये। उनकी मनोवृत्ति राग से विराग की ओर, देह से विदेह की ओर, अबुद्ध से प्रबुद्ध की ओर बहने लगी। ऐसे समय ब्राह्मणों ने अपना वास्तविक देवरूप प्रकट किया और सौन्दर्य परीक्षण हेतु आगमन का कारण बताकर आकाश की ओर प्रयाण किया।

दोनों देव चले गये, पर चक्रवर्ती के हृदय में एक प्रबल सन्देश छोड़ गये कि संसार असार है, भोग रोग है, देह अशुचि गेह है। साथ ही सब चराचर नश्वर हैं। हाँ! वैराग्य और आत्मगुण, शाश्वत, स्थायी और अजर-अमर हैं। साथ ही उन्हें बोध हो गया कि उनका शरीर रोगों से आक्रान्त है, अतः शरीर से उदासीन हो आत्मा में आसीन होने का उन्हें प्रयत्न करना चाहिये।

तदनुसार वे सतखण्ड सदन को छोड़ किसी वनखण्ड के एकाकी पथिक बने। शरीर से विरक्त हो, वे आत्महित की ओर अग्रसर हुए। एकाग्र ध्यान और उग्र तपस्या के फलस्वरूप अनेक ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ हाथ जोड़कर उनकी सेवा में उपस्थित हो गयीं। किन्तु किसी भी ऋद्धि या सिद्धि से अपनी तीव्र शरीर-बाधा को मिटाने या शान्त करने का विचार तक न किया। वे तो शरीर से ऐसे निर्मोही हो गये मानो उनका अस्तित्व ही नहीं हो। इस प्रकार अनेक शारीरिक व्याधियों और वेदना से घिरे रहते हुए भी वे आत्मानन्द में गोते लगाते रहे व मस्त रहे।

इस प्रकार जटिल वेदना के बीच उग्र तपस्या की प्रसिद्धि देवलोक तक गयी और इन्द्र ने मुनि सनत्कुमार की सहनशक्ति और उग्र तपस्या की प्रशंसा की तो वे ईर्ष्यालु देव विजय और वैजयन्त पुनः परीक्षार्थ स्वर्ग से भूतल पर आये और दोनों ने सिद्ध वैद्यराज का अपना रूप बनाया।

वे दोनों मुनि सनत्कुमार के पास आये और अपने अपूर्व वैद्यक ज्ञान का गुण-गान करके उनकी बीमारी के उपचार करने की स्वीकृति की प्रार्थना की। मुनि श्री ने उनकी प्रार्थना पर कुछ ध्यान नहीं दिया। उन्होंने फिर बड़े विनम्र शब्दों में महाराज से विनती की-"महाराज! हमारी सिद्ध औषधि केवल एक बार ही लेने से आपका रोग अवश्य शान्त हो जायेगा। हमारे सरीखे कुशल वैद्य के रहते आप सरीखे तपस्वी रोग-पीड़ा सहें, यह हमारे लिए लज्जा की बात है।"

मुनिश्री बोले-"यदि आत्मा में कर्म-नाश करने की दवा जानते हों तो बताइये। शरीर की व्याधि की दवा हमें नहीं चाहिये।"

वे देव बोले- "हमारा वैद्यक शास्त्र केवल शारीरिक व्याधियों को ही शमन करता है।" इस पर मुनि ने उत्तर दिया-"देह-वेदना के मूल तो हमारे पूर्व के असाता कर्म हैं। हम मूल पर दृष्टि न करें तो वेदना एक रूप से मिटकर दूसरे रूप में हो जायेगी क्योंकि असाता कर्मों का अस्तित्व है ही। यदि वेदना का मूल या पूर्व कर्म नष्ट कर दें तो सब प्रकार की वेदना अपने आप शान्त हो जायेगी। यही स्थायी और सच्चा इलाज है। यदि तुम यह इलाज कर सकते हो तो करो नहीं तो क्षणिक इलाज की मुझे आवश्यकता नहीं है।"

दोनों देव मुनि सनत्कुमार की तितिक्षा, धीरता, ज्ञान व तपस्या की प्रशंसा करते हुए मुनि-चरणों में श्रद्धावनत हो गये। वे दोनों देव मुनि के गुणगान करते हुए देवलोक को गये और मुनिश्री की आत्मा भी कुछ समय बाद तपस्या के बल से उत्तम ऊर्ध्वलोक को प्रयाण कर गयी। किन्तु मुनिश्री की देह-निःस्पृहता, अपूर्व वैराग्य और महान् तपस्या का आदर्श संसार में अजर-अमर रहेगा। **('बोधकथा मञ्जरी' से संकलित)**

प्रश्नः-

1. विजय और वैजयन्त देव किसकी परीक्षा करने आए?
2. रूप सौन्दर्य क्षणिक है- इसे समझाइये।
3. सनत्कुमार चक्रवर्ती को क्या बोध हुआ?
4. कर्म-नाश करने की दवा बताइये।
5. विलोम शब्द लिखिए- इहलोक, क्षणभंगुर, कृत्रिम, विश्वास, अनाहूत, आगमन, असाता।
6. सु और निर् उपसर्ग के दो-दो शब्द बताइये।
7. अर्थ बताइये- तितिक्षा, वैद्यक-शास्त्र, व्याधि, देहयष्टि, करबद्ध, शतगुणित।
8. संधि-विच्छेद कीजिये- नराधिप, श्रद्धावनत, परीक्षार्थ, निर्मोही।

(बाल-स्तम्भ, मई 2010 का परिणाम पृष्ठ सं. 51 पर देखें)

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (26)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा (25) का आयोजन 'जिनवाणी' के अप्रेल-मई-जून-2010 के अंकों के आधार पर किया जा रहा हैं। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन (पचाला वाले), उपाध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, C/o मोनू ऑटो पार्ट्स, टोंक बस स्टैण्ड, बजरिया, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.) फोनं. 9460441351** के पते पर 5 अगस्त, 2010 तक मिल जाने चाहिए। युवा श्रेणि एवं सामान्य श्रेणि में श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को अलग-अलग क्रमशः 1001 रुपये, 501 रुपये एवं 251 रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। 100 रुपये के दस-दस प्रोत्साहन पुरस्कार भी दोनों श्रेणियों में दिए जायेंगे। युवा श्रेणि के पुरस्कार 15 से 45 वर्ष के उत्तरदाताओं को दिए जायेंगे। युवाश्रेणि हेतु प्रत्येक प्रतियोगी अपने नाम एवं पते के साथ उम्र का भी उल्लेख करें जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेजकर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्न क्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न/पृष्ठ संख्या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।–सम्पादक

(क) मुझे पहचानो-

01. वय बीत रही है और मैं भी बीत रहा हूँ।
02. मुझ में अरिहंत की आभा होती है।
03. मैं यदाकदा दोनों मुख से मल संचय करता हूँ।
04. मैं ज्ञान कोश को समृद्ध बनाती हूँ।
05. जीवन में मेरा अनुभव सारे भय को दूर भगाता है।
06. मुझको गिनने वाला मालामाल हो जाता है।
07. मनुष्य जीवन के साथ ही मैं भी दुर्लभ हूँ।
08. मनुष्य को सुख के साथ मेरी भी आवश्यकता है।
09. मुझसे सुख की अपेक्षा ही तनाव का मूल है।
10. सुख भोग की रुचि एवं प्रवृत्ति मेरा कारण है।

(ख)एक शब्द में उत्तर दीजिए-

11. सर्वत्रव्यापी ज्ञान कौनसा है?
12. यह तो मात्र किराए का मकान है।
13. किसे समाप्त करने पर हमारा घर ही मंदिर बन जाएगा?
14. देवों के जन्म को क्या कहा जाता है?
15. किस सुख के लिए धन का व्यय नहीं करना पड़ता?
16. मुक्ति मार्ग का मूल आधार कौन सा भाव है?
17. आचार्य श्री हस्ती छात्रवृत्ति में देने वाले कौन हैं?
18. वे अच्छाई और बुराई दोनों के समर्थन में उत्पन्न हो जाते हैं।
19. जिसकी धारणा गलत होती है,वह क्या कहलाता है?
20. वीतराग की वाणी को सच्ची कौन मानता है?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

21. बड़े-बड़े सन्त भी.........के जाल में फंस जाते हैं।
22. समर्पण के साथ..........का द्वन्द्व नहीं होगा।
23. ....में बालक में समस्त मानवीय सद्गुणों के अंकुर विद्यमान् रहते हैं।
24. गुरु चरणों में.........की अभिव्यक्ति।
25. बहना..........है।
26. जीवन का प्रयोजन, प्रयोजन युक्त..........है।
27. ....वह पथ है, जो पूर्ण वीतरागता तक ले जाता है।
28. वास्तव में जीवन शिक्षाकाल है और मरण.......काल।
29. ....साधना करते एकान्त में, किन्तु सिद्धांत अनेकान्त का दिया।
30. दोष दूर करने हेतु दृढ़ निश्चय का नाम है.......... ।

(ङ) अंकों में उत्तर दीजिये।

31. ज्ञानियों ने अहंकार के कितने रूप बतलाए हैं?
32. अमेरिका में कितने करोड़ लोग स्वाभाविक नींद नहीं सो सकते?
33. देश में अनुमानतः कितनी हजार गौशालाएँ चल रही हैं?
34. जीवन को आदर्श एवं उत्सव बनाने वाले कितने मूल्य हैं?

35. इस वर्ष चातुर्मास अवधि कितने दिन की है?

36. ईसाई धर्म में अब कितने प्रकार के कार्य पाप की श्रेणि में गिने जाते हैं?

37. महावीर जैन स्वाध्यायमाला, इंदौर निरन्तर कितने वर्षों से गतिशील है?

38. आकाश-प्रासाद बनाने हेतु बीरबल ने कितने तोते खरीदे?

39. आचार्य श्री एवं उपाध्याय श्री का कितने वर्षों पश्चात् पुनर्मिलन हुआ?

40. सर्वार्थसिद्ध विमान से सिद्धशिला की दूरी कितने योजन है?

(च) सही/गलत में उत्तर दीजिए।

41. धर्म को स्वीकार करने की अपेक्षा युवा पीढ़ी पारंपरिक है।

42. मनुष्य को मलमक्खी की तरह न बनकर मधुमक्खी की तरह बनना चाहिए।

43. केवलि समुद्घात करने वाले सभी केवलि भगवंत छः माह के भीतर-भीतर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।

44. साध्वियाँ आहारक शरीर नहीं बना सकती हैं।

45. नमस्कार मंत्र के पाँचों पद गुणपूजक नहीं, व्यक्ति पूजक हैं।

46. मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तो कर सकता है, लेकिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता।

47. जहाँ मान होता है, वहाँ क्रोध अवश्य पाया जाता है।

48. यह संसार दुःखों की झाड़ी, उलझ-उलझ मरि जाना रे।

49. सुख पारलौकिक एवं पदार्थ पर आधारित होता है।

50. अभिन्नाक्षरी चौदहपूर्वी आहारक शरीर नहीं बनाते हैं।

पाठक- अभिमत

It gives me immense pleasure to read yet another issue of 'Jinvani'.

I have been reading it since last one and half year continuously. Needless to say, every word of 'Jinvani' is based on the tenets of Jainism. Articles of various distinguished authors are rich in content and form.

-Akshay Jain, Swami keshvanand Instt. of Technology, Jagatpura, Jaipur-302005

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (7)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह सातवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अगस्त 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 351 से 400 तक से प्रश्न)

(अ) मुझे पहचानो मैं कौन हूँ? -

1. चक्रव्यूह की नाभि में इस भीषण युद्ध का संचालन मैंने संभाला।
2. मैंने तलवार के एक ही प्रहार से यवनकुमार का सिर काट गिराया।
3. मृत बालकों को जन्म देने वाली मेरी ही तो भक्त है।
4. मैंने ढंढण कुमार को जन्म दिया।
5. मैंने हाथी से नीचे उतर कर ढंढण ऋषि को नमस्कार किया।

(आ) किसने किसको कहा? -

6. अंगीकृत व्रत से गिरने की अपेक्षा तो तुम्हारा मरना श्रेष्ठ है?
7. अभी तू भी उनके पीछे-पीछे ही जाने वाला है।
8. सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, शान्ति एवं मुक्ति के मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ते रहो।
9. क्या मेरा अन्तराय कर्म क्षीण हो गया है, जिससे आज मुझे भिक्षा मिली?

10. जरा मेरे चक्र को मेरी ओर चलाकर तो देख।

(इ) 'हाँ' या 'ना' में उत्तर दीजिए-

11. नारी वास्तव में भव-भ्रमण के घोर दुःख-सागर से तिराने वाली है।
12. समुद्रविजय आदि ने श्रावण शुक्ला 6 को विवाह का मुहूर्त्त निश्चित किया।
13. नेमिनाथ भगवान् ने 1000 पुरुषों के साथ प्रव्रज्या ग्रहण की।
14. क्या मुझे कुत्ता समझ रखा है जो इस गर्म किये हुए दूध को पीने के लिए कह रही हो?
15. मुझे प्रसन्नता है कि आखिर मुझे अपने पुत्रों को देखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।

(ई) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

16. जन्मजात.....के परिवर्तन की बात......को भगवान अरिष्टनेमि से ज्ञात हुई।
17. इसी तरह......की नीति भी.......का हनन करने वाली व.......हैं।
18. ....की इस प्रक्रिया में उनके चारों..........नष्ट हो गये।
19. ....द्वारा..........को भोगमार्ग की ओर मोड़ने का यत्न।
20. तुम अचानक ही इस.........से..........मोड़कर कहाँ जा रहे हो?

(उ) बिछड़ी हुई जोड़ी मिलाइए-

21. ढंढण	पाँचजन्य शंख
22. नेमिनाथ	पारासर
23. दमीश्वर	रथनेमि
24. राजीमति	दाहिनी आंख व भुजा
25. श्री कृष्ण	अरिष्टनेमि

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (5) का परिणाम

प्रथम पुरस्कार- श्री हेमराज जी सुराना-जयपुर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती सीमा जी धींग-उदयपुर (राज.)

तृतीय पुरस्कार-श्रीमती चेतना बी. बोथरा-मलाड़ (W), मुम्बई (महा.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्रीमती साधना दिलीप जी गुगल-इचलकरंजी (महा.)
2. श्रीमती लीलाबाई ए. कोठारी-अहमदनगर (महा.)
3. कनक जी जैन-दिल्ली
4. उगमा डोसी-सिंकदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
5. श्रीमती लाड्बाई हीरावत-मुम्बई

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

णमोक्कार-अणुप्पेहा- (नमस्कार मन्त्र पर अनुप्रेक्षा)- आचार्यश्री उमेश मुनि जी म. 'अणु', ***प्रकाशक***- पूज्य श्री नन्दाचार्य साहित्य समिति, मेघनगर, जिला-झाबुआ (म.प्र.)-457779 ***पृष्ठ***- 27+178, ***मूल्य*** 10 रुपये, ***तृतीय संस्करण*** - 2010

नमस्कार मन्त्र की अनुप्रेक्षा साधना में कितनी उपयोगी है, इसका बोध 'णमोक्कार-अणुप्पेहा' पुस्तक से सहज ही होता है। आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु' द्वारा प्राकृत भाषा में 103 गाथाओं में रचित इस पुस्तक का हिन्दी में हृदयग्राही सुन्दर विवेचन हुआ है। भूमिका रूप में लिखित 'अनुप्रेक्षा पर अनुप्रेक्षा' भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिसमें अनुप्रेक्षा के स्वरूप पर विशेष चिन्तन प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में आगे नमस्कार मन्त्र-अनुप्रेक्षा को आराधना एवं साधना के उत्कृष्ट अंग के रूप में प्रतिपादित किया गया है। नमस्कार मन्त्र की महत्ता एवं साधना में उपयोगिता पर यह विशिष्ट पुस्तक है जो सबके द्वारा पठनीय है।

दशवैकालिक सूत्र (हिन्दी भावार्थ)- आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2575997, फेक्स-0141-2570753, ***पृष्ठ***-16+158 , ***मूल्य***-20 रुपये, ***प्रथम संस्करण***- 2010

दशवैकालिक सूत्र एक प्रमुख आगम है, जो श्रमणाचार एवं साधनामय जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा इस आगम का जो हिन्दी विवेचन प्रस्तुत किया गया था, मात्र उसी का संकलन प्रस्तुत पुस्तक में हुआ है। जो पाठक दशवैकालिक सूत्र की विषय वस्तु का बोध करना चाहते हैं, उनके लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2067, ईस्वी सन् 2010)

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा वि.सं. 2067 सन् 2010 हेतु साधु मर्यादानुसार घोषित चातुर्मासों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः-

(1) पाली-मारवाड़ (राज.)

- 卐 **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**
- 卐 **महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.**
- 卐 **सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.**
- 卐 **तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. ठाणा 9**

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.) फोन-02932-250021

सम्पर्क सूत्र-

1. श्रीमान ताराचन्दजी सिंघवी, 7-गाँधी कटला, पाली- 306401, फोन-02932-222005
2. श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, बी-60, केशर कुंज, वीर दुर्गादास नगर, पाली-306401, फोन-02932-220603/94141-22304

आवागमन के साधन- पाली जिला मुख्यालय है। जयपुर, जोधपुर, अजमेर, कोटा, अहमदाबाद, सूरत आदि स्थानों से सीधी बस सेवाएँ उपलब्ध हैं। जोधपुर अहमदाबाद रेलवे ट्रेक पर स्थित पाली रेलवे स्टेशन पर सभी गाड़ियों का ठहराव है। चातुर्मास स्थल शहर के मुख्य बाजार सुराणा मार्केट में है। टेक्सी द्वारा आने वाले सीधे स्थानक पहुँच सकते हैं। परन्तु निजी वाहन लेकर आने वाले पुराने बस स्टेण्ड से [illegible] होकर पुलिस चौक, जूनी कचहरी के रास्ते से सामायिक-स्वाध्याय भवन पहुँच सकते हैं। जहाँ पार्किंग की सुविधा है। सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराना मार्केट रेलवे [illegible]

किमी. दूरी पर स्थित है।

(2) गोटन (जिला-नागौर) राज.

- 卐 परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.
- 卐 मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी, गोटन-342902 (जिला-नागौर) राज.

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री भैरूलालजी ओस्तवाल, रसाली स्टोर, पो.-गोटन-342903 (जिला-नागौर) राज., फोन-01591-230135/94141-18701/94144-84911
2. श्री चैनरूपचन्दजी बाफना, स्टेशन रोड़, पो.-गोटन-342902 (जिला-नागौर) राज., फोन-94131-69889

आवागमन के साधन- जोधपुर-जयपुर मुख्य रेल मार्ग पर गोटन रेलवे स्टेशन पर अधिकतर गाड़ियों का ठहराव है। जोधपुर, नागौर, मेड़ता, कुचेरा, भोपालगढ़, पीपाड़सिटी, बिलाड़ा से गोटन के लिए बसें उपलब्ध हैं। गोटन रेलवे स्टेशन से स्थानक पधारने वाले श्रद्धालु महावीर कॉलोनी तक पैदल भी पहुँच सकते हैं। रेलवे स्टेशन के ट्रेक के पिछवाड़े में कॉलोनी 100 मीटर की दूरी पर स्थित है।

(3) घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

- 卐 साध्वीप्रमुखा शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री शशिकलाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री समताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोन 0291-2641445/2636763, भोजनशाला-2633613

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना, 1-नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर-342003, फोन-0291-2622327 (नि.), 2570178 (का.) मो. 9413329762
2. श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल, 3-अ-15, नन्दनवन, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008, फोन-0291-2626421 (का.) 2752921 (नि.), मो. 9414132521

आवागमन के साधन- जोधपुर राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है जो रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से देशभर से जुड़ा हुआ है। जोधपुर रेलवे स्टेशन से घोड़ों के चौक डेढ़ किमी. व राईका बाग बस स्टेण्ड से 3 किमी. दूर है।

(4) गुलाबपुरा (जिला-भीलवाड़ा) (राज.)

- 卐 **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवरजी म.सा.**
- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री कौशल्याजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 4**

चातुर्मास स्थल-श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, मेन बाजार, पोस्ट-गुलाबपुरा-311021 (जि.-भीलवाड़ा) राज.

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री भीमसिंहजी संचेती, सदर बाजार, पोस्ट-गुलाबपुरा-311021, जिला-भीलवाड़ा (राज.), फोन (01483) 223167 (का.) 223005 (नि.), मो. 9414113651
2. श्री सुमेरचन्दजी छाजेड़, राजस्थान गेस्ट हाऊस, बस स्टेण्ड के पास, पोस्ट-गुलाबपुरा-311021 जिला-भीलवाड़ा (राज.), फोन (01483) 223207 (नि.) 94601-04297

आवागमन के साधन- भीलवाड़ा जिलान्तर्गत गुलाबपुरा अजमेर-खण्डवा रेल मार्ग पर स्थित है। गुलाबपुरा के लिए अजमेर-भीलवाड़ा मार्ग पर संचालित बसों का नियमित आवागमन है। बस स्टेण्ड से स्थानक की दूरी लगभग 100 कदम की है।

(5) चाँगोटोला (जिला-बालाघाट) म.प्र.

- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.**
- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.**

卐 महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.

卐 महासती श्री मंजूलताजी म.सा.

卐 महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.

卐 नवदीक्षिता महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा. ठाणा 9

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, पोस्ट-चाँगोटोला-481554 (जिला-बालाघाट)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री विनोदजी बोथरा, पोस्ट-चाँगोटोला-481554(जिला-बालाघाट)म.प्र., फोन-9165379744/ 9425138532
2. श्री निलेशजी चोरड़िया, पोस्ट-चाँगोटोला-481554 (जिला-बालाघाट) म.प्र., फोन-9407314581

आवागमन के साधन- चाँगोटोला पहुँचने हेतु रेल एवं बस सुविधा उपलब्ध है। गोंदिया से बालाघाट ट्रेन में जाकर यहाँ से छोटी लाइन की गाड़ी से चाँगोटोला पहुँचा जा सकता है। जबलपुर से छोटी लाइन की गाड़ी से भी चाँगोटोला पहुँचा जा सकता है। नागपुर से सड़क मार्ग द्वारा बालाघाट होते हुए चाँगोटोला की दूरी 225 किमी. लगभग है। जबलपुर से सड़क मार्ग द्वारा मण्डला होते हुए चाँगोटोला की दूरी 180 किमी. के लगभग है।

(6) सरस्वती नगर-जोधपुर (राज.)

卐 तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा.

卐 महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री उषाजी म.सा.

卐 महासती श्री निरंजनाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- ए-74-75, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर-342005 (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री अमरचन्दजी सदावत मेहता,करणी 333-सेक्टर-ए, सरस्वती नगर, जोधपुर-342005, फोन (0291) 2722136/2742138
2. श्री पारसमलजी ओस्तवाल, डी-261, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर-342005, फोन (0291) 2742358 (का.) 2721391 (नि.), मो. 94141-98815

आवागमन के साधन-जोधपुर राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है जो रेल, सड़क

एवं हवाईमार्ग से देशभर से जुड़ा हुआ है। जोधपुर रेलवे स्टेशन से सरस्वती नगर 10 किमी. दूर है।

(7) गाँधीनगर-अहमदाबाद (गुज.)

- 卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री रक्षिताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास स्थल-श्री गाँधी नगर स्थानकवासी जैन संघ, प्लॉट नं.-533, गुरूकुल के सामने, सेक्टर-22, गाँधीनगर, (गुज.) फोन (079) 23244866

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री रमेशभाई गांधी, प्लॉट नं.-677, सेक्टर नं.-7-बी, गाँधीनगर-382007, फोन-(079) 23250606 (का.) 23223164 (नि.), मो. 99241-23164
3. श्री किशोरजी छाजेड़, कल्पतरू पावर ट्रान्समिशन लिमि. 101-पार्ट तृतीय, जी.आई.डी.सी., सेक्टर-28, गाँधीनगर-382007 (गुज.), फोन-(079) 23214125 (का.) 23239479 (नि.) मो. 98244-09032

आवागमन के साधन- जयपुर, जोधपुर, दिल्ली, मुम्बई, सूरत से अहमदाबाद हेतु रेल सुविधा उपलब्ध है। अहमदाबाद स्टेशन पर उतरकर बस एवं टेक्सी द्वारा गाँधीनगर स्थानक पहुँचा जा सकता है। अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से गाँधीनगर स्थानक की दूरी लगभग 35 किमी. है। रेलवे स्टेशन से गाँधीनगर हेतु नियमित रोड़वेज बस व टेक्सी की सुविधाएँ हैं।

(8) सवाईमाधोपुर (राज.)

- 卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री शारदाजी म.सा.

卐 महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा.

卐 नवदीक्षित महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- महावीर भवन, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री सुबाहुकुमारजी जैन, मै. बजरंगलाल सुबाहुकुमार जैन सर्राफ, सर्राफा बाजार, सवाईमाधोपुर-322021(राज.), फोन-(07462)233451/233461/94139-24700
2. श्री बाबूलालजी जैन समिधि वाले, कुमावत मन्दिर के पीछे, शांडिल्य सदन के पास, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.), फोन-(07462) 234249

आवागमन के साधन - सवाईमाधोपुर दिल्ली-मुम्बई रेलवे ट्रेक का मध्य स्टेशन-है। जयपुर से चेन्नई, बेंगलुरू, मैसूर, जबलपुर, मुम्बई जाने वाली सभी गाड़ियाँ सवाईमाधोपुर जंक्शन से होकर गुजरती हैं। जयपुर, टोंक, बून्दी, अजमेर, बारां आदि से सीधी बस सुविधा उपलब्ध है। रेलवे स्टेशन से सिटी बस द्वारा 6 किमी. दूरी पर शहर में चातुर्मास स्थल तक पहुँचा जा सकता है।

(9) सोजत रोड़ (जिला-पाली) राज.

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.

卐 महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक बगड़ी रोड़, सोजत रोड़-306103 (जिला-पाली)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री कुशलचन्दजी गुन्देचा, मै. बादरमल नथमल गुन्देचा, मेन बाजार, पोस्ट-सोजत रोड़-326103 (जिला-पाली) राज., फोन-(02960) 230050 (का.) 231207 (नि.), मो. 94138-77444
2. श्री गौतमचन्दजी जैन, मै. गौतम ट्रेडर्स, मालियों का बास, पोस्ट-सोजत रोड़-326103 (जिला-पाली) राज., फोन-(02960) 230125, मो. 98280-93819

आवागमन के साधन- पाली जिलान्तर्गत सोजत रोड़ दिल्ली-अहमदाबाद मुख्य रेल

मार्ग पर रेलवे स्टेशन है। रोड़वेज व प्राईवेट बसों का सभी क्षेत्रों से आवागमन रहता है। पाली-जयपुर सड़क मार्ग पर सोजत सिटी कस्बा स्थित है। जहाँ से 13 किमी. दूरी पर सोजत रोड़ है। सोजत सिटी से सोजत रोड़ के लिए बस, टेम्पो, टेक्सी की सेवाएँ उपलब्ध हैं।

(10) नागौर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.
- 卐 महासती मुदितप्रभाजी म.सा
- 卐 महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.
- 卐 नवदीक्षित महासती श्री तितिक्षाश्रीजी म.सा.
- 卐 नवदीक्षित महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, बोड़ों की पोल, नागौर-341001

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री भंवरलालजी कांकरिया, गणेश चौक, नागौर-341001 (राज.), फोन-(01582)242643/94142-16594
2. श्री प्रकाशचन्दजी सुराणा, गुजरातियों की पोल, नागौर-341001, फोन-97724-37742

आवागमन के साधन- जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, मुम्बई, दिल्ली, हैदराबाद से नागौर हेतु सीधी रेल सुविधा उपलब्ध है एवं मुख्य शहरों से बस सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। बीकानेर जाने वाली सभी ट्रेन नागौर स्टेशन होकर गुजरती है। रेलवे स्टेशन से डेढ़ किमी. एवं बस स्टेण्ड से 2 किमी. सामायिक-स्वाध्याय भवन है।

(11) मेड़तासिटी (जिला-नागौर) राज.

- 卐 सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा.
- 卐 महासती श्री रुचिताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.
- 卐 नवदीक्षिता महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- स्वाध्याय भवन, श्रीमालों का मौहल्ला, मेड़तासिटी-341510 (जिला-नागौर) (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री हस्तीमलजी डोसी, डी-3, कृषि मण्डी, मेड़तासिटी-341510 (जिला-नागौर), फोन-(01591) 220181 (का.) 230544 (नि.) मो. 94133-68997/94141-19152

2. श्री विमलकुमारजी बागमार, फोन- (01591) 221187 (का.) 221186 (नि.), मो.-94137-59647

आवागमन के साधन- नागौर जिलान्तर्गत मेड़तासिटी के लिए समीपवर्ती रेलवे स्टेशन मेड़ता रोड़ जंक्शन है। जहां जोधपुर, दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, जयपुर की रेलगाड़ियों का ठहराव है। मेड़ता रोड़ से मेड़तासिटी के लिए रेलबस प्रायः हर गाड़ी का मिलान करवाती है। अजमेर, जोधपुर मुख्य मार्ग पर स्थित मेड़ता सिटी के लिए नियमित अन्तराल पर बसें उपलब्ध है। बस व रेलवे स्टेशन से स्थानक करीब एक किमी. दूर है तथा स्थानक पहुंचने के लिए टेक्सियां उपलब्ध हैं।

(12) मैसूर (कर्नाटक)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा
- 卐 महासती श्री भावनाजी म.सा.
- 卐 नवदीक्षित महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा
- 卐 नवदीक्षित महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास स्थल- श्री एस. एस. स्थानकवासी जैन संघ, 2889-तीसरा क्रोस, बस स्टेण्ड के पीछे, महावीर नगर, मैसूर-570001 (कर्ना.) फोन- (0821) 2525233/4266446

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री महावीरचन्दजी सांखला, महावीर ज्वैलर्स, त्यागराजा रोड, अगरार, मैसूर (कर्नाटक), फोन-(0821) 2525119 (का.) मो. 93423-42444
2. श्री सुभाषजी धोका, सुनील ज्वैलर्स, 905/171, सार्वजनिक हॉस्टल रोड़, विद्यापुरम, मैसूर-570001 (कर्ना.), फोन-(0821) 2525697 (का.) 2484423 (नि.), मो. 94485-39647

आवागमन के साधन - जयपुर, जोधपुर, अजमेर, दिल्ली, मुम्बई, हुबली, चेन्नई से मैसूर के लिए सीधी ट्रेन सुविधा उपलब्ध है। बेंगलुरू से मैसूर 140 किमी. है। वहाँ से मैसूर हेतु नियमित बस एवं ट्रेन सुविधाएँ उपलब्ध हैं। रेलवे स्टेशन से स्थानक की दूरी 1 किमी. व बस-स्टेण्ड से 50 कदम है।

(13) के.जी.एफ. (कर्नाटक)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.

卐 महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा.

卐 नवदीक्षित महासती श्री भविताश्रीजी म.सा.

卐 नवदीक्षित महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- श्री एस.एस. जैन संघ, जे.टी. पेट्रोल पम्प के सामने, स्टेशन रोड़, रार्बटसन पेट, के.जी.एफ.-563122 (जिला-कोल्लार) कर्नाटक

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री जे. इन्दरचन्दजी बोहरा, प्रथम क्रोस रोड़, रार्बटसनपेट, के.जी.एफ..-563122 (जिला-कोल्लार) कर्नाटक ,फोन-(08153) 260178 (का.) 262122 (नि.), मो. 94496-58501
2. श्री दलीचन्दजी नाहटा, हैप्पी सिल्वर पैलेस, एम.जी. मार्केट, फ्रन्ट रॉ, रार्बटसनपेट, के.जी.एफ..-563122 (जिला-कोल्लार), फोन-(08153) 260496 (का.) 260096 (नि.), मो. 94496-35878

आवागमन के साधन- बेंगलुरू से बस एवं ट्रेन द्वारा 100 किमी. दूरी पर बंगारपेट जंक्शन है। यहाँ से के.जी.एफ.13 किमी. दूरी पर स्थित है। बंगारपेट स्टेशन पर उतरकर बस या टेक्सी द्वारा के.जी.एफ. पहुँचा जा सकता है। बेंगलुरू से चेन्नई जाने वाली ट्रेन के मध्य में बंगारपेट स्टेशन आता है।

(14) नीमच (मध्यप्रदेश)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.

卐 महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.

卐 नवदीक्षित महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, चौधरी मौहल्ला, नीमचसिटी-458441 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री शम्भूसिंहजी कांठेड़, जैन मन्दिर के पास, चौधरी मौहल्ला, नीमचसिटी-458441(म.प्र.), फोन (07423) 232240(नि.) 9407159339
2. श्री उमरावसिंहजी राठौड़, चौधरी मौहल्ला, नीमचसिटी-458441 (म.प्र.), फोन (07423) 233132/232132

आवागमन के साधन- अजमेर, कोटा, दिल्ली, नसीराबाद, चित्तौड़गढ़ से नीमच हेतु

बस एवं ट्रेन सुविधा उपलब्ध है। दिल्ली-मुम्बई रेलवे ट्रेक पर रतलाम स्टेशन उतरकर नीमच के लिए ट्रेन व बस सुविधा उपलब्ध है। नीमच केन्ट बस स्टेण्ड से डेढ़ किमी. तथा रेलवे स्टेशन से स्थानक की दूरी 3 किमी. है। यहाँ से टेक्सी-टेम्पो की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

(15) पीपाड़शहर-342601 (जिला-जोधपुर)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.

卐 नवदीक्षित महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन, काला भाटा, पीपाड़शहर-342601 (जिला-जोधपुर)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री छगनलालजी मूथा, इलाजी बाजार, पीपाड़शहर-342601 (जिला-जोधपुर) राज., फोन (2930) 233045
2. श्री सुमतिचन्दजी मेहता, सदर बाजार, पीपाड़शहर-342601 (जिला-जोधपुर) राज., फोन 02930-233069 (का.) 233842 (नि.), मो. 9414462729

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत पीपाड़शहर जोधपुर, मेड़तासिटी, अजमेर, जयपुर, बिलाड़ा, पाली, ब्यावर जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से पीपाड़शहर के लिए हर आधे घंटे के अन्तराल पर रोड़वेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती हैं।

(16) भोपालगढ़ (जिला-जोधपुर)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री देवांगनाजी म.सा.

卐 महासती श्री अंजनाजी म.सा.

卐 महासती श्री सुभद्राजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, सदर बाजार, पो. भोपालगढ़-342603

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री शिम्भूलालजी चोरड़िया, महादेव मार्केट, पो.-भोपालगढ़-342603 (जिला-जोधपुर) राज., फोन (02920) 222614/94146-72678
2. श्री नेमीचन्दजी कर्नावट, जैन स्थानक के पास, पो.-भोपालगढ़-342603 (जिला-जोधपुर) राज., फोन (02920) 222614 (नि.) 94130-62049

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत भोपालगढ़ जोधपुर, गोटन, पाली जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से भोपालगढ़ के लिए हर आधे घंटे के अन्तराल पर रोड़वेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती हैं।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास पांढरकवाड़ा (जिला-यवतमाल), महा. घोषित कर दिया था, किन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से विहार की स्थिति नहीं होने पर पांढरकवाड़ा श्रीसंघ की रजामंदी लेकर संघनायक पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने सकारण चातुर्मास अमरावती (महा.) स्वीकार किया है।

(17) अमरावती (महा.)

卐 सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- स्वाध्याय भवन, पन्नालाल बगीचे के पीछे (शारदा भवन) अमरावती-444601 (महा.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री ताराचन्दजी बोकड़िया, मुधोलकर पेठ, अमरावती-444601 (महा.), फोन (0721) 2575629 मो. 96670-43523,
2. श्री जयचन्दजी मरलेचा, महात्मा आयुर्वेद भण्डार, दुकान नं.-55, एम.एन.पी. कॉम्पलेक्स, अमरावती-444601 (महा.), फोन (0721) 2577473 (का.) 2572134 (नि.), मो. 94226-19230

आवागमन के साधन- हैदराबाद, जोधपुर, अहमदाबाद, सूरत, चेन्नई, मुम्बई, पूना, दिल्ली, नागपुर से सीधी रेल सेवा बडनेरा स्टेशन हेतु उपलब्ध है। बडनेरा स्टेशन से अमरावती 10 किमी. है। इन्दौर, भोपाल, जबलपुर, हैदराबाद एवं महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों से अमरावती हेतु सीधी बस सुविधा भी उपलब्ध है। बडनेरा रेलवे स्टेशन से स्थानक 8 किमी. एवं अमरावती बस स्टेण्ड से 3 किमी. है।

25 जुलाई से चातुर्मास उपस्थित हो रहा है। इसमें अधिकाधिक साधना करें। यह आत्म-विकारों को दूर करने का सार्थक निमित्त बने। सन्त-सतियों का लाभ मिले तो अत्युत्तम, अन्यथा सामायिक और स्वाध्याय को अवश्य जीवन का अंग बनाएँ। *-सुमेरसिंह बोथरा, संघाध्यक्ष*

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा क्रियान्वित

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक,इतिहास मार्तण्ड, युग प्रवर्तक, युगमनीषी, आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष 2011 को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई। इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है।

इस योजना के माध्यम से गत चार वर्षो से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही हैं। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार हैं-

नियमावली

- 卐 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।
- 卐 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।
- 卐 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।
- 卐 आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा।
- 卐 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

- 卐 चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगें। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।
- 卐 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकुलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए। **आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-** B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.-044-42728476,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.com

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है। आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है। आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन पत्र Download कर सकते हैं।

समाचार-विविधा

आचार्य श्री का रत्नसंघ के पट्टनगर जोधपुर में पदार्पण

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा धर्मनगरी बालोतरा से 26 मई को विहार कर महावीर कॉलोनी पधारे। यहाँ से श्रद्धाशील सुश्रावक श्री गौतमचन्द जी सालेचा के बंगले होते हुए 2 जून को राजाराम छात्रवास पधारे। ठाणा 9 के इस विहार क्रम में बालोतरा नगर एवं अनेक उपनगरों के श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति एवं जय गुरु हस्ती, जय गुरु हीरा, जय गुरु मान के जयनाद से श्रद्धा एवं भक्ति का मानो सागर उमड़ पड़ा। राजाराम छात्रावास के विशाल प्रांगण में जैन एवं जैनेतर जनसमुदाय की उपस्थिति संतों के माहात्म्य का बखान कर रही थी। छात्रावास के संरक्षक एवं पूर्व गृह राज्यमंत्री राजस्थान सरकार श्री अमराराम जी चौधरी भी आचार्यप्रवर एवं संतवृन्द के दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

यह एक विशिष्ट दिवस था। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का यह 20वाँ आचार्य पदारोहण दिवस था। ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, 2 जून को आचार्यप्रवर के 19 वर्षीय सफल संघनायकत्व का समर्थन विशाल जन-समुदाय अपने उल्लास एवं उमंग की मनोभावना से अभिव्यक्त कर रहा था। प्रातः 8.30 बजे कर्मठ कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर का परिचय देते हुए 20वें आचार्यपद चादर समारोह के प्रसंग से अवगत कराया। पूज्य आचार्यप्रवर ने 'अरिहन्त जय-जय' मंगलाचरण प्रारम्भ किया जिसका समवेत स्वर में श्रद्धालुओं द्वारा उच्चारण किया गया।

पूर्व गृहराज्यमंत्री श्री अमराराम जी चौधरी ने इस अवसर पर कहा कि हम आचार्यप्रवर के अनुगृहीत हैं कि वे इस छात्रावास परिसर में पधारे एवं उन्होंने यहाँ की भूमि को पावन किया। पूज्य आचार्य भगवन्त ने अपनी अमोघ वाणी का वर्षण करते हुए शिक्षा की महत्ता पर प्रवचन फरमाया तथा इस बात पर बल दिया कि आज बालक-बालिकाओं में धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों की महती आवश्यकता है। आचार्यप्रवर ने धार्मिक पाठशालाओं के नियमित संचालन को भी अपने

प्रवचन में रेखांकित किया।

यहाँ से 3 जून को विद्यालय भवन-जानियाना, 4 जून को कनाना स्थानक तथा 5 जून को जेठन्तरी होते हुए आचार्यप्रवर आदि ठाणा 6 जून को समदड़ी पधारे। यहाँ जैन घरों की बस्ती है अतः 9 जून तक यहाँ धर्मजागरणा करने के अनन्तर 10 जून को राणी देशीपुरा पधारे। यहाँ से 11 जून को अजीत, 12 जून को मियों का बाड़ा होते हुए 13 से 15 जून तक दुन्दाड़ा बिराजे। यहाँ से हनुमान जी की ढाणी, फींच, भाण्डु होते हुए 19 जून को नारनाडी पधारे। यहाँ भीषण गर्मी के कारण रात्रि में श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. की तबियत बिगड़ने से उन्हें जोधपुर के मणिधारी अस्पताल में उपचारार्थ ले जाया गया। 20 जून को आचार्यप्रवर बोरानाडा, 21 को पालगांव, 22 को जोधपुर के दिग्विजयनगर होते हुए 23 जून को श्री श्रीचन्द जी मेहता के अशोक भवन, जलजोग चौराहा पधारे जहाँ पर उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 पहले से विराज रहे थे। मणिधारी अस्पताल यहाँ से एकदम निकट था अतः देखभाल की दृष्टि से यह स्थान उपयुक्त समझा गया। जोधपुर में लगभग 13 वर्ष पश्चात् आगमन पर सबको बड़ा हर्ष था। श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का दर्शनों के लिए निरन्तर तांता बना रहा। श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनि जी के स्वास्थ्य लाभ के अनन्तर आचार्यप्रवर ने 29 जून को यहाँ से विहार कर सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक पदार्पण किया। विहार में श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति एवं जय-जयकारों की गगनगुंजी ध्वनियों से सर्वत्र यह संदेश प्रसरित हो गया कि आचार्यप्रवर का रत्नसंघ के पट्टनगर जोधपुर में तथा प्रमुख स्थल घोड़ों का चौक में पदार्पण हो गया है।

यहाँ साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. दीर्घकाल से आपके दर्शनों की उत्सुक थीं। अतः प्रवचन के समय आचार्यप्रवर एवं शासनप्रभाविका जी में परस्पर संवादात्मक भावाभिव्यक्ति हुई। शासनप्रभाविका जी ने लगभग 13 वर्ष पश्चात् आचार्यप्रवर के दर्शनों का लाभ लिया। यहाँ आचार्यप्रवर तीन दिन विराजे और तीनों दिन सामायिक-स्वाध्याय भवन का सभागार श्रद्धालु श्रोताओं से खचाखच भरा रहा। आचार्यप्रवर ने तीनों दिन प्रवचन की अमृत-वर्षा की। 1 जुलाई को आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर के लगभग सभी केन्द्रों के बालक-बालिकाओं ने आचार्यप्रवर के दर्शनों का लाभ लिया तथा

उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया। यहाँ श्री जैन रत्न बालिका मण्डल के शुभारम्भ की भूमिका बनी। 2 जुलाई की प्रातः घोड़ों का चौक से विहार कर आचार्यप्रवर जैन स्कूल, महामन्दिर पधारे।

उपाध्यायप्रवर का जोधपुर पदार्पण एवं गोटन की ओर विहार

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 का 30 मई 2010 को जैन स्थानक बालोतरा से हनुमान जी की बगीची के लिए विहार हुआ। वहाँ से 31 मई को जांगड़ा, 1 जून को कनाना, 2 जून को जेठन्तरी, 3 जून को सिल्लोर, 4 जून को समदड़ी, 5 जून को राणी देशीपुरा होते हुए 6 जून को अजीत पदार्पण हुआ। यहाँ दो दिन विराजने के पश्चात् आपश्री दुन्दाड़ा पधारे। यहाँ से भाखरना, सतलाना, सर होते हुए 12 जून को सालावास पधारे। यहाँ से विहार कर 15 जून को जोधपुर के सरस्वती नगर पधारे। उपाध्याप्रवर एवं संतप्रवरों का विहार भीषण गर्मी में हुआ। 16 जून को गुलाबनगर पधारे तथा 17 जून को चौपासनी हाउसिंग बोर्ड के स्थानक में विराजे। यहाँ जोधपुरवासियों को धर्माराधन का अच्छा लाभ मिला। 20 जून को प्रातः यह ज्ञात हुआ कि श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज को अस्वस्थ होने से उपचार हेतु मणिधारी अस्पताल लाया गया है तो उपाध्यायप्रवर संत-मण्डली सहित अस्पताल के निकट ही जलजोग चौराहे पर स्थित श्री श्रीचन्द जी मेहता के अशोक भवन पधारे। यहाँ विराजते हुए प्रतिदिन व्याख्यान सरदारपुरा के महावीर भवन में हुआ। आचार्यप्रवर के यहाँ पदार्पण के पश्चात् 24 जून को आपका सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक पदार्पण हुआ। यहाँ साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. एवं महासती मण्डल को दर्शनों का लाभ मिला। 23 जून से 27 जून को स्वाध्याय संघ द्वारा आयोजित स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर में स्वाध्यायियों को मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. का तात्त्विक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

27 जून को उपाध्यायप्रवर का गोटन के लक्ष्य से लक्ष्मीनगर पदार्पण हुआ। बनाड़, डांगियावास, होते हुए आपका विहार पीपाड़ की ओर चल रहा है। चातुर्मासार्थ गोटन की ओर विहार संभावित है।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी में व्रत-प्रत्याख्यानों की निरन्तरता

अध्यात्मयोगी युगमनीषी रत्नसंघ के सप्तम पट्टधर परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष में आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द जन-जन के मन में अध्यात्म-चेतना जागृत कर सामायिक, स्वाध्याय, साधना और सेवा के क्षेत्र में व्यक्ति-व्यक्ति को जोड़कर संघ की जाहोजलाली कर रहे हैं। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द संयम को सुख का राजमार्ग बताते हैं और संयम-साधना में प्रमाद नहीं करने की प्रभावी प्रेरणा करते हैं। संयम पथ पर चलकर अध्यात्म आनन्द की अनुभूति विरले ही कर पाते हैं, लेकिन आचार्यप्रवर अवस्था के साथ व्यवस्था जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करने की बात यह कहते फरमाते हैं कि आप दीक्षार्थी भाई-बहिनों की तरह कदाचित् दीक्षा नहीं ले सकें तो भी ब्रह्मचर्य व्रत के प्रत्याख्यान लेकर छोटी दीक्षा तो ग्रहण कर ही सकते हैं। आचार्यप्रवर के अतिशय प्रभाव से अवस्था सम्पन्न दम्पती शीलव्रत के निरन्तर खंद कर रहे हैं। आचार्यप्रवर के धर्मधरा बालोतरा पधारने के पश्चात् निम्नांकित 31 दम्पतियों ने आजीवन ब्रह्मचर्य का नियम लिया है-

1. श्रीमती व श्री पारसमल जी बागरेचा-बालोतरा, 2. श्रीमती व श्री राजमल जी कवाड़-बालोतरा, 3. श्रीमती व श्री मोतीलाल जी श्रीश्रीमाल-बालोतरा, 4. श्रीमती व श्री भीकमचन्द जी गणधर चौपड़ा-बालोतरा, 5. श्रीमती व श्री भंवरलाल जी सांड -बालोतरा, 6. श्रीमती व श्री हरकचन्द जी सालेचा-बालोतरा, 7. श्रीमती व श्री मीठालाल जी वैदमुथा-बालोतरा, 8. श्रीमती व श्री पारसमल जी मदानी-बालोतरा, 9. श्रीमती व श्री महावीरराज जी फूलफगर-जोधपुर, 10. श्रीमती व श्री मदनलाल जी लोढ़ा-जयपुर, 11. श्रीमती व श्री छगनलाल जी पालगोता-बालोतरा, 12. श्रीमती व श्री रविन्द्र जी चोरडिया-चेन्नई, 13. श्रीमती व श्री जवरीलाल जी छाजेड़-बालोतरा, 14. श्रीमती व श्री मांगीलाल जी गोलेछा-बालोतरा, 15. श्रीमती व श्री बाबूलाल जी दांती-बालोतरा, 16. श्रीमती व श्री रमेशचन्द जी कोठारी-जलगाँव, 17. श्रीमती व श्री भूपतराज जी सालेचा-बालोतरा, 18. श्रीमती व श्री भंवरलाल जी माहेश्वरी-

बालोतरा, 19. श्रीमती व श्री दामोदर जी जैन-सवाईमाधोपुर, 20. श्रीमती व श्री जवेरीलाल जी जागीरदार-बालोतरा, 21. श्रीमती व श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल-तलेगाँव, 22. श्रीमती व श्री त्रिलोकचन्द जी श्रीश्रीमाल-बालोतरा, 23. श्रीमती व श्री कांतिलाल जी सालेचा-बालोतरा, 24. श्रीमती व श्री रोशनलाल जी सालेचा-बालोतरा, 25. श्रीमती व श्री बाबूलाल जी गणधर चौपड़ा- बालोतरा, 26. श्रीमती व श्री जेकचन्द जी बालड़-बालोतरा, 27. श्रीमती व श्री भंवरलाल जी बांठिया-बालोतरा, 28. श्रीमती व श्री नवलकिशोर जी माहेश्वरी-बालोतरा, 29. श्रीमती व श्री लक्ष्मण जी प्रजापत-माजीवाड़ा, 30. श्रीमती व श्री मांगीलाल जी प्रजापत-माजीवाड़ा, 31. श्रीमती व श्री हीरालाल जी श्रीश्रीमाल-बालोतरा।

आचार्य हस्ती भजन प्रतियोगिता का परिणाम

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के रूप में मनायी जा रही है। उसके अन्तर्गत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा रचित एवं उनके जीवन पर रचित भजन गायन प्रतियोगिता आयोजित करवायी गयी। इस आयोजन में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल, स्वाध्याय संघ, शिक्षण बोर्ड के राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर के पदाधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिला। इसके लिए मंडल कार्यालय उन सभी का हार्दिक आभार ज्ञापित करता है। सभी विजेता प्रतिभागियों को प्रथम पुरस्कार के रूप में 1100/-, द्वितीय पुरस्कार हेतु 800/- एवं तृतीय पुरस्कार हेतु 500/- रुपये के चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा शीघ्र भिजवाये जा रहे हैं।

प्रतियोगिता में सभी स्थानों पर प्रतियोगियों ने उत्साह से भाग लिया है। अभी तक जो परिणाम मंडल कार्यालय को प्राप्त हुए हैं, उसके अनुसार विजेता प्रतिभागी निम्नानुसार रहे हैं-

1. **मदनगंज-किशनगढ़ :- प्रथम-** श्रीमती डिम्पल जी कोठारी, **द्वितीय-** सुश्री ममता जी तातेड़, **तृतीय-** श्रीमती ज्योति जी मेहता।
2. **नागौर :- प्रथम-** श्री रविन्द्र जी बोथरा, **द्वितीय-**श्री आदर्श जी भंडारी, **तृतीय-** सुश्री देवांशी जी कांकरिया।
3. **जबलपुर :- प्रथम-** श्रीमती रीमा जी कोटेचा, **द्वितीय-** श्रीमती सीमा जी

बाघमार, तृतीय- श्रीमती विद्या जी बाघमार, श्रीमती कमलादेवी जी बाघमार।

4. **हैदराबाद :–** **प्रथम-** श्री सुशील जी चाणोदिया, **द्वितीय-** श्रीमती कल्पना जी सुराणा, **तृतीय-** श्रीमती संगीता जी दफ्तरी

5. **सोनादत्ती–बेलगाम :–** **प्रथम-** सुश्री डिम्पल जी तातेड़, **द्वितीय-** सुश्री प्रियंका जी लुंकड़, **तृतीय-** सुश्री मयूरी एवं दिया जी गोगड़।

6. **पीपाड़ सिटी :–** **प्रथम-** सुश्री मीनू जी मेहता, **द्वितीय-** सुश्री पुष्पा जी मेहता, **तृतीय-** सुश्री कोमल जी बाघमार, श्री नमन कुमार जी मेहता,

7. **अजमेर :–** **प्रथम-** श्रीमती सरिता जी गोलेछा, **द्वितीय-** श्री चन्द्रप्रकाश जी गांधी, **तृतीय-** श्रीमती मेघा जी कोठारी

8. **मसूदा–अजमेर :–** **प्रथम-**श्रीमती चंचल जी गोलेछा, **द्वितीय-**श्रीमती अन्तिमा जी डोसी, श्रीमती कविता जी श्रीश्रीमाल, **तृतीय-** श्रीमती चांदबाई जी गांग।

9. **गंजखेरली–अलवर :–** **प्रथम-**आभा जी जैन, **द्वितीय-** प्रियंका जी जैन, **तृतीय-**श्री कपिल जी जैन

10. **शहर–सवाईमाधोपुर :–** **प्रथम-** सुश्री प्रियंका जी जैन, **द्वितीय-** श्री बाबूलाल जी जैन, **तृतीय-** श्रीमती मुन्नी देवी जी जैन

11. **भोपालगढ़ :–** **प्रथम-** सुश्री प्रेक्षा जी जैन, **द्वितीय-**श्रीमती सुशीला जी मेहता, **तृतीय-** श्रीमती शांता जी लुंकड़

12. **उदयपुर :–** **प्रथम-** श्रीमती पूनम जी मोदी, **द्वितीय-**श्रीमती हेमलता जी नाहटा, **तृतीय-** श्रीमती चन्द्रकान्ता जी मेहता

13. **कोलकाता :–** **प्रथम-** भावनी जी विपानी, **द्वितीय-** कुसुम जी कांकरिया, **तृतीय-** श्री दिलीप जी मेहता

14. **देई :–** **प्रथम-** श्री नन्दकिशोर जी जैन, **द्वितीय-**श्री ताराचन्द जी जैन, श्री कपूरचन्द जी जैन, **तृतीय-**श्री महेन्द्र जी जिन्दल

15. **नदबई :–** **प्रथम-** श्रीमती गोमती जी जैन, श्रीमती प्रीति जी जैन, **द्वितीय-** आयुषी जी जैन, **तृतीय-** अर्चना जी जैन, ज्योति जी जैन

16. **भरतपुर :-** **प्रथम-** सुनीता जी जैन, **द्वितीय-** शालिनी जी जैन, **तृतीय-**श्री पारस जी जैन, श्री अरूण जी जैन

17. **घोड़ों का चौक-जोधपुर :-** **प्रथम-** किंजल जी टाटिया, **द्वितीय-** सुशीला जी भण्डारी, **तृतीय-**सुधा जी लोढ़ा

18. **सिंहपोल-जोधपुर :-** **प्रथम-**पंकज जी डोसी, **द्वितीय-**अलका जी टाटिया, **तृतीय-** सूरज जी बोहरा।

19. **लक्ष्मीनगर-जोधपुर :-** **प्रथम-** गजेन्द्र जी चौपड़ा, **द्वितीय-** भाग्यवंती जी तातेड़, **तृतीय-** महेन्द्र जी रांका।

20. **दूदू :-** **प्रथम-**कल्पना जी पोखरणा, **द्वितीय-** सारिका जी चीपड़, **तृतीय-** प्रमिला जी मेहता।

मध्यप्रदेश एवं विदर्भ क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 24 से 30 मई 2010 तक मध्यप्रदेश एवं विदर्भ क्षेत्र के चांगोटोला, वारासिवनी, बालाघाट, भण्डारा, नागपुर, कामठी, खापरखेड़ा, पारसिवनी, वर्धा, हिंगणघाट, पोहणा, मांडेली, वरोरा, चन्द्रपुर, वणी, पांढरकवड़ा, रालेगाँव, कलम्ब, यवतमाल, आर्णी, आसेगांवदेवी, मांगलादेवी, नेर, कारंजा, वासीम, बडनेरा, अमरावती आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ की मार्गदर्शक श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, स्वाध्याय संघ शाखा विदर्भ के संयोजक श्री महेन्द्र जी कटारिया-नागपुर, शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री मनोज जी जैन-जलगाँव की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्रों की स्थापना की गई, आगामी परीक्षा 1 अगस्त 2010 हेतु आवेदन पत्र भरवाये गये, 4 नये स्वाध्यायी बनाये गये, पुराने स्वाध्यायियों की इस वर्ष सेवा देने हेतु

स्वीकृति प्राप्त की गई एवं बोर्ड के पूर्व संचालित केन्द्रों की समीक्षा की गई। पर्युषण में स्वाध्यायी भेजने हेतु 06 क्षेत्रों की मांगें प्राप्त हुईं। परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष को 'अध्यात्म-चेतना वर्ष' के रूप में मनाने की जानकारी देने के साथ ही सभी क्षेत्रों में अधिक से अधिक व्रत-नियम ग्रहण करने की भी प्रेरणा की गई। आचार्य भगवन्त के जीवन ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आयोजित द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता की जानकारी दी गई तथा प्रश्नपुस्तिका एवं ग्रन्थ वितरित किए गए। जिनवाणी एवं स्वाध्यायशिक्षा के सदस्य भी बनाये गये। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना एवं स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा की गई।

जलगाँव में आचार्य हस्ती पर व्याख्यान

अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के पुण्य-स्मृति दिवस वैशाख शुक्ला अष्टमी, 21 मई 2010 को जलगाँव में गुरुभक्त श्री हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर का प्रमुख वक्ता के रूप में उद्‌बोधन हुआ। उन्होंने रत्नवंश का गौरवमय इतिहास, आचार्यश्री का अन्य आचार्यों के साथ समन्वय एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध तथा उदारता का सुन्दर विवेचन किया। उपस्थित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्य श्री का गुणानुवाद किया। इसी अवसर पर पूर्व में आयोजित "आचार्य श्री हस्ती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" निबन्ध प्रतियोगिता के पुरस्कारों का वितरण भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री कस्तूरचन्द जी बाफना एवं आभार प्रदर्शन युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री महावीर जी बोथरा द्वारा किया गया।

भरतपुर में आजीवन शीलव्रत

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न नवदीक्षिता महासती की बड़ी दीक्षा वैशाख शुक्ला नवमी, दिनांक 22 मई 2010 के अवसर पर श्रीमती पुष्पा जी जैन-श्री अशोक जी जैन, श्रीमती ऊषा जी जैन-श्री सुरेशचन्द जी जैन, श्रीमती कुसुम जी जैन-श्री विमलचन्द जी जैन, श्रीमती सुशीला जी जैन-श्री पारसमल जी जैन, भरतपुर ने आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार किया। इसी प्रकार अक्षयतृतीया 16 मई 2010 को श्रीमती अकलकंवर जी-श्री इन्दरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर ने आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार किया, आप विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. की सांसारिक बड़ी बहिन हैं।

संस्कार केन्द्र की गतिविधियाँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा स्थान-स्थान पर आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र खोलकर जैन एवं अजैन सभी बालक-बालिकाओं को नैतिक, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक संस्कारों का बोध दिया जा रहा है। संस्कार केन्द्र निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लक्ष्य में निरन्तर प्रगतिशील है- 1. बच्चों में सुसंस्कार 2. जीवन-निर्माण की कला सिखाना 3. नैतिक, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान की ज्योति जगाना 4. बच्चों को आदर्श नागरिक बनाना। वर्तमान में जोधपुर में अठारह, पोरवाल क्षेत्र में दस, पल्लीवाल क्षेत्र में अठारह, मेवाड़ में एक, मारवाड़ में तीन, जयपुर में आठ, चेन्नई में पाँच, मुम्बई में आठ, पाली में दो और अहमदाबाद में एक, इस प्रकार कुल 74 केन्द्र संचालित हैं, जिनमें 1699 छात्र अध्ययनरत हैं तथा 82 अध्यापक अध्यापन कार्य कर रहे हैं। अध्यापकों के सत्प्रयासों से 383 बच्चों ने सामायिक मूल, 50 बच्चों ने सार्थ सामायिक, 73 बच्चों ने पच्चीस बोल, 11 बच्चों ने पच्चीस बोल अर्थ सहित तथा 82 बच्चों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किए हैं। *-विमला मेहता, संयोजक*

शिविर-समाचार

युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 32 शाखाओं में ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर सम्पन्न

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन प्रेरणा से अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में पोरवाल, पल्लीवाल एवं मारवाड़ सम्भाग के 32 क्षेत्रों- सवाईमाधोपुर, आलनपुर, बजरिया, हा.बोर्ड, कुश्तला, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़, देई, सुमेरगंजमण्डी, कोटा, हिण्डौन सिटी, महुवा, नदबई, अलवर, खौह, हरसाना, मण्डावर, भरतपुर, खेरली, गंगापुर सिटी, पीपाड़ सिटी, मेड़ता सिटी, गोटन, नागौर, भोपालगढ़, पाली, बाड़मेर, किशनगढ़, अजमेर एवं दूदू में 21 मई से 6 जून 2010 तक आयोजित ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर सम्पन्न हुए। इन शिविरों के माध्यम से लगभग 2800 शिविरार्थियों ने विद्वान् अध्यापकों के सान्निध्य में धार्मिक ज्ञानार्जन किया। इन सभी स्थानों पर शिविर के कुशल संचालन में श्री जितेन्द्र जी डागा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-धार्मिक शिक्षण तथा शिविर समिति की पूरी टीम का विशेष सहयोग तो परिषद् को प्राप्त हुआ ही, साथ ही स्थानीय शिविर संयोजकों, क्षेत्रीय शिविर

संयोजकों, स्थानीय श्रावक संघ के पदाधिकारियों, श्रावक-श्राविकाओं एवं युवारत्नबन्धुओं का विशेष सक्रिय सहयोग भी प्राप्त हुआ। जिसके फलस्वरूप सभी स्थानों पर शिविर अपने उद्देश्यों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। शिविरकाल में धार्मिक परीक्षाएँ, काव्य, भजन व वाद-विवाद आदि अनेकानेक प्रतियोगिताएँ भी सम्पन्न हुईं, जिनमें वरीयता प्राप्त शिविरार्थियों को पुरस्कृत कर उत्साहवर्द्धन किया गया। शिविर का पाठ्यक्रम आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा अनुमोदित था, शिविर के दौरान ही शिविरार्थियों को 1 अगस्त को होने वाले परीक्षा के आवेदन पत्र भी भरवाए गए। आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष में यह एक ऐसी उपलब्धि है जो चिरस्थायी बन गई है। प्रत्येक वर्ष इन ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा करने का लक्ष्य है। इन शिविरों के माध्यम से संघ को कई सक्रिय कार्यकर्ताओं एवं नये धार्मिक अध्यापकों की प्राप्ति हुई। युवक परिषद् द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के लाभान्वित कई छात्र-छात्राओं ने अध्यापन कार्य करवाया और सभी ने उत्साहपूर्वक भाग भी लिया। कर्म-निर्जरा के इस पुनीत ज्ञानार्जन के कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी कार्यकर्ताओं को अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् हार्दिक आभार ज्ञापित करता है।

-मनोज कांकरिया, महासचिव, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

जोधपुर में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा राजस्थान के स्वाध्यायियों का स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 23 से 27 जून 2010 तक सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर में आयोजित किया गया। शिविर में जयपुर, सवाईमाधोपुर, बजरिया, हा. बोर्ड (सवाईमाधोपुर), खौह, खेरली, कुश्तला, महुवा, मन्दसौर, हिण्डौन सिटी, भरतपुर, पीपाड़, चौथ का बरवाड़ा, गंगापुर सिटी, आलनपुर आदि स्थानों के 76 तथा स्थानीय जोधपुर के 41 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। सभी स्वाध्यायियों को 4 कक्षाओं में विभक्त कर प्रातः 5 से रात्रि 10 बजे तक की दिनचर्या में आगामी पर्युषण पर्व की तैयारी हेतु अध्ययन करवाया गया है। शिविर में अध्यापन कार्य आदरणीय श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, श्री धर्मचन्द जी जैन, श्री रंगरूपमल जी डागा, श्रीमती सुशीला जी बोहरा, श्रीमती रतन जी चोरडिया, श्रीमती अकलकंवर जी मोदी, श्री प्रकाश जी

सालेचा तथा श्री दिलीप जी जैन ने किया। शिविर के संयोजन का दायित्व श्री सुन्दरलाल जी सालेचा ने निर्वहन किया। शिविर की प्रमुख विशेषता रही कि उक्त शिविर में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त हुआ। 21 नये स्वाध्यायी बनना तथा 42 स्वाध्यायियों द्वारा पर्युषण स्वीकृति देना शिविर की विशेष उपलब्धि रही। *-नवरतन डागा, संयोजक*

बैंगलोर में आस्था अनुशास्ता शिविर सम्पन्न

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 के शुभ सान्निध्य में 7 से 11 मई 2010 तक बालक-बालिकाओं एवं श्राविकाओं का पंचदिवसीय 'आस्था अनुशास्ता शिविर-2010' का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 160-170 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में धोवन पानी, अनर्थदण्ड, नवतत्त्व, 6 आरे, 25 क्रिया, आचारांग के जीवनोपयोगी सूत्र, 12 भावना, 18 पाप का थोकड़ा, 8 कर्म का थोकड़ा, सेवा, झूठन नहीं छोड़ना, जैन धर्म का क्रियात्मक रूप, कथा विभाग आदि विषयों पर अध्यापन कार्य हुआ। महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री संगीताश्री जी म.सा., महासती श्री भावना श्री जी म.सा. ने शिविर में अपना प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्रदान किया। शिविर में सभी शिविरार्थियों को स्वावलम्बी जीवन जीना सिखाया। टी.वी. देखने के त्याग, कच्चे पानी के त्याग की प्रेरणा से प्रेरित हो कई शिविरार्थियों ने इनका त्याग किया एवं नवकारसी, पोरसी आदि करने का नियम ग्रहण किया। शिविर में श्री दिनेश जी भंसाली, श्रीमती सरोज बाई पुनमिया, श्रीमती सीमा जी भंसाली, श्रीमती सरिता जी कोठारी ने अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कीं।

जयपुर के 10 केन्द्रों पर धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा विगत 18 वर्षों से बच्चों में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन प्रतिवर्ष किया जा रहा है। उसी क्रम में 16 मई से सांगानेरी गेट स्थित सुबोध स्कूल में एवं 23 मई से महावीर नगर, मालवीय नगर, जवाहर नगर, श्याम नगर, नित्यानन्द नगर, विद्याधर नगर, तिलक नगर, लालकोठी एवं मानसरोवर में इस प्रकार कुल 10 स्थानों पर बालक-बालिकाओं में संस्कार निर्माण हेतु धार्मिक शिविर लगाये गए। शिविर में 800 से अधिक बालक-बालिकाओं ने अनुभवी अध्यापकों से धार्मिक, नैतिक एवं संस्कार

निर्माण संबंधीत शिक्षा प्राप्त की। शिविर में बच्चों के बौद्धिक एवं मानसिक विकास हेतु भजन तथा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शिविर के अन्तिम दिन 13 जून को सभी केन्द्रों पर शिविरार्थियों के मूल्यांकन हेतु परीक्षा आयोजित की गई। शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 27 जून 2010 को सुबोध पब्लिक स्कूल के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने की। समारोह में गुणीजन अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत धार्मिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु वरिष्ठ श्रावक श्री मोहनलाल जी मूथा को तथा सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु श्री सुमतिचन्द जी कोठारी को सम्मान-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। *-प्रशान्त कर्णावट, शाखा सचिव*

जोधपुर में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा विगत कई वर्षों से बालक-बालिकाओं में नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कारों का वपन करने हेतु धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष भी यह शिविर जोधपुर शहर के आठ केन्द्रों-घोड़ों का चौक, सिंहपोल, पावटा, लक्ष्मीनगर, नेहरूपार्क, प्रतापनगर, हाउसिंग बोर्ड, सरस्वती नगर पर दिनांक 16 मई से 6 जून तक आयोजित किया गया। सभी केन्द्रों पर लगभग 900 शिविरार्थियों ने भाग लेकर विद्वान् अध्यापकों से ज्ञानार्जन किया। आचार्यप्रवर द्वारा इस वर्ष सामायिक, प्रतिक्रमण एवं 25 बोल सीखने पर अधिक बल दिया जा रहा है अतः इस शिविर का पाठ्यक्रम भी उसी आधार पर तैयार किया गया। साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की नैश्रायवर्तिनी महासतियाँ जी म.सा. द्वारा भी शिविर में अध्ययन करवाया गया। शिविर प्रातः 7.00 से 9.30 तक आयोजित हुआ तथा शिविर की प्रमुख विशेषता यह रही कि शिविर में प्रातःप्रार्थना के पश्चात् 10-15 मिनट विशिष्ट विद्वानों, चिन्तकों द्वारा बच्चों में संस्कारोपण हेतु उद्बोधन प्रदान किया गया। शिविर का समापन कार्यक्रम 6 जून को ओसवाल कम्युनिटी हॉल में आयोजित हुआ, जिसमें वरीयता प्राप्त शिविरार्थियों एवं सभी शिविरार्थियों को पुरस्कार वितरित किए गए।

-मनीष लोढ़ा, अध्यक्ष

कोटा में आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न

श्री विज्ञान नगर कोटा स्वाध्याय संस्था एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में 18 से 25 जून 2010 तक विज्ञान नगर कोटा में अष्ट दिवसीय आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कोटा के विभिन्न उपनगरों विज्ञान नगर, महावीर नगर, टीचर कॉलोनी, बसन्त विहार, श्रीनाथपुरम्, तलवण्डी, दादावाड़ी, बजाज खाना, गुलाबबाड़ी, रंग विहार, रामपुरा, बंगाली कॉलोनी आदि स्थानों से लगभग 160 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में बालक-बालिकाओं हेतु प्रातः 07.30 से 11.30 बजे तथा श्राविकाओं के लिए दोपहर 2 से 4 बजे तक एवं सायं प्रतिक्रमण के पश्चात् 8 बजे से 10 बजे तक ज्ञानचर्चा का समय रखा गया। शिविर में अध्यापन हेतु श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्रीमती शान्ता जी मोदी-जयपुर, श्री विजयराज जी मेहता-जयपुर, श्रीमती अमृतकंवर जी भण्डारी-जोधपुर, सुश्री अल्फा जी सुराणा-जोधपुर, सुश्री जयमाला जी जैन-सवाईमाधोपुर, सुश्री अनिता जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री रामस्वरूप जी जैन-कोटा, श्री बाबूलाल जी जैन-कोटा तथा श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर ने अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की। अध्यात्म-चेतना वर्ष के संकल्प पत्र शिविर के दौरान भरवाये गये साथ ही पूरे शिविर में कई व्रत-प्रत्याख्यान शिविरार्थियों ने किए। शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार अध्ययन के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से शिविरार्थियों को ज्ञानार्जन करवाया गया। शिक्षण बोर्ड द्वारा 1 अगस्त को आयोज्य परीक्षा के 56 आवेदन-पत्र तथा नये स्वाध्यायी के फार्म भी भरे गए। शिविर का संचालन श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर ने किया। शिविर के समापन समारोह में शासन सेवा समिति के सह संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत मुख्य अतिथि के रूप में, श्री सुरेश जी कोठारी-जयपुर एवं श्री अशोक जी सेठ-जयपुर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

भोपालगढ़ में 21 दिवसीय शिविर सम्पन्न

बालक-बालिकाओं में आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार प्रदान करने हेतु अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान, भोपालगढ़ द्वारा 21 दिवसीय शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 63 बालक-बालिकाओं एवं महिलाओं ने भाग लिया। शिविर में सामायिक सूत्र, दशवैकालिक और

का अध्ययन करवाया गया। श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती कंचन जी मेहता ने शिविर संयोजक के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। *-अशोक चोरडिया, मंत्री*

जिनवाणी के लेखकों हेतु सूचना

जिनवाणी के प्रबुद्ध लेखकों को सूचित करते हुए प्रमोद है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा पूर्व की भाँति इस वर्ष भी यह निश्चय किया गया है कि जनवरी से दिसम्बर 2010 के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ को निम्नांकित वर्गानुसार पुरस्कृत किया जाएगा।

1.	आध्यात्मिक/नैतिकशिक्षा परक लेख	5100/-
2.	शोधालेख/वैज्ञानिक लेख	5100/-
3.	आगमिक/तात्त्विक/जीवन-शैली से सम्बद्ध लेख	5100/-
4.	अंग्रेजी भाषा में श्रेष्ठ रचना	5100/-
5.	युवा-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	5100/-
6.	नारी-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	5100/-
7.	बाल-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ रचना	5100/-
8.	श्रेष्ठ कविता	3100/-
9.	संवाद स्तम्भ में श्रेष्ठ समाधान	3100/-
10.	श्रेष्ठ प्रेरक-प्रसंग/क्षणिकाएँ/विचार	2100/-

उपर्युक्त पुरस्कारों की घोषणा उत्कृष्ट रचनाधर्मिता के संवर्धन एवं जिनवाणी के पाठकों हेतु प्रेरणाप्रद नूतन पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा-चेन्नई** की सहमति से की जा रही है। लेखकों की रचनाएँ मौलिक, स्पष्ट, प्रभावोत्पादक एवं पाठकों को दिशाबोध कराने वाली होनी चाहिए। *-श्री विरदराज सुराणा, मंत्री*

जैन एज्यूकेशन कमिटी द्वारा पाठशालाओं का संचालन एवं पुस्तकों का प्रकाशन

अमेरिका में स्थित जैन एज्यूकेशन कमिटी द्वारा निम्नांकित महत्त्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं-

1. अमेरिका एवं विभिन्न देशों में संचालित पाठशालाओं के लिए पुस्तकों का प्रकाशन। उत्तरी अमेरिका में इस समय 3500 विद्यार्थी पाठशाला में उपस्थित होते हैं।
2. ई-लाइब्रेरी वेबसाइट का विकास एवं डी.वी.डी. प्रोजेक्ट का संचालन किया

जा रहा है। तैयार की गई चार डी.वी.डी. में 7 लाख पृष्ठों की 2000 पुस्तकों को समाहित किया गया है, जिनमें जैन एज्यूकेशन बुक भी सम्मिलित है।

3. ई-लाइब्रेरी प्रोजेक्ट की वेबसाइट पर विगत 9 माह में 4000 व्यक्तियों ने अपने ई-मेल पते का पंजीकरण करवाया है तथा 23000 पुस्तकें डाउनलोड की है। ई-लाइब्रेरी की वेबसाइट है- www.jainelibrary.org

जैन एज्यूकेशन कमिटी द्वारा अंग्रेजी पाठकों एवं छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। एक पुस्तक Jain Philosophy Practice-2 से विनय (Humility) पर एक लेख इसी जिनवाणी अंक में प्रकाशित किया गया है। जैन एज्यूकेशन कमिटी के अध्यक्ष श्री प्रवीण के. शाह का प्रयास प्रशंसनीय है। वे उदारमना व्यक्तियों से अर्थ-सहयोग की अपेक्षा रखते हैं ताकि विदेशों में रह रही भावी पीढ़ी को जैन धर्म-दर्शन से वृहद् स्तर पर परिचित कराया जा सके। ई-मेल education@jaina.org

महावीर पुरस्कार एवं ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाड़िया पुरस्कार 2010 हेतु आवेदन आमंत्रित

प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान, श्री महावीरजी के वर्ष-2010 के महावीर पुरस्कार के लिए जैनधर्म-दर्शन, इतिहास, साहित्य, संस्कृति आदि से सम्बन्धित किसी भी विषय की पुस्तक/शोध प्रबन्ध की चार प्रतियाँ 31 अक्टूबर 2010 तक आमंत्रित हैं। इस पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त कृति को 51000/- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा तथा द्वितीय स्थान प्राप्त कृति को ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाड़िया साहित्य पुरस्कार 5001/- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। 31 दिसम्बर, 2007 के पश्चात् प्रकाशित पुस्तक ही इसमें सम्मिलित की जा सकती है। नियमावली तथा आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त करने के लिए संस्थान कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारक जी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-4 से पत्र - व्यवहार करें। -डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक

स्वयंभू पुरस्कार-2010 के लिए आवेदन आमंत्रित

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा वर्ष-2010 के स्वयंभू पुरस्कार के लिए अपभ्रंश से सम्बन्धित विषय पर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में रचित रचनाओं की चार प्रतियाँ 31

अक्टूबर 2010 तक आमंत्रित है। इस पुरस्कार में 31000/- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। 31 दिसम्बर, 2007 से पूर्व प्रकाशित तथा पहले से पुरस्कृत कृतियाँ सम्मिलित नहीं की जायेगी। नियमावली तथा आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त करने के लिए अकादमी कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारक जी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-4 से पत्र-व्यवहार करें। *-डॉ. कमलचन्द सोगाणी*

विधवाओं एवं जरूरतमन्दों को सहयोग

श्वेताम्बर जैन ओसवाल समाज की विधवाएं एवं जरूरतमन्द परिवार जिनको जीवन यापन में कठिनाई है, जिन्हें कहीं से भी सहयोग नहीं मिल रहा हो और मासिक आय रुपये 1500/- से अधिक न हो, आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिए अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता मय पिन कोड, दो लिफाफों पर लिखकर प्रत्येक पर 5/-रु. का डाक टिकट लगाकर दोनों लिफाफों को पत्र में रखकर, आवेदन पत्र मंगाने के लिए निम्नलिखित पते पर भेजें- *गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री लाभचन्द जी कोठारी, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड़, बापू नगर, जयपुर-302015-07, फोन: 93140-03536 (मोबाइल)*

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के मेधावी, होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है, जिनके परिवार की मासिक आय रुपये 8500/- से अधिक नहीं है, वे छात्रवृत्ति के लिये आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पत्र मंगाने के लिए, अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता मय पिन कोड, दो लिफाफों पर लिखकर प्रत्येक पर 5/- रु. का डाक टिकट लगाकर दोनों लिफाफों को पत्र में रखकर, निम्न पते पर भेजें - *सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री लाभचन्द जी कोठारी (एम.ए.), डी120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापू नगर, जयपुर-302015, मोबाइल नं. 93140-03637*

करुणा अन्तरराष्ट्रीय :सुसंस्कारों का संवाहक

करुणा अन्तरराष्ट्रीय विगत 15 वर्षों से शिक्षण संस्थानों में 'करुणा क्लबों' का गठन कर उनके माध्यम से विद्यार्थियों के बालमन में अहिंसा, करुणा, प्रेम की भावनाओं को जागृत कर रहा है, ताकि सभी बालक विभिन्न प्राणियों, पशु-पक्षियों, वनस्पति जगत् और पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरूक बनें। वर्तमान

में देश के विभिन्न राज्यों में कुल 2000 करुणा क्लब एवं 36 करुणा केन्द्र 4000 कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित हैं। इन जीवन मूल्यों के बीजारोपण के लिए विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य अध्यापकों, कार्यकर्ताओं एवं समाजसेवियों को निःशुल्क वितरित किया जाता है। इसके अतिरिक्त संस्थान करुणा अन्तरराष्ट्रीय-मासिक न्यूज़लेटर भी प्रकाशित करता है, जिसके माध्यम से करुणा क्लबों/कार्यकर्ताओं से निरन्तर सम्पर्क बना रहता है। संस्थान द्वारा करुणा के मूल्य, पशु क्रूरता निवारण, चमड़ा-निषेध, शाकाहार की गुणवत्ता एवं उसके वैज्ञानिक तथ्य, मांसाहार से पर्यावरण प्रदूषण आदि विषयों पर सी.डी. दिखलाकर व्यापक प्रचार किया जा रहा है। समाज पर इन कार्यक्रमों से कई सकारात्मक प्रभाव हो रहे हैं। अहिंसा, करुणा एवं शाकाहार का संदेश अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँच रहा है, बच्चे सुसंस्कारित हो रहे हैं। इस संस्थान के सम्पर्क में आने के पश्चात् मांसाहारी परिवार प्रेम से और अपनी इच्छा से शाकाहारी बनते हैं। -दुलीचन्द जैन, अध्यक्ष,

'साहित्य पढ़ो : क्षयोपशम करो' खुली पुस्तक प्रतियोगिता

आचार्य श्री उमेशमुनिजी 'अणु' विरचित 'णमोक्कार अणुप्पेहा' पुस्तक पर 'साहित्य पढ़ो : क्षयोपशम करो' नामक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम पुरस्कार-10001/-, द्वितीय पुरस्कार 5001/-, तृतीय पुरस्कार 3001/- तथा पचास सान्त्वना पुरस्कार (प्रत्येक 100/-) प्रदान किये जायेंगे। प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि 31 दिसम्बर 2010 है। पुस्तक का मूल्य 10/-, प्रश्नपुस्तिका का मूल्य 10/- एवं डाक खर्च 5/-, कुल 25रु- का मनीऑर्डर निम्नलिखित पते पर भेजकर प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री भरत भंसाली, धर्मधारा, 128, रघुनंदन मार्ग, थांदला (म.प्र.), मो. 9406850428, फोन 07390-276089, 277200

संक्षिप्त समाचार

बैंगलुरू- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में बैंगलुरू में आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का पुण्य-स्मृति दिवस 21 मई 2010 को तप-त्याग-प्रत्याख्यान तथा तीन-तीन सामूहिक सामायिक-साधना के साथ मनाया गया। महासती मण्डल ने पूज्य आचार्य भगवन्त की गुण गरिमा-महिमा का

पद्य एवं गद्य में बखूबी बखान किया। श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल ने सफल संचालन करते हुए आचार्य श्री हस्ती की जीवन झांकी प्रस्तुत की। 25 मई को राजाजीनगर, बैंगलोर में महासती मण्डल के सान्निध्य में श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. के देवलोकगमन पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। गुणानुवाद सभा में महासती मण्डल के साथ ही कई वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं ने दिवंगत संतरत्न को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुम्बई- आध्यात्मिक चेतना वर्ष के अन्तर्गत होने वाले कार्यक्रमों में रत्नबन्धु अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हो सकें इसलिए श्री जैन रत्न युवक परिषद्, मुम्बई द्वारा निर्देशिका (डायरेक्ट्री) का नवीन संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। जिन रत्नबन्धुओं ने अभी तक अपने नाम नहीं लिखाए हों अथवा मुम्बई में अपने निवास, कार्यालय का पता, फोन नं. बदल गया हो तो नया पता, फोन, मोबाइल नं. लिखकर निम्नांकित सम्पर्क सूत्र पर सूचित करायें- ***श्री अमरचन्द बाफना, 9869201186, श्री विशाल बोहरा, 9870177911, श्री प्रवीण कर्नावट, 9821055932***

उदयपुर- राष्ट्रसंत श्री गणेशमुनि जी के मुखारविन्द से विरक्ता बहिन गुलशन ने 27 मई 2010 को भागवती दीक्षा अंगीकार की।

उदयपुर- उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी श्री चारित्रप्रभा जी म.सा. की सुशिष्या साध्वी प्रतिभा श्री को समाधिमरण विषय पर डॉक्टरेट की उपाधि से अलंकृत किया गया। आपने यह शोध कार्य डॉ. सागरमल जी जैन, शाजापुर के निर्देशन में पूर्ण किया।

दिल्ली- संघनायक श्री पदमचन्द जी के आज्ञानुवर्ती महास्थविर श्री प्रकाशचन्द जी म.सा., राजर्षि श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 ने भ. महावीर के केवलज्ञान कल्याणक दिवस पर प्रवचन सभा में आचार्य हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यस्मृति के प्रसंग पर उनके जीवन-प्रसंगों को रेखांकित किया। उन्होंने आचार्य हस्ती के समाधिमरण को उनके जीवन का उत्कर्ष बताया। सभा को एडवोकेट श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन ने भी सम्बोधित किया।

जयपुर - श्री कन्हैयालाल हीरावत चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर के द्वारा विगत 32 वर्षों से जोगणिया माताजी में भ्रमणशील चिकित्सा इकाई राजस्थान के सहयोग से चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। क्षेत्र की आवश्यकता को ध्यान

में रखते हुए यहाँ 20 शय्या का 'रतनेन्द्र हीरावत मेमोरियल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर' 2 जून को प्रारम्भ किया गया है।

मेड़ता- श्री उमरावकुँवर जी म.सा. 'अर्चना' की पावन स्मृति में भारत सरकार के संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मन्त्रालय, नई दिल्ली द्वारा पाँच रुपये का डाक टिकट जारी करने की स्वीकृति प्रदान की गई है। -जतनराज मेहता, मंत्री

दिल्ली- ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली जैन बच्चों के लिए सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करती है। सहायता के लिए अपना आवेदन पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें- केप्टन वी.के. जैन, ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, 572, आसिद विलेज, नई दिल्ली-110049, फोन नं. 011-26493538, 26492386

पुणे- आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पं. रत्न श्री प्रेमचन्द जी म.सा. आदि ठाणा एवं विदुषी महासती श्री स्वर्णप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 6के सान्निध्य में अप्रेल माह में दस दिवसीय शिविर एवं मई माह में चौदह दिवसीय शिविर आयोजित हुए। इन शिविरों में लगभग 600 शिविरार्थियों ने ज्ञानार्जन किया। साथ ही धर्माराधन करते हुए संस्कार निर्माणकारी नियम अंगीकार किए। इस शिविर में 79 शिविरार्थियों ने श्रावक-व्रत ग्रहण किए।- श्री विजय.ने. पटवा, शिविर संयोजक

बालोद - आचार्य श्री रामेश के पावन सान्निध्य में सुश्री पायल चोरडिया की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

इन्दौर - आचार्य विद्यासागर जी महाराज के शिष्य ऐलकश्री सिद्धान्त सागरजी महाराज के सान्निध्य में श्रुत सिद्धांत शोधपीठ, इन्दौर द्वारा 'मध्यप्रदेश का जैन पुरातत्त्व' शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पुरातत्त्व के अन्तर्गत अभिलेख, मूर्तियाँ, मन्दिर, सिक्के आदि का अध्ययन किया जाता है।

बधाई/चुनाव

जलगाँव - संघ-संरक्षक तथा जलगाँव के गौरव ललवाणी परिवार के श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी (बाबूजी) महाराष्ट्र राज्यसभा में सांसद निर्वाचित हुए हैं। आप बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। जलगाँव के विकास में और अपने शहर को आगे बढ़ाने में आपका अनूठा योगदान रहा है। वर्तमान में बालक-

बालिकाओं में नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कार प्रदान करने हेतु पूरे महाराष्ट्र में ज्ञानशालाएँ आपके द्वारा संचालित की जा रही हैं। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति है।

जयपुर - सुश्री ध्रिती सुराणा सुपुत्री श्री विरदराज जी सुराणा (मंत्री-सम्यग्ज्ञान

प्रचारक मण्डल,जयपुर) का 25 जून से 4 जुलाई 2011 को ऐथन में होने वाले स्पेशल ओलम्पिक खेलों में राजस्थान से आठ विभिन्न खेलों हेतु भारत का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त हुआ है। सुश्री ध्रिती का बेडमिन्टन खेल हेतु चयन हुआ है। आपने पूर्व में भोपाल, उदयपुर, श्री गंगानगर आदि स्थलों पर बेडमिन्टन में राज्यस्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मेडल तथा अन्य मेडल प्राप्त किए हैं।

जोधपुर - सुश्री निधि जैन सुपुत्री श्रीमती ललिता-महेन्द्र जैन ने सी.बी.एस. ई की

दसवीं की परीक्षा में ए-1 ग्रेड के साथ 9.6 प्रतिशतांक से विद्याश्रम इण्टरनेशनल स्कूल में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। सुश्री निधि सुश्रावक इन्द्रमल जी रेड की सुपौत्री एवं सुश्रावक श्री मूलचन्द जी बाफना की दौहित्री है।

भरतपुर - श्री गौरव कुमार जैन सुपुत्र श्रीमती विजय-सुरेशचन्द जैन ने अजमेर

बोर्ड की सीनियर सैकेण्डरी (विज्ञान) में 96 प्रतिशत अंक के साथ राजस्थान की वरीयता सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हिण्डौन के पूर्व मंत्री श्री घासीलाल जी जैन के दौहित्र हैं।

जोधपुर - सुश्री लक्षिता भण्डारी सुपुत्री श्रीमती मधु-शान्तिचन्द भण्डारी एवं सुपौत्री स्व. श्री महाराज कुमारचन्द भण्डारी ने सीनियर सैकेण्डरी (वाणिज्य) में 90.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर एस.पी.एस. स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

बैंगलुरु - सुश्री मीनल मेहता सुपुत्री श्रावकरत्न श्री सज्जनराज जी मेहता ने पी.यू.सी. द्वितीय वर्ष में 95.66 प्रतिशत अंक तथा सांख्यिकी में शत प्रतिशत अंक प्राप्त किए। आप स्व. श्री उगमराज जी मेहता, जोधपुर की सुपौत्री हैं। आपकी विशेष

धार्मिक रुचि है।

बीजापुर - सुश्री सुरभि सुपौत्री श्री दीपचन्द जी एवं मानकुंवर बाई रूणवाल ने सी.बी.एस.ई. की दसवीं बोर्ड परीक्षा में 94.87 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

जोधपुर - श्रेणिक जैन सुपुत्र श्रीमती प्रेम एवं श्री पंकज जी जैन ने गुजरात नेशनल

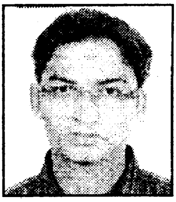

लॉ यूनिवर्सिटी से बी.काम., एल.एल.बी. तथा सी.एस. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीण की है। आप वर्तमान में मुम्बई में कार्यरत हैं तथा आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की द्वितीय कक्षा भी आपने उत्तीर्ण की है।

अहमदाबाद - सुश्री श्रद्धा गांग सुपुत्री श्रीमती विमला-सुरेशमल जी गांग ने बी.एस.सी. बायोटेक्नोलॉजी में गुजरात यूनिवर्सिटीमें प्रथम स्थान प्राप्त किया। सुश्री गांग की धार्मिक रुचि भी अच्छी है।

ब्यावर - श्री जैन रत्न युवक परिषद्, ब्यावर के चुनाव में युवारत्न श्री संजय जी डोसी-अध्यक्ष, युवारत्न श्री मनीष जी मेहता-सचिव एवं युवारत्न श्री प्रफुल्ल जी भंडारी सर्वग्गम्मति से कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

श्रद्धाञ्जलि

चिन्तनशील साधक स्वाध्यायी श्री सम्पतराज जी डोसी का समाधिमरण

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त, चतुर्विध संघ-सेवी, सरलमना, उदारमना, श्रावकरत्न

श्री सम्पतराज जी डोसी का 10 जून 2010 को संलेखना संथारा पूर्वक पण्डितमरण हो गया। श्री डोसी साहब का जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि सद्गुणों से पूरित था। स्वाध्याय संघ, जोधपुर के संयोजक पद को 21 वर्षों तक सुशोभित करते हुए सर्वतोभावेन समर्पित होकर आपने जो अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान की वे चिरस्थायी एवं अनुकरणीय हैं। 'कषाय-विजय' के पथ पर आरुढ़ आप परिवार में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण संघ-समाज में विरले व्यक्तित्व थे। आपका सम्पूर्ण जीवन चतुर्विध संघ-सेवी कार्यों में समर्पित रहा। रत्नसंघ के साथ ही अन्य सम्प्रदायों के संत-सती वर्ग के अध्यापन में भी आपका विशेष सहयोग

रहा। ज्ञानार्जन करवाने हेतु आप अधिकाधिक समय देने का लक्ष्य रखते थे। अध्यापन कराते समय पुस्तक पास में न होने पर भी शास्त्रों की गाथाओं में काना-मात्रा की अशुद्धियाँ भी वे तुरन्त पकड़ लेते थे।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को नई ऊँचाई देने में एवं चारित्रात्माओं को अध्यापन सेवाएँ प्रदान करने में आपका सम्पूर्ण जीवन समर्पित रहा। आप सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के उपाध्यक्ष भी रहे। प्रत्येक स्वाध्यायी के श्रीमुख पर आपका नाम एवं आपके गुणों का अनुमोदन बना रहता है। स्वधर्मि-वात्सल्य में निरत डोसी सा. पारिवारिक कलह को दूर करने एवं धर्म के प्रति जागरणा करने में विशेष सहयोगी रहते थे। आपने 36 वर्ष की वय में शीलव्रत अंगीकार कर लिया था तथा आपने रात्रि-भोजन त्याग सहित अनेक त्याग-प्रत्याख्यान अंगीकार कर रखे थे। रात्रि में संवर आप प्रायः घोड़ों का चौक स्थानक में करते थे तथा प्रातःकाल शौच हेतु जंगल जाया करते थे। संघ विकास की भावना के साथ आप हितचिन्तक थे।

अन्तिम समय नजदीक जानकर शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की नेश्रायवर्तिनी महासती जी के मुखारविन्द से श्रावकरत्न ने 9 जून को सायंकाल संथारा ग्रहण किया तथा 10 जून को प्रातः 9 बजे नश्वर देह का त्याग कर संघ व समाज के सामने आदर्श उपस्थित किया। श्रावकरत्न के देहावसान पर संघ में एक विशिष्ट, संघनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ 'रत्न' की अपूरणीय क्षति हुई है। आपके लघुभ्राता श्री नवरतनमल जी डोसी (पूर्व संयोजक, स्वाध्याय संघ), श्री प्रेमचन्द जी डोसी (सुपुत्र), श्री अजय जी डोसी (भतीजे) सहित समस्त परिवार श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ है।

अजमेर- संघ समर्पित, संघसेवी, उदारमना श्रावकरत्न श्री अमरचन्द जी दुधेड़िया का 22 जून 2010 को देहावसान हो गया। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति गहरी आस्था और श्रद्धा से ओतप्रोत श्रावकरत्न का सम्पूर्ण जीवन त्याग, सेवा-समर्पण एवं चतुर्विध संघ-सेवी कार्यों में सन्नद्ध रहा। आपने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर के अध्यक्षीय पद को लगभग 10 वर्षों तक सुशोभित किया। स्वाध्याय भवन, अजमेर के निर्माण में भी आपने प्रशंसनीय सेवाएँ प्रदान कीं। जीवदया के क्षेत्र में आपका विशेष योगदान रहा। जहाँ कहीं भी जीवदया के क्षेत्र में सेवा की आवश्यकता होती, आप प्राथमिकता से वहाँ पहुँचकर

मूक प्राणियों की सेवा में तत्पर रहते थे। गुरु हस्ती के संदेश सामायिक-स्वाध्याय के प्रति आप सजग थे। आपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। संघ की गतिविधियों में दुधेड़िया परिवार का सक्रिय सहयोग रहा है। आपके सुपुत्र श्री अनिल कुमार दुधेड़िया एवं समस्त परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन-निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ, संघसेवी सुश्राविका श्रीमती गवरीदेवी जी चौपड़ा धर्मपत्नी

स्व. श्री बाबूलाल जी चौपड़ा का 26 जून 2010 को स्वर्गगमन हो गया। धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ श्राविका की आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। गुरु हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। आपका अधिकांश समय धर्म-साधना में व्यतीत होता था। पूर्व में कुम्भट भवन व वर्तमान में चौपड़ा भवन में पधारने वाले चारित्रात्माओं की सेवा में आप सदैव सन्नद्ध रहती थीं। 'सादा जीवन उच्च विचार' की लोकोक्ति आपके जीवन में परिलक्षित होती थी। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव समर्पित रही। संघसेवी सम्पूर्ण चौपड़ा परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन-निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है। संघ की सभी गतिविधियों में चौपड़ा परिवार का सक्रिय सहयोग रहता है।

जयपुर- लब्धप्रतिष्ठित श्रेष्ठिवर्य सुश्रावक श्री पूनमचन्द जी चोरडिया सुपुत्र स्व. श्री कुन्दनमल जी चोरडिया (गीजगढ़ वाले) का 11 जून 2010 को आकस्मिक देवलोक गमन हो गया। बाल्यकाल से ही आपका जीवन धर्ममय रहा। आप बहुत ही सरल स्वभावी, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण, मृदुभाषी तथा व्यवहार कुशल सेवाभावी श्रावकरत्न थे। आपका प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय के साथ विशिष्ट तिथियों पर यथानुकूल त्याग-प्रत्याख्यान करने का प्रयास रहता था। आप आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की सुशिष्या, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के लघु सांसारिक भ्राता थे। आपने तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के श्रीमुख से 12 वर्ष पूर्व आजीवन शीलव्रत ग्रहण किए थे। मिलनसारिता का गुण होने से आप परिवारजनों में प्रिय थे तथा बड़े भाइयों की सेवा में हमेशा तत्पर रहते

थे। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री गौतम जी, सुबाहु जी एवं आशीष जी चोरडिया के भरे-पूरे परिवार को छोड़कर गए हैं।

कोटा- धर्मनिष्ठ सुश्रावक सरलमना सेठ श्री बंशीलाल जी लुंकड़ का 82 वर्ष की

उम्र में 7 जून 2010 को रात्रि में नवकार मंत्र का स्मरण करते हुए देहावसान हो गया। आप आचार्य हस्तीमल जी म.सा. के अनन्य भक्त थे। अपने जीवनकाल में आपने कई तरह के तप किए। दीपावली के समय हमेशा आप अष्टप्रहरीय उपवास का तेला करते थे। ब्रह्मचर्य व्रत का आप गत 28 वर्षों से पालन कर रहे थे। सन् 1993 में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का कोटा में ऐतिहासिक चातुर्मास करवाने में आपका विशेष सहयोग प्राप्त हुआ था। पिछले 17 वर्षों से कैंसर जैसे असाध्य रोग से संघर्ष करते हुए भी आपने धर्म-साधना में कोई कमी नहीं रखी। आप आत्मबली थे। आप पिछले 28 वर्षों से व्यापार से निवृत्ति लेकर सामाजिक-धार्मिक कार्यों में अग्रसर थे। आप अपने पीछे अपनी पत्नी शोभादेवी, पाँच पुत्र, एक पुत्री एवं सात पौत्र तथा चार पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- सुश्रावक लेफ्टिनेन्ट कर्नल (रिटायर्ड) श्री अखेराज जी लोढ़ा का 16 जून

2010 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। कर्त्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मि-वात्सल्य, विनम्रता, मृदुभाषिता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। सेना के उच्च पद पर रहते हुए आपने शाकाहार का ही उपयोग किया। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. व आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा। आपकी धर्मपत्नी पुष्पा जी लोढ़ा भी जोधपुर के स्थानक में साधना-आराधना में अग्रणी रहती हैं। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

मण्डावर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री

रिषभचन्द जी जैन का 9 जून 2010 को 90 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपकी परमपूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध

श्रद्धाभक्ति थी। सामायिक-स्वाध्याय में आपकी विशेष रुचि थी। आपका अधिकांश समय धर्म-साधना में ही व्यतीत होता था। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

अजमेर- सुश्रावक श्री नेमीचन्द जी कोचेटा (बस्सी वाले) का 70 वर्ष की वय में 24 मई 2010 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, सजग एवं धर्मपरायण थे। आपके दोनों पुत्र भी सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र में अग्रणी हैं।

चेन्नई- धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री

मोहनलाल जी मेहता का 85 वर्ष की वय में 13 मई 2010 को देहावसान हो गया। सरलमना एवं सात्त्विकता की प्रतिमूर्ति सुश्राविका अनेक व्रत-प्रत्याख्यानों का पालन नियमित रूप से करती थीं। आप भोपालगढ़ निवासी स्व. श्री जेठमल जी बोकड़िया की सुपुत्री थीं।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती उगमकंवर जी कुम्भट धर्मपत्नी स्व. श्री

मगराज जी कुम्भट का 87 वर्ष की वय में 4 जून 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-साधना एवं त्याग-प्रत्याख्यान करती थीं। आप संत-सती वर्ग की सेवा में सन्नद्ध रहती थीं। आपका जीवन सरलता एवं सादगी से परिपूर्ण था।

पाली- सुश्री गरिमा धारीवाल सुपुत्री श्री गौतमचन्द जी धारीवाल का 6 जून 2010 को 20 वर्ष की वय में जाडन के पास सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। गरिमा गुरुभक्त सुश्रावक श्री रूपचन्द जी धारीवाल की सुपौत्री थी।

कोटा- सुश्रावक श्री शांतिलाल जी नाहटा (मूल निवासी इन्दौर) का 91 वर्ष की

वय में 30 मई 2010 को देहावसान हो गया। परोपकार के कार्यों में सदा रत रहने वाले आप एक सरलमना श्रावक थे। आप नित्यप्रति धर्म-आराधना करने वाले देव-गुरु-धर्म के प्रति निष्ठावान थे।

मनमाड़- धर्मनिष्ठ, सरलस्वभावी, जीवदयाप्रेमी सुश्रावक श्री कचरदासजी

गुलाबचन्द जी भंडारी का 94 वर्ष की वय में हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। आप नित्य सामायिक व्रत-नियम तथा व्याख्यान श्रवण आदि सभी धार्मिक क्रिया बड़ी श्रद्धा से करते थे। पिछले 50 वर्षों से आपने रात्रि-भोजन व जमीकन्द त्याग सहित अनेक व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर रखे थे। गौशाला तथा जीवदया के प्रति आप उदारता से धनराशि का उपयोग करते थे।

चेन्नई- सुश्रावक श्री मोतीलाल जी कोठारी (बर निवासी) का 82 वर्ष की वय में

1 जून 2010 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपके विगत 50 वर्षों से जमीकन्द त्याग तथा चौविहार के प्रत्याख्यान थे। आपने 15 वर्षों तक महीने में 10 उपवास एवं इसके बाद 15 वर्षों तक लगातार एकान्तर तप किए। विगत कई वर्षों से आपके 4 खन्द के त्याग तथा बड़ी स्नान के त्याग थे। आप स्वाध्यायी भी थे तथा प्रतिदिन 5 से 11 सामायिक करते थे। बर संघ की धार्मिक प्रवृत्तियों एवं संघ-संचालन में अग्रणी श्रावक थे।

जोधपुर - संघ-सेवी, संत-सेवी, सुश्रावक श्री सुरेन्द्र कुमार जी मुल्तानी का 20

जून 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ श्रावक थे। आपके पिता स्व. श्री रतनलाल जी मुल्तानी व माता श्रीमती अकलकंवर जी धर्म में गहरी श्रद्धा रखने वाले श्रावक-श्राविका थे। आपकी आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., गुरु हीरा एवं गुरु मान के प्रति श्रद्धाभक्ति थी। आप दया-पौषध-संवर आदि किया करते थे। अष्टमी, चतुर्दशी तथा सावन-भादवे में आप रात्रि भोजन तथा हरी लिलौती का त्याग करते थे। आपने आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने के साथ ही श्रावक के 12 व्रत भी ग्रहण किए थे। आप सेवाभावी, परोपकारी, करुणामय श्रावक थे। स्वाध्याय, धर्मचर्चा, दान-पुण्य में भी आपकी गहरी रुचि थी। मरणोपरान्त आपकी इच्छानुसार नैत्र-दान किए गए। आप विभिन्न संस्थाओं से भी जुड़े हुए थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

716 श्री ज्ञानचन्द जी लुणावत, नृसिंहपुरा, अजमेर (राजस्थान)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12654 Shri NamiChand ji Surana,Choolai, Chennai(Tamilnadu)
12655 Shri Mahendra ji Jain, Bhayandar(W),Dist. Thane (M.H.)
12656 श्री हेमन्त कुमार जी कोठारी, राजणी, तालुका–जामनेर, जिला–जलगाँव (महाराष्ट्र)
12657 श्री शांत क्रान्ति साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, कानोड, उदयपुर (राजस्थान)
12658 Shri Pradeepji Jain,Azad Road,Vileparle(E),Mumbai (M.H.)
12659 श्री नीलकंठ जी भण्डारी, शान्ति पथ, सिन्धी कॉलोनी, न्यू राजापार्क, जयपुर (राज.)
12660 श्री भूपेश कुमार जी सिंघवी, चौधरी मार्केट,बाजार नं. 2, भोपालगंज,भीलवाड़ा (राज.)
12661 Shri Prashant ji Jain, Andheri (W), Mumbai (M.H.)
12662 Dr.Narendraji Jain,Panchwati Colony,Ratanada, Jodhpur (Raj.)
12663 Shri Vinod ji Tated, Post.-Vyara, Distt. Taoi (Gujrat)
12664 श्रीमती कविता जी मेहता, श्री शाह नीले रविन्द्र नगर, प्रथम क्रोस, शिमोगा (कर्नाटक)
12665 श्री प्रसन्नमल जी फोफलिया,पावटा बी रोड,जालमसिंह जी का हत्था,पावटा,जोधपुर
12666 श्री आदित्यजी लोढ़ा, शास्त्री चौक,मच्छीपूल,मु.पोस्ट–कामठी,जिला–नागपुर (महा.)
12667 श्री पदमचन्द जी कोठारी, मेन रोड़, खापरखेड़ा, जिला–नागपुर (महाराष्ट्र)
12668 श्री रमेशचन्द जी ओस्तवाल (जैन), मेन रोड़, खापरखेड़ा, जिला–नागपुर (महाराष्ट्र)
12669 श्री नथमल जी सिंघवी, जैन मन्दिर वार्ड, हिंगणघाट, जिला–वर्धा (महाराष्ट्र)
12670 श्री महेन्द्र जी कोठारी,शेवाजी चौक, मु.पोस्ट–मांडोली, वरोरा, जिला–चन्द्रपुर (महा.)
12671 Shri Dilip Kumar ji Mehta, Brojoducal Street, Kolkata (W.B.)
12672 श्री शिखरचन्द जी बागरेचा, ओसवाल भवन, मेन रोड़, वाशिम, जिला–विदर्भ (महा.)
12673 श्री पुखराज जी सुराणा, उरूवार झाबर, वाशिम, जिला–विदर्भ (महाराष्ट्र)
12674 श्री उत्तमचन्द जी बोहरा,जीजा माता चौक,पोस्ट–कारंजा लाड़, जिला–वाशिम (महा.)
12675 श्री नरेन्द्रजी भंडारी, ए–4, दासपा हाउस, ओल्ड कोको रोड़, रातानाड़ा,जोधपुर (राज.)
12676 श्री पंकज जी कटारिया,सुभाष मार्ग,धानमंडी,पी.एन.बी. के सामने,रतलाम(मध्यप्रदेश)

जिनवाणी हेतु साभार

11000/- श्री विजय कुमार जी रेड (पाली वाले), बैंगलोर माताश्री श्रीमती ताराबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनलाल जी रेड, पुत्रवधू स्व. श्री हस्तीमल जी रेड एवं श्री विजय कुमार जी की धर्मपत्नी श्रीमती कनक जी रेड के वर्षीतप का पारणा सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

5100/- वीरपिता श्री घमण्डीलाल जी, छगनलाल जी, हितेश कुमार जी, हेमन्त कुमार जी, चेतन कुमार जी, यशवन्त कुमार जी बागरेचा, कोप्पल (कल्याणपुर), अपनी कुलदीपिका यशस्विनी सुपुत्री सुश्री शिल्पा जी बागरेचा की 15 मई, 2010 को बैंगलोर में गुरु चरणों में जैन भागवती दीक्षा होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- वीरपिता श्री अशोक जी कॉंनूगा, हुबली, अपनी कुलदीपिका यशस्विनी सुपुत्री सुश्री प्रीति जी कॉंनूगा की दिनांक 15 मई, 2010 को बैंगलोर में गुरु चरणों में जैन भागवती दीक्षा होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री गौतमचंद जी धारीवाल-पाली, मारवाड़, अपनी सुपुत्री सुश्री गरिमा धारीवाल के सड़क दुर्घटना में दिनाँक 6 जून, 2010 को आकस्मिक निधन होने पर उसकी याद में।

5000/- वीर परिवारों की तरफ से, बालोतरा, भरतपुर, बैंगलोर एवं चांगोटोला में कुल 11 भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

5000/- श्री नरपतचन्द जी, कमलादेवी जी सिंघवी, महावीर नगर-जयपुर, सप्रेम भेंट।

2500/- डोसी परिवार-जोधपुर, श्रीमान् सम्पतराज जी डोसी के दिनाँक 10 जून, 2010 को संथारापूर्वक देवलोकगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री ज्ञानचन्द जी अमरचन्द जी लुणावत (तिलौरा वाले), अजमेर, अपने सुपुत्र श्री अमरचन्द जी लुणावत के नूतन भवन में गृहप्रवेश के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- डॉ. शैलेष जी लोढ़ा, श्री मनोज जी लोढ़ा, श्रीमती पंकज जी गांग, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री अखेराज जी लोढ़ा (सेवानिवृत लें. कर्नल) पुत्र स्व. श्री जतनराज जी लोढ़ा का 16 जून, 2010 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्रीमती विमला जी मुल्तानी, जोधपुर, श्री सुरेन्द्र कुमार जी मुल्तानी पुत्र स्व. श्री रतनलाल जी मुल्तानी का 20 जून, 2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री रमेशचन्द जी जैन (बिलोपा वाले), जयपुर, सुपुत्र श्री संजय जी जैन का शुभ विवाह दिनांक 24 मई 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री सुरेन्द्र कुमार जी लुंकड़, कोटा, सुश्रावक श्री बंशीलाल जी लुंकड़ का दिनांक 07 जून 2010 को देवलोक गमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री मुकनचन्द जी, श्री गौतम जी हिंगड़-पाली, श्रीमती रूपादेवी धर्मपत्नी श्री मूलचन्द जी हींगड़ के संथारापूर्वक देवलोकगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री बस्तीमल सा अमितकुमार सा श्रीश्रीमाल-शिमोगा (कर्नाटका), महासती श्री संगीता जी एवं महासती श्री शिल्पा जी महाराज के दीक्षा होने के प्रथमबार आचार्यप्रवर आदि ठाणा के दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री बस्तीमलसा श्रीश्रीमाल-शिमोगा (कर्नाटका), श्री बस्तीमल सा द्वारा आचार्यप्रवर से सजोड़े शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री सुरेशचन्द जी, संजय कुमार जी मेहता (भोपालगढ़ वाले), उमरगाँव-वलसाड़, पूज्यनीय माताश्री श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री मोहनलाल जी मेहता का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्री नवरतनमल जी खंजानची-सरदारपुरा-जोधपुर, जिनवाणी में सहयोग हेतु भेंट।

511/- श्री मनीष सा, संदीप सा लोढ़ा-जोधपुर, अपने पिताश्री श्री माधुमल सा एवं माताश्री उषा जी लोढ़ा की शादी के 41 वर्ष सुखमय पूर्ण होने पर भेंट।

501/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी-जोधपुर, कमला जी, लोकेन्द्रनाथ जी, ऋतु जी, लोरी मोदी, जोधपुर, श्री रचित जी भंडारी के सैकण्डरी परीक्षा में सभी विषयों में ए-1 ग्रेड से उत्तीर्ण होने के शुभ प्रसंग पर भेंट।

501/- श्री धनसुरेश जी, आशीष कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. अमित जी का शुभविवाह सौ.कां. शिल्पा सुपुत्री श्री महावीर प्रसाद जी जैन (सांगानेर वाले), जयपुर के संग दिनांक 31 मई 2010 को मंगल परिणयोत्सव पर सप्रेम भेंट।

501/- श्री गम्भीरमल जी, सागरमल जी जैन (खातौली वाले), सवाईमाधोपुर, चिं. नरेश जी जैन का शुभ विवाह दिनांक 29 मई 2010 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री बाबूलाल जी जैन (डेकवा वाले-बजरिया),सवाईमाधोपुर, चि. रिषभ का शुभविवाह सुश्री पिंकी-अलीगढ़ के संग दिनाँक 27 मई, 2010 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री महेन्द्र कुमार जी, राजकुमार जी, त्रिलोकचन्द जी, पवनकुमार जी, शीलकुमार जी, महुआ मण्डावर (दौसा), की ओर से अपनी मातुश्री श्रीमती शान्ति देवी जी का स्वर्गवास 9 जून, 2010 को होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

500/- श्री सुरेश जी गांग सुपुत्र श्री सोहनमल जी गांग-जोधपुर, श्रद्धा गांग के बायोटेक फाइनल में गुजरात यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर भेंट।

500/- श्री चन्द्रपाल जी मोहनोत, जयपुर, सौ.कां. विधिका संग चि. मनीष जी सुपुत्र डॉ. शैलेन्द्र जी हिरण (उदयपुर) का शुभ विवाह दिनांक 22 मई 2010 को सुसम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री ओमप्रकाश जी जैन (तुलारा-भगवतगढ़ वाले), सवाईमाधोपुर, चि. मनोज जी जैन का शुभ विवाह दिनांक 25 मई 2010 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री दिनेशचन्द जी टीकमचन्द जी कोचेटा (बस्सी वाले), अजमेर, सुश्रावक श्री नेमीचन्द जी कोचेटा का दिनांक 24 मई 2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती प्रेम एवं श्री पंकजकुमारजी जैन, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्रेणिक कुमार जैन के बी.कॉम, एल.एल.बी. तथा सी.एस. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण करने उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती क्षमा जी जैन, मुम्बई, सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल में साहित्य प्रकाशन हेतु प्राप्ति-स्वीकार

11000/- महासती श्री संगीताश्री जी म.सा. के सांसारिक वीर पिता श्री बस्तीमल जी, अमित कुमार जी श्री श्रीमाल नेनगोता (दुन्दाड़ा वाले), शिमोगा, अपनी कुल दीपिका सुश्री शिल्पा जी श्री श्रीमाल की दिनांक 15 मई, 2010 को बैंगलोर में गुरु चरणों में जैन भागवती दीक्षा होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

11000/- महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. के सांसारिक वीर पिता श्री सुभाष जी, अमित जी डागा, जयपुर, अपनी धर्मसहायिका श्रीमती मंजू जी डागा की दिनांक 15 मई, 2010 को बेंगलोर में गुरु चरणों में जैन भागवती दीक्षा होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार

5000/- श्री गौतमकुमार, सुबाहुकुमार, आशीषकुमार चोरडिया, श्रीमती उर्मिला चोरडिया, गीजगढ़ वाले-जयपुर, पूज्य श्रीमान् पूनमचन्द जी चोरडिया की पावन स्मृति में भेंट।

5000/- श्री दक्ष चोरडिया सुपुत्र श्री आलोक जी चोरडिया, सिद्धार्थ शिवाजी अपार्टमेन्ट, प्लाट नं. 3-ए-72,चौलई हाई रोड, चौलाई-चेन्नई, संरक्षक सदस्य बनाने हेतु भेंट।

650/- श्री जेठमल सा मुणोत, जोधपुर, सहायतार्थ।

501/- श्री धनसुरेश जी, आशीष कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. अमित जी का शुभविवाह सौ.कां. शिल्पा सुपुत्री श्री महावीर प्रसाद जी जैन (सांगानेर वाले), जयपुर के संग दिनांक 31 मई 2010 को मंगल परिणयोत्सव पर सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

1,08,000/- गुप्त दान।

96,000/- श्री राजेश कुमार जी, विमलचन्द जी बोहरा (मैनादेवी दुलीचन्द जी बोहरा ट्रस्ट), श्री धर्मेशमुनि जी म.सा. एवं महासती श्री सुभद्रा जी म.सा. के एक वर्ष की दीक्षा के पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भेंट।

24,000/- श्री रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोक कुमार जी धोका-मैसूर, की ओर से भेंट।

24,000/- श्री विमलचन्द जी निर्मल जी मुथा-अंबर-तमिलनाडू, की ओर से भेंट।

12,000/- श्रीमती अमिता पंदमचन्द जी कवाड़, पुनुमलाई-चेन्नई, की ओर से भेंट।

12,000/- श्री गौतमचन्द जी, धर्मवीर जी सालेचा-ईरोड, की ओर से भेंट।

12,000/- श्री कान्तिलालजी, श्रीमती शान्तिलालजी, राजेन्द्रजी लुंकड-ईरोड, की ओर से भेंट।

12,000/- श्री भेरूलाल जी, अशोक कुमार जी-ईरोड, की ओर से भेंट।

12,000/- श्री भंवरलाल जी मुनोत-अडयार-चेन्नई, की ओर से भेंट।

12,000/- श्रीमती शान्तिलाल जी, प्रेमचन्द जी, सुनीलकुमार जी भंसाली-नई दिल्ली, की ओर से भेंट।

12,000/- श्रीमती कमला जी मेहता (जोधपुर)-विजयवाडा, की ओर से भेंट।

12,000/- श्री सुखेन्द्र जी लोढ़ा-मुम्बई, स्व. श्री करोड़ीमल जी एवं श्रीमती पुष्पा जी लोढ़ा की स्मृति में भेंट।

12,000/- श्री नरेश कुमार जी, डूँगरचन्द जी बुरट (दुबई)-जलगाँव, आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी के अवसर पर भेंट।

12,000/- श्रीमती विमला मनसुखलाल जी कोठारी-मुम्बई, स्व. श्री मनसुखलाल जी कोठारी की स्मृति में भेंट।

12,000/- श्री ऋषभ जी जैन-कोटा, आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी के अवसर पर भेंट।

12,000/- श्री मिलापचन्द जी डागा-बूंदी (राजस्थान), श्री शरद सुपुत्र श्री हेमन्त जी डागा के एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई पूरी करने के उपलक्ष्य में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

आषाढ शुक्ल 14	शनिवार	24.07.2010	चतुर्दशी
आषाढ शुक्ल 15	रविवार	27.07.2010	पक्खी, चातुर्मास प्रारम्भ
श्रावण कृष्ण 8	मंगलवार	03.08.2010	अष्टमी
श्रावण कृष्ण 14	सोमवार	09.08.2010	चतुर्दशी, पक्खी
श्रावण कृष्ण 14	मंगलवार	10.08.2010	आचार्य शोभाचन्द्र जी म.सा. की 84 वीं पुण्यतिथि
श्रावण कृष्ण 8	मंगलवार	17.08.2010	अष्टमी

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 05 सितम्बर से 12 सितम्बर 2010 तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 15 जुलाई 2010 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....................जिला...............प्रान्त..............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.......................................

....

4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.......................................

....

5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन....................................

....

6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?......................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), मो.09380997333

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

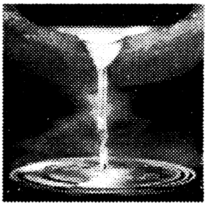
Electric Arc Furnace

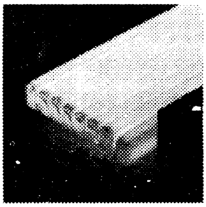
Billets

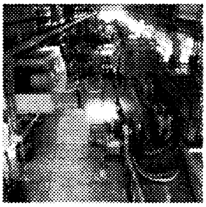
Rolling Mil

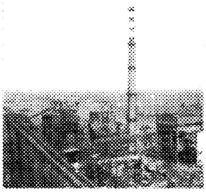
Captive Power Plant

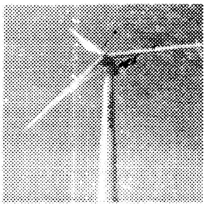
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED
INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL
29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/
Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

NO. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर

आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन समर्पित करने के लिए एवं आचार्य श्री के फरमान सामायिक – स्वाध्याय का शंखनाद करने के लिए अखिल भारतीय श्री रत्न युवक परिषद् के तत्त्वाधान में 21 मई, 2010 से 6 जून, 2010 तक ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन शाखा स्तर पर किया जा रहा हैं। अधिक जानकारी एवं केन्द्रीय सहयोग के लिए सम्पर्क करें – जितेन्द्र सा डागा (9829011589) एवं परेश सा कोठारी (9314512649)

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाईये,
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/– के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
7. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगांव (09422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें –

B. Budhmal Bohra

No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.) • Telefax : 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 7 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जुलाई, 2010 ★ आषाढ़, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।